CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

2.2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

कुअँर सिंह

(भोजपुरी का प्रथम महाकाव्य)

द्वितीय संस्करण

चन्द्रशेखर मिश्र

भूमिका लेखक
डा० संपूर्णानम्द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कवि
चन्द्रशेखर मिश्र

प्रकाशक :
चन्द्रशेखर मिश्र

चित्रकार :
बैजनाथ वर्मा

मुद्रक :
अपर्णा प्रेस
शीतल दास अखाड़ा
बी० एच० यू० रोड, अस्सी-वाराणसी

मूल्य :
साठ रुपये

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिका

साधारणतः भोजपुरी हिन्दी की उन बोलियों में नहीं है, जिनमें उत्कृष्ट साहित्य की रचना हुई हो। कम से कम मेरी अब तक की जानकारी में ऐसी रचनाएँ देखने में प्रायः नहीं आयी हैं। परन्तु सन् १८५७ के वीराग्रणी स्वनामधन्य बाबू कुअँर सिंह के संबंध में प्रस्तुत श्री चन्द्रशेखर मिश्र की रचना निश्चय ही मेरे इस कथन का अपवाद है। मैंने इसे पढ़ा है। कुछ अंशों को एक से अधिक बार पढ़ा है और फिर स्वयं कवि के मुँह से ग्रन्थ के कुछ अंशों को सुनने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ था जिसमें ये पंक्तियां आती हैं :

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छूरी-कटारी बिकै सगरौं,
चुरिहारिनि गाउँ में आवत नाहीं ।

× × ×

झूमि रहा इतिहास जहाँ,
तहँ कैसे भूगोल रहे खतरे में ।

मैं कवि नहीं, किसी भी दृष्टि से काव्य का पारखी नहीं कहा जा सकता । इसलिए जो कुछ लिखता हूं वह सामान्य पाठक की दृष्टि से । मुझे तो 'कुअँर सिंह' काव्य में कई पंक्तियों में रस का अपूर्व उद्रेक देख पड़ता है और यही उत्कृष्ट काव्य का लक्षण हैं । जो काव्य ग्रन्थ मुझे सर्वांग सुन्दर प्रतीत होता हो, उसके किसी पृथक अंश की प्रशंसा क्या करूँ । श्री चन्द्रशेखर मिश्र के 'कुअँर सिंह' काव्य ने भोजपुरी और भोजपुरी के द्वारा हिन्दी वाङ्मय को एक बहुत ही सुन्दर रत्न प्रदान किया है ।

सम्पूर्णानन्द
राज्यपाल, राजस्थान
६ फरवरी १९६६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काव्य द्वार

(प्रथम संस्करण १९६६ में प्रकाशित आत्म कथ्य का संक्षिप्त अंश)

'कुअँर सिंह' काव्य आठ-साढ़े आठ वर्षों के परिश्रम के पश्चात् अब पाठकों के हाथ में पुस्तकाकार देने लायक हो पाया है। इसके माध्यम से मैंने हजारों कवि सम्मेलनों में भाग लिया होगा, हजारों मीलों की यात्रायें की होगी और लाखों श्रोताओं का आशीर्वाद प्राप्त किया होगा काव्य के एक प्रमुख अंश का प्रथम पाठ मैंने उस कवि सम्मेलन में किया था जो १९५८ की विजयादशमी को आकाशवाणी प्रयाग की ओर से आयोजित किया गया था। सम्मेलन में मिली सफलता से मैं स्वयं गदगद हुआ और रचना को आगे बढ़ाने का साहस होने लगा। मित्रों को तब स्वयं सुनाने की इच्छा होती जब रचना आगे बढ़ती। पहले तो पास-पड़ोस के जनपदों में जाता रहा, किन्तु जब धीरे-धीरे काव्य की ख्याति बढ़ने लगी तो दूर-दूर की यात्रा भी होने लगी। एक बार तो श्री रघुनाथ सिंह के माध्यम से मुझे प्रधान मंत्री स्व० जवाहर लाल नेहरू के आवास (तीनमूर्ति भवन) पर कविता सुनानें के लिए आमंत्रित किया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गया। मैं मंच पर काव्य पाठ कर रहा था और मेरे सामने मसनद पर बैठे नेहरूजी तथा कुछ अन्य विशिष्ट व्यक्ति विभोर मुद्रा में काव्य-रस पान कर रहे थे। प्रधान मंत्री ने प्रसन्न होकर जब जोर जोर से ताली बजायी तो मुझे ऐसा लगा कि यह सब स्वप्न तो नहीं है। जब मैंने काव्य पाठ समाप्त किया तो उस महान जन-नायक ने मुझे गले लगा लिया। उसी समय श्री रघुनाथ सिंह ने नेहरूजी से कहा "आप भोजपुरी समझ लेते हैं ?"

कुछ दिनों बाद सारनाथ में आदरणीय डाक्टर संपूर्णानन्द जी के उद्यान में एक कवि गोष्ठी हुई। बाद में जब वे जयपुर चले गये तो सप्ताह के भीतर ही उनका एक पत्र आदरणीय 'मास्टर साहब' (श्री बेढब बनारसी) के पास आया, जिसमें उन्होंने लिखा था "कुअँर सिंह" वाली कविता जिस कवि ने पढ़ी थी, उनसे वह रचना लिखवाकर मेरे पास भेजने का कष्ट करें।" श्री सुधाकर पांडेय द्वारा वह अंश भेज दिया गया। जयपुर से राज्यपाल ने जो आशीर्वाद दिया था उसे पाकर मैं गदगद हो गया। उन्होंने सुधाकर जी को लिखा था—

प्रिय सुधाकर जी,

"श्री चन्द्रशेखर मिश्र का "रणपयान" सर्ग मिल गया। जब मैंने उसे पहली बार सुना था तब भी बहुत प्रभावित हुआ था। इस बार मैंने उसे कई लोगों को सुनाया, सब ने ही बहुत पसन्द किया। पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी कहते थे कि ग्रन्थ के और भी अंशों को वह सुन चुके हैं। इसको छपवाना चाहिये। भोजपुरी जगत में तो इसका समादर होगा ही। मैं तो समझता हूं कि दूसरे लोग भी इसकी कदर करेंगें।"

पत्र में उन्होंने जो आशीर्वाद दिया था, वह तत्काल फलने लगा। पटना साहित्य सम्मेलन भवन में 'भोजपुरी' मासिक पत्रिका के सम्पादक श्री रघुवंशनारायण सिंह के प्रयास से मुख्य रूप से 'कुअँर सिंह काव्य' पाठ के लिए गोष्ठी की गई। जिसकी अध्यक्षता श्री सुधांशु जी ने की थी। प्रायः सभी उपस्थित विद्वानों मे काव्य की प्रशंसा की और मेरा बल बढ़ता गया। उस समय मुझे और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अधिक प्रोत्साहन मिलता जब मैं यह देखता कि भोजपुरी क्षेत्र में इसका जिस प्रकार लोग आनन्द लेते हैं, अन्य क्षेत्रों के लोग उनसे कम आनन्द नहीं लेते थे।

वैसे काव्य का श्रीगणेश तो १९५६ में ही हो गया था। इसकी भी एक कहानी है। किसी कवि सम्मेलन में बक्सर जा रहा था। साथ में कवियों की एक बड़ी मंडली थी, जिसमें आदरणीय श्री श्यामनारायण पांडेय, श्री सोहनलाल द्विवेदी, श्री रूपनारायण त्रिपाठी, श्री ठाकुर प्रसाद सिंह, श्री श्रीपाल सिंह क्षेम, श्री राह-गीर, भाई नर्मदेश्वर उपाध्याय आदि कवि थे। विभिन्न हास-परिहासों एवं चर्चाओं के बीच भोजपुरी की चर्चा आयी।

किसी ने कहा कि भोजपुरी में मिठास तो है किन्तु बस लोकगीतों में ही। नये कवियों में कुछ अच्छे गीतकार आये हैं, किसी ने यह भी कहा कि यह भाषा इतनी अधिक लचर है कि इसमें बीर रस की रचना नहीं हो सकती। यह बात मुझे जंची नहीं किन्तु मेरे बोलने का कोई तुक नहीं था। कवि सम्मेलन से लौट आने के पश्चात् मैं योजना बनाने लगा कि कोई बीर काव्य लिखने का प्रयास करूँ।

इन्हीं दिनों 'भोजपुरी' मासिक पत्रिका में बीर केशरी बाबू कुअँर सिंह के क्रान्तिकारी जीवन पर श्री विवेकी राय का एक लेख पढ़ने को मिला। मैं कुअँर सिंह के व्यक्तित्व की ओर आकृष्ट हो गया। ऐसा लगने लगा कि यह व्यक्तित्व किसी काव्य का नायक होने के लिए पूर्ण समर्थ है। मेरे कवित्व में भले ही अभाव हो, पर उनके नायकत्व में मुझे कोई कमी नहीं दीख पड़ी। संयोग वश पहले पूरी सामग्री जुटाने को कौन कहे, काव्य ही आरम्भ हो गया। कविताएँ बनने लगीं। कागज-कलम लेकर कविता लिखने बैठने की मेरी आदत नहीं रही है। इस टेव का असर इस काव्य पर पड़ना स्वाभाविक था। परिणाम स्वरूप काव्य के अधिकांश छन्द पहले मन ही में बने हैं। भीतर ही भीतर तोड़े मरोड़े गये हैं। और तब कागज पर उतरे हैं।

काव्य के चतुर्थ सर्ग 'रण-पयान' को सर्वाधिक ख्याति मिली जिसे मुझे हर कवि सम्मेलन अथवा गोष्ठी में सुनाना पड़ता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबू कऽ फिरल दोहाई, गाँवन-गांवन में डुग्गो बाजल।
लोहा चबाइ के नेवता बा, सब साजइ आपन दल-बादल ।।

बा कोखि जुझावइ के नेवता, सेन्हुर पोंछवावइ के नेवता।
चूरी फोरवावइ के नेवता, बा राँड़ कहावइ के नेवता ।।

जे हउ हमार ते साथ देइ, जे हउ हमार ते माथ देइ।
जे हउ हमार अब दुख बूझइ, जे हउ हमार ते अब जूझइ ।।

बा इहाँ न मोका समझइ के, बा इहां न मौका बूझइ के।
की तउ फेरऽ नेवता हमार, की तउ तयार हो जूझइ के ।।

'नेवता कबूल बा हमहन के' सब गाँवन कऽ मुखिया बोलल।
नेवता कबूल बा हमहन के' सुखिया बोलल, दुखिया बोलल ।।

महलन से निकलि जवान चले, मड़हन से निकलि जवान चले।
खड़हर से निकलि जवान चले, घर-घर से निकलि जवान चले ।।

माई कऽ बन्दि कटावइ के, बलहीन चले, बलवान चले।
भारत कऽ बड़ा पार करइ, कंगाल चले कंकाल चले ।।

सुनि पड़ल मुनादी कऽ पुकार बुढ़वन के कान अवाज गइल।
फर फर फर देहियाँ फरफरानि, फेरि गइल जवानी याद भइल ।।

मोछन पर ताउ पड़ल अउ हथियारन की ओर नजर घूमल।
बनराज जवानी के पंजन कऽ पउरुख सुमिरि-सुमिरि झूमल ।।

आँगन में लड़िकन के बटोरि हर घर में माई बोलि उठलि।
बस एही समइया के खातिर बेटवा तोहके पाललि-पोसलि ।।

हमरे दूधे कऽ लाज रखऽ घर-घर में महँतारी बोललि।
हमरे सेन्हुरे क लाज रखऽ घर-घर में मेहरारू बोललि ।।

हमरी राखी कऽ लाज रखऽ घर-घर में बहिनो बोलि उठलि।
पाकल मोछा क लाज रखऽ ई बूढ़ बाप क बोल रहलि ।।

हुँकार उठल जब सेना कऽ गूँजलि आवाज नभ चोर गइल।
केउ बीर तपल बा भरत खंड में सरगे में अस सोर भइल ।।

फर फर फर देहियां फर फरानि धरती क बात इयाद भइल।
फेरि धरमराज के आगे हमरे पुरखन कऽ फरियाद गइल ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरती पर हमके भेजि देहु हम सरगे में नाहीं रहबै।
घेरे विपत्ति भारत के बा हमहूँ चलिके लोहा गहबै।।

हम बइठि इहाँ लूटी बहार, हमरी धरती पर दाग लगइ।
अइसन सुख हम नाहीं भोगब तोहरे बैकुण्ठ आगि लगइ।।

हमरी माई की छाती पर जब दुश्मन पाँउ धरत होई।
नाहँक जनमौली हम बेटवा, कहि धाड़ मारि रोवत होई।।

हम कोटि-कोटि रे साँड़ अइस बेटवा जनमाके का कइलो।
नाहँक एतना पीड़ा सहली, काहे न निपूती हम भइली।।

अपनी माई कऽ रोइब सुनि ना फटल करेजा टूक-टूक।
जौनी छाती में देस-प्रेम उकसउलेसि नाहीं यार हूक।।

बेटवा लेइके पनहीं घूमइ, माई सेवइ दासी बनिके।
जेकर बैरी सुख से सोवइँ धिक्कार यार ओहि जीवन के।।

ओहँ छुटी पिचक्का लोहुन कऽ लोथिन पर लोथिया भहराई।
अनजाने में कतहूँ ओट से अगिन बान गोली आई।।

जेके प्यारी घर कऽ तिरिया ऊ लौटि घरे के चला जाइ।
जेके प्यारी भारत माता रण में चढ़ि के लोहा चबाइ।।

बाबू क बोली गोली अस लगि गइल जवानन की छाती।
तुहईं माई क दूध पियऽ का हमहन नोर पिये बाटी।।

गंगा भागइं सागर ताकइं सागर भागइ तउ कहाँ जाइ।
भोजपुरिया भागइं ए बाबू! केहि कायर के पीछे लोकाइं।।

कहँ भोजपुरी भागत पउलऽ सरदार हमैं बतलाइ देउ।
संका मन मे राखउ नाहीं, रन में चढ़िके अजमाइ लेउ।।

मारे लोहन के गोरन के लोथिन पर लोथि गिराइ देब।
हाड़न में नून समायल बा बदले में खून बहाइ देब।

हम निमक हरामी ना करबै, करतब हमार गोहरावत बा।
इतिहास कार बीरन कऽ गाथा पोथी में दोहरावत बा।।

अइसन मोका फेरि ना लागे मरि जायेके, मिटि जायेके।
टुटही खटिया से प्रान तजे ओकर जस-गाथा गाये के।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रन में चढ़िके तरुआरी से ठाकुर तू चिन्ह खचाइ दिहऽ।
ओहि चिन्हीं से पीछे आई तउ माथ हमार उतारि लिहऽ॥

घउआ देखिहऽ जउ छाती में तउ छाती से चपकाइ लिहऽ।
पीठी में घाउ लख्यऽ हमरे त लातन मारि गिराइ दिहऽ॥

जेकर बैरी बचि जाइ आजु ओकरी तरुआरी के धिकार।
जं बिनु मारे लौटइ घरके ओकरी तैयारी के धिकार॥

जेकर मोछा नीचे झुकिगा ओकरी सरदारी के धिकार।
जेकरो पीठी में घाउ लगइ, ओकरी महँतारी के धिकार॥

अँगरेजन क छोटका टापू गेना अस आजु उठाइ लेब।
हम मारब ठोकर लाते से सागर में कतउँ गिराइ देब॥

लागे न पता ओहि देसवा कऽ नकसा से नाउँ निकालि देब।
एकउ न पूत बचिहैं दादा! हम खोजि बोन के बालि देब॥

भोजपुरियन कऽ हुँकार सुनत हर हर हर सागर हहरि गयल।
कंपिनी कँपलि इंगलैंड महरानी कऽ आसन थहरि गइल॥

ना पुरुवइया, ना पछुअइयाँ ना बहलि बयरिया चौमुखिया।
एह भोजपुरी तप्पा में खाली लप-लप लपकलि तरुअरिया॥

इस अंश की रचना पहले सर्ग के भी पूर्व हो गयी थी। यहाँ एक बात और भी बता देने के लायक है कि काव्य की रचना क्रम से नहीं हुई है। रचना कभी किसी स्थल की होती तो कभी किसी स्थल की। बाद में उन्हें प्रबंध की शृंखला में बाँधने का प्रयास किया जाता। इसके बाद दो सवैये बने, जिन्हें इन्हीं अंश के बराबर लोगों ने पसन्द किया। इसमें प्रथम छन्द की काफी आलोचना भी हुई—

२

एक विचार गोष्ठी में पंडित लक्ष्मीनारायण मिश्र ने यहाँ तक कह डाला कि यदि इसी प्रकार की रचनाएँ होती रहीं तो हमारी ग्राम्य-संस्कृति नष्ट हो जायगी। यह भी संयोग की ही बात है कि इस काव्य की भूमिका में डाक्टर संपूर्णानन्द ने उसी छन्द का उल्लेख किया जिसकी इतनी आलोचना हुई थी। खैर इस तरह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छन्द जोड़ते-तोड़ते क्रम और तुक बैठाते धीरे-धीरे कविताओं ने प्रबन्ध का रूप धारण किया।

जब कभी मैं अपने गाँव जाता तो मेरे परम पूज्य अग्रज भइया राम लखन मिश्र गाँव भर को जुटाते, भाँग-बूटी छनती और काव्य का आनन्द लेते। उनकी बहुत इच्छा थी कि पुस्तक का समापन एवं प्रकाशन शीघ्र हो जाय, परन्तु भगवान को यह मंजूर नहीं था। ११ सितम्बर १९६९ को सायं साढ़े चार बजे अहमद नगर में उनका स्वर्गवास एक जीप दुर्घटना में हो गया।

सौभाग्य से 'कुअँर सिंह' काव्य को चाहने वालों की सूची बहुत लम्बी है। डाक्टर संपूर्णानन्द, पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी, श्रीकृष्णदेव प्रसाद गौड़, श्री कान्तानाथ पांडेय राजहंस, श्री काशीनाथ उपाध्याय भ्रमर, श्री माधव प्रसाद मिश्र, श्री श्यामनाराण पांडेय, श्री रूपनारायण त्रिपाठी, श्री क्षेम, श्री नर्मदेश्वर उपाध्याय, श्री सुधाकर पांडेय, श्री हंस कुमार तिवारी, श्री केशव चन्द्र वर्मा, श्री युक्तिभद्र दीक्षित, श्री विकल साकेती, श्री नजीर बनारसी, खामोश गाजीपुरी, श्री हृदयेश, श्री रामविनायक सिंह, श्री चन्द्रदेव सिंह, श्री राहगीर, श्री ठाकुर प्रसाद सिंह, डाक्टर शंभुनाथ सिंह, डाक्टर त्रिभुवन सिंह, श्री लालधर त्रिपाठी प्रवासी, श्री विश्वनाथ लाल शैदा, डा० किशोरी लाल गुप्त, सूँड़ फैजाबादी, रमानाथ अवस्थी, द्विजेन्द्र अवस्थी, मोहनलाल गुप्त, डा० कृष्णदेव उपाध्याय, महराज कुमार बाबू दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह, बाबू रघुवंश नारायण सिंह, भाई श्याम तिवारी, बिम्ब, पं० अमरेशचन्द्र पांडेय, कृष्ण दास, जगदीश ओझा सुन्दर, विवेकी राय, हीरालाल चौबे, पंडित तिलक राम पांडेय, प्रेम शंकर मिश्र, रामप्रवेश शास्त्री, क्षीर सागर, पं० घरीक्षण मिश्र, श्रीनाथ सिंह, भाई भारत भूषण आदि गुरुजनों एवं मित्रों ने मुझे आशीष एवं शुभकामनाएँ देकर बड़ी कृपा की है। मैं अपने उन लाखों श्रोताओं का भी आभारी हूं जिन्होंने आकाशवाणी एवं कवि सम्मेलनों में काव्य पाठ सुनकर मुझे प्रोत्साहित किया है और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्र लिखे हैं। साथी जगदीशचन्द्र अरोड़ा तथा श्री बैजनाथ वर्मा के प्रति क्या आभार व्यक्त करूँ ? एक ने इस काव्य को छापने का आर्थिक भार उठाया और दूसरे ने इसे चित्र के माध्यम से सँवारने-सिंगारने का कार्य किया।

अनुज जगदीशचन्द्र मिश्र, हरिराम द्विवेदी, माहेश्वर तिवारी शलभ, श्रीकृष्ण तिवारी, रत्नाकर पांडेय, पंकज, देवनारायण सिंह 'राकेश' राजवली दुबे, 'तरल' पाण्डेय आशुतोष, दिनेश भ्रमर तथा परमानन्द के प्रति मैं कृतज्ञ हूं।

× × ×

काव्य की भाषा

मेरा जन्म स्थान (मिश्रधाप, तिलठी, मीरजापुर) जहाँ है, मुख्य रूप से अवधी और भोजपुरी दोनों बहनें वहां एक दूसरे को भेंटती हैं। इस भेंट-अँकवार में दोनों इस प्रकार घुल-मिल गयी हैं कि उनका दोहरा अस्तित्व एक हो गया है। मेरे गाँव के पश्चिमी गाँवों पर ठेठ अवधी एवं पूर्वी गाँवों पर 'काशिका' का प्रभाव है। मेरा जन्म जिस संगम स्थली पर हुआ, वहीं की बोली 'पश्चिमी भोजपुरी' मेरी मातृ भाषा है और उसी में रचना हुई है। व्याकरण लोक-प्रचलित है तथा कहीं-कहीं उसे शुद्ध भी किया गया है। विभिन्न रूपों एवं प्रयोगों के कारण अन्य अंचलों के कुछ शब्दों एवं भाषा के प्रयोग भी मिल सकते हैं।

स्वभावतः आने वाले अन्य आंचलिक बोलियों के व्यापक शब्दों एवं लहजों को भी मैंने अपनाया है। इसने एक बहुत बड़ा लाभ यह हुआ है कि इस काव्य की भाषा काफी दूर तक ग्राह्य हुई है। मैंने देखा है कि नैनीताल, मंसूरी, उत्तर काशी, रूड़की दिल्ली आदि नगरों में ही नहीं अपितु बंगाल, मध्य प्रदेश एवं आसाम आदि प्रान्तों के लोगों को भी आंशिक रूप से काव्य की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाषा ग्राह्य रही है। फिर भी इस काव्य में आंचलिक शब्दों का अर्थ हर पृष्ठ के नीचे खड़ी बोली में दिया गया है। इससे अन्य क्षेत्रों के पाठकों को काव्य के भावों तक पहुंचने में आसानी होगी।

भोजपुरी का कुछ ऐसा दुर्भाग्य रहा है कि आधुनिक युग के पूर्व इसमें जो कुछ साहित्य के नाम पर आया, वह ऐसा नहीं निकला जिसके माध्यम से भोजपुरी भी वही स्थान पाती जो स्थान ब्रज, अवधी अथवा राजस्थानी को प्राप्त है। ऐसा इसलिए हुआ कि ब्रज को सूर जैसा गायक और कृष्ण जैसा नायक, अवधी को तुलसी जैसा गायक, और राम जैसा नायक मिला। उधर राजस्थानी को मीरा जैसी प्रतिभा प्राप्त हुई। भोजपुरी की पड़ोसिन मैथिली को विद्यापति कोकिल जैसा कवि प्राप्त हुआ। ये उपलब्धियाँ अपने आप में विशेष महत्व रखती हैं। एक तो स्वयं कवियों की प्रतिभा और दूसरे उनके नायकों की विशिष्ठता। दोनों ने मिलकर सोने में सुगन्ध का कार्य किया, किन्तु भोजपुरी को इस प्रकार का कोई सौभाग्य नहीं मिला। उलटे हुआ यह कि एक ओर पूज्य गोस्वामी तुलसीदास जी और उधर विद्यापति के काव्याकर्षणों के कारण यह उनकी ओर खींच सी गई। इस तनाव के परिणाम स्वरूप उसका अपनापन इधर-उधर समाहित हो गया। इन घटनाओं का एक फल यह भी हुआ कि भोजपुरी में आज जितनी रचनाएँ हो रही हैं, उनमें एकरूपता नहीं है। इस क्षेत्र को कबीर जैसा कवि तो प्राप्त हुआ किन्तु कबीर दास ने अपनी भाषा को क्षेत्रीय न बनाकर व्यापक बनाया, जिससे उनकी रचना में भोजपुरी के साथ ही विभिन्न बोलियों के शब्द भी पाये जाते हैं।

'कुअँर सिंह काव्य' को प्रबन्धात्मक करने में मैंने ऐतिहासिक तथ्यों के साथ ही कल्पना का भी सहारा लिया है। सामग्री जुटाने में मुझे नायक के वंशज श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह एवं भोजपुरी मासिक पत्रिका के सम्पादक श्री रघुवंश नारायण सिंह ने बहुत बड़ी सहायता की है। श्री विवेकी राय के एक निबन्ध से भी सहायता मिली है। काफी प्रमाणों के बाद प्रबंध का सामंजस्य बैठाया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गया फिर भी हो सकता है कहीं कोई त्रुटि रह गयी हो इसके लिए, मैं पाठकों से क्षमा चाहूँगा।

यह एक वीर रस प्रधान काव्य है। इस रस में मेरी बचपन से ही रुचि रही है। जब मै नवीं कक्षा में भदोही में पढ़ रहा था। मेरे विद्यालय (आदित्यनारायण हायर सेकेन्ड्री स्कूल) में एक कवि सम्मेलन हुआ था। पं० श्यामनारायण पांडेय बड़े ही ओज के साथ हल्दी घाटी के एक अंश का पाठ किया था। उसी समय मेरे मन में यह भाव उठा था कि कैसे इतनी उत्कृष्ट कविताएँ लिखी जाती हैं। औरों के लिए भले ही यह एक कवि सम्मेलन मात्र था पर मेरे लिए तो एक घटना थी। और भी नयी बाते हैं जिन्होंने मेरे हृदय क्षेत्र में बाल्य काल में ही काव्य का बीज बोने का काम किया है।

मेरे गाँव में निरंजन चौधरी वर्षाकाल में अपने दरवाजे पर प्रतिदिन आल्हा गाया करते थे। पूरा गाँव ही नहीं अगल-बगल के ग्रामीण बैठकर उनका आल्हा सुनते थे। निरंजन चौधरी एक दो दिन में एक-एक लड़ाई गाने के बाद ५२ दिनों में आल्ह खंड की बावनों लड़ाइयाँ गाते थे। गाते समय बीच-बीच में जब चौपाई (गायकी का एक खंड) समाप्त हो जाती तो वे पसीने से तर नजर आते थे। चौपाई की समाप्ति पर सामने बैठा आदमी ढोल थामकर अलग रख देता और गमछे से उनका पसीना पोछने लगता। ऐसा मालूम होता था जैसे अभी-अभी कोई पहल-वान अखाड़े से लड़कर निकला है।

आल्ह खंड चूँकि वीर रस प्रधान काव्य है और बचपन में उसे सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ इसलिए भी इस रस की ओर झुकाव होना स्वाभाविक था। काव्य में अन्य रसों में भी यत्र तत्र प्रसंग वश रचनाएँ हुई हैं किन्तु उनकी ओर विशेष रुचि न होने के कारण हो सकता है वे जैसी चाहिये वैसी न उतरी हो। इसके लिए पाठक हमें क्षमा करेंगे।

बचपन और फिर छात्रावस्था में वीर काव्य से प्रभावित होने के साथ ही मेरे जीवन में भी कुछ ऐसी घटनाएं घटी हैं जिनका प्रभाव इस काव्य पर पड़ना आवश्यक था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैं सातवीं कक्षा का छात्र था मेरी प्रारम्भिक शिक्षा मेरे ननिहाल में हुई है। सन् ४२ के 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आन्दोलन में आजादी के लिए सारे देश ने एक साथ अंगड़ाई ली थी। नेतागण घड़ाधड़ गिरफ्तार हो रहे थे। सरकारी कार्यालय तथा रेलवे स्टेशन जलाये जा रहे थे। आयु कम होने के कारण हम लोग कुछ भी नहीं कर पा रहे थे किन्तु कसमसाहट तो होती ही थी।

११ अगस्त ४२ की रात की बात है। मैं सोया था। मामा जी का घर स्टेशन (परसीपुर) से करीब ५० गज की दूरी पर ही है। आधी रात के समय कुछ धड़ाके की आवाज सुनाई पड़ी। देखा कि स्टेशन से आग की लपटें निकल रही हैं। मै दौड़कर जलते हुए स्टेशन के पास जा पहुँचा तो देखता क्या हूं कि कुछ लोग काम करके चलता बनने वाले हो हैं। उनके मुँह पर काले रंग के कपड़े बँधे थे। एक आदमी मेरे पास आया और उसने मुझसे डाटते हुए कहा 'भाग जा यहाँ से नहीं तो पुलिस आती होगी और गोली मार देगी।' अभी उक्त व्यक्ति मुझे डाट ही रहा था कि पीछे से मेरे मामा आये और मुझे पकड़कर घर की ओर ले चले। घर लेजाकर उन्होंने मुझे बहुत समझाया। यद्यपि मेरे मामा का परिवार पुराना क्रांतिकारी परिवार रहा है। सन् १८५७ में मामा के बावा हरिवंश दूबे को क्रांतिकारी झूरी सिंह का साथ देने के कारण फाँसी की सजा दी गयी थी जिसे अपील करने पर रद्द कर दिया गया था। स्वयं मामाजी भी सत्याग्रहों में भाग लेने के कारण कई बार जेल यात्रा कर चुके थे। उन्होंने उसी रात मुझसे घर छोड़कर भाग जाने को कहा। मुझे मामा जी की बातें आज भी नहीं भूलती। उन्होंने कहा था 'तुम अभी लड़के हो। देश के लिए बहुत कुछ काम करना है। इस समय विदेशी सरकार पागल हो गयी है। अब वह बहुत जल्द ही समाप्त होने वाली है। कहीं यह क्रांति असफल हो गयी और तुम जैसे लड़के भी समाप्त हो गये तो आगे इसे कौन चलायेगा। हमलोग तो काफी जी चुके हैं। यदि कुछ हो भी जाय तो कोई बात नहीं है। इसलिए तुम घर छोड़कर फरार हो जाओ।' मामा जी अभी यह शिक्षा दे ही रहे थे कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पड़ोस के बाबू जंग बहादुर सिंह भी वहाँ पहुंच गये। दोनों की राय एक हो गयी और अन्त में मुझे और मेरे साथी लालजी सिंह (ठाकुर साहब का लड़का) को घर छोड़कर फरार हो जाने का आदेश उस छोटी सी गोष्ठी में पास हो गया। हम पैदल ही उस रात्रि अज्ञात स्थान की ओर चल पड़े। दिन भर चलने के बाद रात करीब ६ बजे जंगीगंज (वाराणसी इलाहाबाद लाइन) स्टेशन के पास पहुँचे तो देखते क्या हैं कि वहाँ का भी स्टेशन जल रहा है। और भी बहुत सी घटनाएँ रास्ते में घटीं किन्तु उन सबको यहां दिया नहीं जा सकता।

लगभग ८-१० दिनों तक यत्र-तत्र विचरण करने के बाद मेजा रोड स्टेशन पर हम लोग संदिग्धावस्था में घूमने के कारण पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिये गये। हमें वहाँ से भदोही थाने पर भेजा गया जहाँ से ज्ञानपुर जेल फिर नैनी जेल और फिर कोई प्रमाण न मिलने के कारण रात के समय चाक घाट ले जाकर छोड़ दिया गया।

उन दिनों ब्रिटिश शासन को समाप्त करने तथा क्रांति को जारी रखने के लिये गांवों में जो लोक गीत गाये जाते थे वे भी काफी उत्साह बढ़ाते थे। इन गीतों से भी काफी प्रेरणा मिली है।

नहिं रखनी नहिं रखनी, सरकार जालिम नहिं रखनी।

× × ×

भारत न रह सकेगा हरगिज गुलाम खाना।
आजाद होगा होगा आता है वह जमाना॥

× × ×

हम गरीबों के गले का हार बन्दे मातरम्।
छीन सकती है नहीं सरकार बन्दे मातरम।
'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा
इसकी शान न जाने पाये, चाहे जान भले ही जाये
विश्व विजय करके दिखलाये, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा

× × ×

मेरा टूटे न चरखे का तार, चरखवा चालू रहे

× × ×

हमके मँगा दे बालम खद्दर की चदरिया,
विदेसी ना मँगाये बलमा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये सब ऐसे गीत उन दिनों गाये जाते थे जो भावुक हृदयों और आजादी के लिए लड़ रहे भारतीय जनता को झूम जाने के लिए बाध्य किया करते थे। जिस शासन के प्रति सन १९४२ में क्रान्ति हुई थी उसी के प्रति १८५७ में वीर शिरोमणि बाबू कुअर सिंह ने तलवार उठायी थी। समय भले दो थे किन्तु बात एकही थी। युद्ध एकही था किन्तु योद्धा बदल गये थे। भारतीय जनता किस शौर्य के साथ उस समय शत्रु से लड़ो होगी इसका अनुमान सन ४२ की क्रांति से लगाना स्वाभाविक था। इन सब घटनाओं का कुअॅर सिंह काव्य के ऊपर प्रभाव पड़ा है। सन ४२ में हुये अत्याचारों से ५७ के अत्याचारों का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता था। कुअॅर सिंह काव्य इन्हीं सब का निचोड़ है।

यह रचना किसी ऐसे कवि की नहीं है जो साहित्य को कोई मूल्यवान निधि दे सकता हो। अपनी चालू भाषा में तुक बन्दियाँ की गई हैं। बे भी पूरी-पूरी उतरी हों, ऐसा नहीं कह सकता।

इस काव्य को महाकाव्य माना जायगा या नहीं, इसे मैं नहीं सकता। क्योंकि महाकाव्य के लिए जितने नियम उप-नियम अपेक्षित हैं, उन सबका पालन कहाँ तक हो सका है इसे भी विज्ञ पाठक ही समझेंगें। एक बात अवश्य है कि सिद्धांत जब व्यवहारके धरातल पर आता है तभी उसका सही रूप क्या हो, इसका निर्धारण होता है। प्रायः प्रत्येक महाकाव्य में शास्त्रीय सिद्धान्तों के सभी नियमों का पालन नहीं हो पाया है फिर भी वे महाकाव्य माने जाते हैं। मैंने इसकी रचना महाकाव्य के रूप में ही की है और कुछ नियमों को छोड़ अधिकांश के पालन का प्रयास किया है। यह बात दूसरी है कि इस दिशा में कहीं कोई त्रुटि रह गई हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काव्य-कथा

इस अद्‌भुत संसार में भारत एक सुन्दर देश है जिसका एक खंड 'भोजपुर' है। इस भूमि पर लगभग सहस्त्र वर्ष पूर्व चेदिराज का शासन था। उस वंश के नरेश को युद्ध के क्षेत्र में भोजराज ने पराजित किया। उन्होंने भोजपुर को अपनी राजधानो बनायी। तभी से यहाँ उज्जैनो वंश की परम्परा चली। इस वंश में अनेक बड़े प्रतापी नरेश हुए। अकबर के समय में यहाँ दलपति का राज्य था। इतिहास इस बात को पता नहीं क्यों स्थान नहों दे पाया कि महाराणा प्रताप की भाँति ही उस छोटे से नरेश ने भी अकबर के प्रभुत्व को आजीवन स्वीकार नहीं किया। इतना ही नहीं अकबर के बाद दलपति जहाँगीर से भी लड़ते रहे। शाहजहाँ के समय में प्रताप सिंह नरेश हुए जिन्हें शाहजहाँ के मुकाबले पराजित होना पड़ा और शाहजहाँ ने उन्हें फाँसी दे दी। इसी वंश में आगे चल-कर साहब जादा सिंह की धर्मपत्नी पंचरतन कुअँरि के गर्भ से एक पुत्र हुआ जिसका नाम कुअँर सिंह रखा गया। कुअँर सिंह का जन्मोत्सव बड़े ठाट-बाट से मनाया गया। बालक बचपन से ही अनोखी एवं असाधारण प्रवृत्तियों का था। हथियार आदि चलाना और क्षत्रियोचित खेल खेलना उसे बहुत पसन्द था। वह गाँव के लड़कों को सैनिक बनाकर स्वयं सेनापति बनता। साथो लड़कों को दो टोली में बाँट देता और नकली युद्ध करता।

अपने छोटे भाई दयाल सिंह के साथ एक दिन बालक कुअँर खेल रहे थे। खेलते-खेलते दोनों एक कुएँ के पास गये। इसी समय उनके कुटुम्ब के ही एक आदमी जिसका नाम इसरी था, कि निगाह उनपर पड़ी। साहबजादा सिंह के परिवार से स्वभावत: जलने के कारण उसने अपनी बाँदी को यह कहकर कुअँर सिंह के पास भेजा कि वह दोनों भाइयों को कुएँ में गिरा दे। बाँदो ने आदेश का पालन किया। कुअँर सिंह के ऊपर यह पहलो विपत्ति थी। बालक कुअँर ने किसी प्रकार अपने भाई तथा अपने प्राण की रक्षा की। इसी बीच माता पंचरतन कुअँरि की दासी ने सूचना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दी कि कुअँर और दयाल कुएँ में गिर गये हैं। किसी तरह लोगों ने दोनों भाइयों को कुएँ से बाहर निकाला।

कुछ दिनों बाद पारिवारिक कलह के कारण साहबजादा सिंह को जगदीशपुर छोड़ देना पड़ा और वे सपरिवार दलीलपुर में रहने लगे। गया के समीपवर्ती देवमूँगा नामक स्थान के फतेहसिंह नामक क्षत्रिय ने अपनी कन्या का विवाह कुअंर सिंह के साथ किया और उन्होंने दहेज में इतनी बड़ी धनराशि दी कि साहबजादा सिंह का आर्थिक संकट दूर हो गया। साहबजादा सिंह पुनः जगदीशपुर में आकर रहने लगे। समयानुसार कुअँर सिंह को तिलक दिया गया।

युवक होने पर कुअँर सिंह क्षत्रियोचित कर्म करने लगे। व्यायाम तथा संयम के कारण उनका स्वास्थ्य बहुत ही सुन्दर था। वे कुश्ती लड़ते तथा पास ही के जितोरावन में हिंसक जीवों का शिकार करते। उन्हें घुड़सवारी का बड़ा शौक था। इसकी ख्याति बहुत दू-दूर तक फैल गयी थी। कुअँर सिंह ने अपने राज्यकाल में प्रजा की सुख-सुविधा का बराबर ख्याल रखा। वे कलाओं से भी बड़ा प्रेम रखते थे उनके दरबार में आरा की नर्तकी धर्मन बराबर आया करती थी। जब वह पहली बार जगदीशपुर दरबार में नृत्य करने आयी तो कुअँर सिंह उसके रूप पर मुग्ध हो गये। दोनों ने एक दूसरे को प्रेम का आदान-प्रदान किया। समय बीतने लगा। देश पर व्यापारी फिरंगियों ने शासन का जाल फकना शुरू कर दिया था। छोटे-छोटे राजे उनसे परेशान थे किन्तु वश न चलने के कारण वे कुछ कर न सकते थे। गद्दार लोग फिरंगियों से मिलकर उनके साशन में योग देने लगे। देश भर में असन्तोष की आग सुलगने लगी और हिन्दू-मुसलमान दोनों एक जुट होकर देशभक्ति की बात सोचने लगे।

अंग्रेजों का अत्याचार दिन प्रतिदिन बढ़ता ही गया। कुअँर सिंह ने गाँव-गाँव घूमकर सब कुछ देखा और सुना। सोते, जागते उन्हें चैन नहीं मिलता था मन में बराबर विद्रोह की योजना बनने लगी। उन्हें लगा कि भारत माता बहुत ही कष्ट में हैं। हाथों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हथकड़ियां और पैरों में बेड़ियां पड़ी हैं। यह सब सहना कुंअर सिंह के स्वभाव के प्रतिकूल था। उन्होंने मन ही मन प्रतिज्ञा की कि 'या तो रण में वीरगति को प्राप्त करेंगे या भारत माता को सदा के लिये मुक्त कर देगें।' इसी विचार धारा को लेकर उन्होंने अपने क्षेत्र के ग्रामीणों तथा अधिकारियों एवं मित्रों को गुप्त रूप से क्रांति की तैयारी के लिए संदेश दिया। अधिकांश लोगों ने इस पवित्र संकल्प का आदर किया। वीर भोजपुरियों की ओर से उन्हें पूर्ण आश्वासन प्राप्त हुआ। क्रान्ति की ज्वाला फूट पड़ी। पटना में पीर अली नामक एक क्रान्तिकारी को अंग्रेजों ने फाँसी पर लटका दिया। कुअँर सिंह पीर अली को बहुत मानते थे। जब उन्होंने यह समाचार सुना तो मारे क्रोध के आग बबूले हो गये। उस समय उनके आस-पास अमर सिंह (अनुज) हरिकिसुन सिंह (सेनापति) तुलसी प्रसाद सिंह नर्मदेश्वर प्रसाद सिंह (अंगरक्षक) रणदलन सिंह इत्यादि सगे बन्धु-बांधव बैठे थे। कुअँर सिंह पीर अली की मृत्यु का समाचार सुनकर शोकाकुल हो रहे थे तभी बँसुरिया बाबा (देशभक्ति एवं क्रान्तिकारी विचार धारा के सन्त) का आगमन हुआ। कुअँर सिंह उन्हें गुरू की तरह मानते थे। उन्होंने कुअँर को बहुत समझाया बुझाया जिसने कुअँर सिंह के मन में धधकती ज्वाला में घी का काम किया। इसके पूर्व पटना के कमिश्नर टेलर ने जिसने पीर अली को फाँसी दी थी कुअँर सिंह को भी पटने में बुलाया। उसे उनकी क्रांति योजना के बारे में गुप्त सूचना मिल चुकी थी।

जगदीशपुर की बैठक में यह प्रस्ताव पास हो गया कि राजा को पटना नहीं जाना है। कुअर सिंह का पटना न जाना इस बात का द्योतक था कि उन्होंने खुला युद्ध छेड़ दिया है। कुछ सरकारी सैनिकों ने भी कुअंर सिंह का साथ दिया।

कुअँर सिंह को पराजित करने के लिए कप्तान डनवर आरा की ओर आया। कुअंर सिंह के जासूसों ने इस बात की सूचना उन्हें पहले ही दे दी। वे छापामार युद्ध में बड़े ही कुशल थे। उन्होंने आरा के पास एक घने बाग में अपने सैनिकों को पेड़ पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चढ़कर छिप जाने का आदेश दिया। मदांध डनवर जब वहाँ रात के समय पहूंचा तो कुअँर सिंह ने एकबारगी आक्रमण कर दिया। डनवर के पास कुल ५०० सिपाही थे। किन्तु प्रातः होते-होते ५० सिपाही ही बच पाये जो भाग खड़े हुए। डनवर भी युद्ध में मारा गया। कुअँर सिंह की यह पहली और ऐतिहासिक विजय थी जिससे उनके सैनिकों का हौसला बुलन्द हो गया और अंग्रेज सेनापति तथा सरकारी सैनिक डरने लगे।

इसके पश्चात बीबी गंज नामक स्थान के पास कुअँर सिंह और कप्तान आयर के बीच संग्राम हुआ। वहाँ कुअँर सिंह ने स्वयं अपनी सेना को दो भागों मैं बाँटकर आयर का मुकाबला किया। शत्रुओं की तोपों के आगे अपने सैनिकों के पाँव उखड़ते देख कुअँर सिंह ने दूसरा मोर्चा लगाया। बनास नदी पर बनी एक पुलिया से उसपार चलकर युद्ध का व्यूह रहचने के लिए आदेश दिया। सैनिकों ने स्वयं नदी को पार करके पुलिया को ध्वस्त कर दिया। ताकि शत्रु उस पार न आ सके, या जब नदी में सैनिकों को तैरने का आदेश दे तो उन पर वार किये जायँ, किन्तु भारत में जहाँ वीरों की कमी नहीं है वहीं जयचन्दों का भी अभाव नहीं है। किसी व्यक्ति ने आकर बताया कि आगे रेल का पुल है उससे आप सेना लेकर उसपार चले जाँय। परिणाम यह हुआ कि आयर ने नदी को ससैन्य पार किया और उसपार पुनः युद्ध हुआ। कुअंर सिंह तीन तरफ से घिर गये। इस युद्ध में उनके अग रक्षक बाबू तुलसी प्रसाद सिंह खेत रहे। कुअँर सिह उनका शव स्वयं लेकर लौटे।

आयर के साथ तीसरा युद्ध दुल्लौर में हुआ। इस संग्राम में उनके अनुज अमर सिंह ने वड़ी वीरता का परिचय दिया परन्तु विजय की प्राप्ति नहीं हो सकी। इस युद्ध के बाद कुअँर सिंह को जगदीशपुर छोड़ देना पड़ा। लगभग छः महीनों तक घने जंगलों तथा गांवों में घूम-घूम कर उन्होंने युद्ध का प्रचार तथा संगठन किया।

मिलमैन नामक अँग्रेज कप्तान को कुअँर सिंह को परास्त करने के लिए भेजा गया। अतरौलिया (आजमगढ़) के पास दोनों दलों में मुठभेड़ हुई। भीषण संग्राम के बाद मिलमैन को पराजय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का मुँह देखना पड़ा। दूसरे दिन आजमगढ़ में डेम्स नामक कप्तान के साथ कुअँर सिह का युद्ध हुआ। उसे भी मैदान छोड़कर भाग जाना पड़ा। इसी तरह कप्तान मार्क को भी भागना पड़ा।

अब विजयी कुअँर सिह शिवपुर (बलिया) के रास्ते पुनः जगदीशपुर की ओर चले। जब शिवपुर में वे गंगा जी जो पार कर रहे थे तो अंग्रेजों ने उनका पीछा किया सेना तो उस पार चली गयी किन्तु कुअँर सिह की दाहिनी भुजा में शत्रु की गोली आ लगी विष शरीर में न भिने इसलिए उन्होंने अपनी बाँह काटकट गंगा मैया के लहरों को अर्पित कर दिया और किसी तरह जगदीशपुर पहुंच गये।

लीग्रांड नामक अंग्रेज कप्तान नें जगदीशपुर पर आक्रमण किया। इधर कुअँर सिह घायल अवस्था में अपनी जली-उजड़ी गढ़ी में पड़े थे। वेदना बढ़ गयी थी। अतः उन्होंने अपने अनुज अमर सिह को लीग्रांड को मुकाबला करने का आदेश दिया। इस युद्ध को कुअँर सिंह ने खिड़की से देखा। अमर सिह ने बड़े साहस के साथ शत्रु का मुकाबला किया लीग्रांड अमर सिह के हाथों मारा गया। वे भाले पर उसका मुण्ड लेकर कुअँर सिह के पास गये। कुअँर सिह प्रसन्नता से अमर सिह को गले लगा लिया। कटे हाथ की पीड़ा असह्य हो रही थी किन्तु विजय का समाचार सुन कर तथा लीग्रांड का शीश देखकर उन्होंने कहा 'अब मै प्रसन्नता पूर्वक संसार छोड़ सकूँगा'। उस रात जगदीशपुर में दीपावली मनायी गयी।

☆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जननि भारत ! कोटि प्रणाम है

धवल शुभ्र हिमाद्रि किरीटिनी !
जननि भारत ! कोटि प्रणाम है ।

रविसुता सरिता शुभ जह्नुजा तरल नीलम होरक हारिका ।
भुज नदद्वय दक्षिण वाम हैं, जननि भारत ! कोटि प्रणाम है ।।
मलय वाहक वायु सुसेविता, मधुरिमा मयि शीत-वसन्तिनी ।
विचरते नभ अम्बुद श्याम हैं, जननि भारत कोटि प्रणाम है ।।

नित सुगंधित केसर अर्चिता, कटि प्रदेश अरावलि मेखला ।
चरण सेवक सिंधु ललाम है, जननि भारत ! कोटि प्रणाम है ।।
हरित शश्यमयी ममतामयी, रणजयी सुत वीर प्रसूतिनी ।
स्वयं अंक लसे श्रीराम हैं, जननि भारत कोटि प्रणाम है ।।

रणथली पग-पग, जोहर थली, विविध पुण्यथली महिमाभल ।
तव चतुर्दिक चार सुधाम हैं, जननि भारत ! कोटि प्रणाम हैं ।।
अवध, ब्रज, मिथिला, काशीपुरी, शशिमुखी दिल्ली नगरीश्वरी ।
प्रगति-पोषित सेवाग्राम है, जननि भारत ! कोटि प्रणाम है ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जुटलिं सुहागिनि मंगल गावइं

जौन करिगरवा बनउलेसि धरनी।
तौने के हथवा क अजगुत करनी॥
दिनवाँ अँजार होले राति अन्हियरिया।
गोरकी सबेरे आवइ सँझवा सँवरिया॥

सुरुज औ चनवाँ क दियना जरावइं।
घर-घर किरिन सोनहुली नचावइं॥
लघु-बड़ झलमल झलकै तरइया।
कतहूँ चवन्नी, कहूँ छींटल रुपइया॥

झुरहुर - झुरहुर बहेली बयरिया।
झमर - झमर झम बरसै बदरिया॥
चमचम कोरवाँ में चमकै बिजुरिया।
जइसे मियनियाँ से कढ़लि कटरिया॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़के अकसवा में घुमरइ बदरवा।
निरफुल अँखिया में करिया कजरवा।।
बड़ नीक लगेली चलेली घमछाहीं।
सँवरी सरीरिया सँवरि परछाहीं।।

उतरी दखिनियाँ कबउँ पुरुआई।
पछुआँ झकोरै कबौं बहै चउबाई।।
बड़-बड़ लवकलें कतहूँ पहड़वा।
अर्जुन-भीम जनु लड़लें अखड़वा।।

झरना झरलें चीरि पथरा करेजा।
चमकेला जोधवा क पनिगर नेजा।।
कतउँ मरुभूइं कतौ नदिया क पानी।
हरियर बनवाँ हरियरी जवानी।।

हरहर हहरेला कतहूँ सगरवा।
फर-फर धरती क फहरं अँचरवा।।
अजगुत-अजगुत बड़ पसु-पँखिया।
दरसन कइले जुड़ाइ जाइ छतिया।।

हंसा चुगेला मनसरवा में मोती।
सब दिन पहिर उजर रंग धोती।।
जब-जब बदरा ऊपर घहरावै।
मोरवा के अपने मोरिनियाँ नचावइ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हरियर, नील, सोन, कक्करेजवा।
गजब ओढ़नियाँ रंगे बा रंगरेजवा॥
कगवा क बोलिया सगुनवाँ जनावै।
दूघ-भात लेइ बिरहिनियाँ बोलावै॥

सीताराम-राधेश्याम जपैला सुगनवाँ।
मीठी-मीठी सिटिया बजावेली मयनवाँ॥
गीतिया झरेली ओहो अमवाँ की बरिया।
अमरित घोरि-घोरि बोले कोइलरिया॥

देसवा हमार एही भुइयाँ क कोना।
कहइ के माटी बाकी असली में सोना॥
बड़ नोक नउवाँ पड़ल बाय भारत।
केहू के समनवाँ भयल नाहीं आरत॥

उत्तर में सोहे परबतवा क राजा।
पच्छन में सबही पहड़वा क आजा॥
मथवा में बन्हली बकुल रंग पगिया।
कवने सबुनवाँ से धोवले बा धोबिया॥

एही के दखिनवाँ में पसरा सगरवा।
जबने के कोरवाँ से उठेंला बदरवा॥
देसवा नहाले देइ बदरा फुहारा।
तबै त सगरवा भयल जल खारा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देसवा क बहुतं पुरान इतिहसवा।
ओतना महान जेतना बा कलसवा॥
भइलन यह बड़-बड़ मुनि ज्ञानी।
बड़ महरजवा, सती महरानी॥

एहीं से उठलि बाय बेदवा क बानी।
बनवाँ-पहाड़ ज्ञनवाँ क रजधानी॥
एहीं भइलन बड़-बड़ अवतरवा।
राम, स्याम गोतम के घरवा॥

सांति अहिंसा क डोललि आँधी।
एही देसवा में अवतरलेनि गांधी॥
कहवाँ क नेतवा रहल अस जाहिर।
जइसन भयल हमार जवाहिर॥

पसरल दुनियाँ में जेकर जसवा।
एतना घनी बा कहवाँ क इतिहसवा॥
एहीं बाटैं मथुरा, प्रयाग औ कासी।
सितला क मिथिला, अवध अविनासी॥

नीचे जगन्नाथ जी, ऊपर बसें बदरी।
जहवाँ के गइले जनमवाँ न उदरी॥
सेतुबंघ सोहैं कन्या कुमारी।
धरती सरगवा से अधिक पियारी॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रंग-रंग पहिरेली लहरा पटोरिया।
दिल्ली रजधानी जनु उवलि अजोरिया।।
एक बगिया में जस बहुत चिरइया।
देसवा में तरह-तरह कै मनइया।।

भाँति-भाँति क बनलि बाय बानी।
किसिम-किसिम क मिलइ थल-पानी।।
कहै के त धरम-करम बहु रंगी।
फॅकिया अनेक एक नौरंगी।।

अलग-अलग पहिरइ पहिरावा।
बरतन बहुत एक पैंजावा।।
रंग-विरंगी फुललि फुलवारी।
कईगो कियरिया पै एकइ बारी।।

हरियर चाह कहूं पीयरि केसरिया।
धरती सजलि जनु पहिरि बेसरिया।।
गम-गम गछिया चननवाँ क गमक।
मधुरी बयरिया लोभाइ जहँ ठमकै।।

अमवाँ दुलहवा के मउर बँधाला।
ललकी पतइया क जमवाँ सियाला।।
केवला के पतिया क ढलिया बनावै।
नलवा क भलवा पोखरवा चलावै।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठमकि-ठमकि ठम उतरै चमनियाँ।
तलवा में जहवाँ खिललि पुरइनियाँ॥
रसगर महुवा त बहुत पियारा।
झरेला अकसवा से झर-झर तारा॥

निबिया क पेड़बा बड़दवा कहाला।
जंकरे नियर रोगवा न नियराला॥
अउरउ तरह-तरह फर-फुलवा।
रोगवा क बइरो बिरइया क मुलवा॥

एही भुइयाँ क गुन केतना बखानी।
कहनी बहुत दुइ अंगुर बानी॥
एही के गरे में पड़ै मथवा क माला।
लजिया न जाइ बीर बलि-बलि जाला॥

बरु कटि जाइ झुकइ नाहीं जानै।
जियरा से बाढ़ के धरतिया के मानै॥
इहवाँ क तिरिया गजब सतवंती।
मैना - सुनैना के बिटिया में गिनती॥

सिव जी क सहि न गयल अपमनवाँ।
गउरा जी अगिया में दिहलीं परनवाँ॥
अगिन परीक्षा सीतल देइ दिहलीं।
अपजस छुटल, जगत जस लिहलीं॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जौहर कइलिनि पद्मिनि रानी।
टूटइ न दिहलिनि सत क कहानी।।
दँतवा से कसिके दबउले लगमियाँ।
रन में चढ़ील जाइ झँसिया क रनियाँ।।

पिठिया पै बेटवा हाथे में तरुअरिया।
भगति बढ़ेलो देखतइ तसविरिया।।
भइलिनि अनगिन यहँ बीर बाला।
चमकल सत जस जुझिया भाला।।

सजलि बजलि मोर सोने क चिरइया।
अँखिया से देखि न सकलें विदेसिया।।
देसवा पै बेरि-बेरि भइल चढ़ाई।
लमहरि कहनी बा थोरि कविताई।।

एहि भुइयाँ में एक भोजपुर चप्पा।
धरती की धोतिया रंगल जस ठप्पा।।
मिसिरी नियर एहि भुइयाँ क बोलिया।
सुनले पै मनमें लजाली कोइलिया।।

सब रस बोरलि गउआँ क गितिया।
रचले बा जनु देविया सुरसतिया।।
बरहउ मास फसिलि यहँ हरसै।
सरगे क देवता जनमवाँ के तरसै।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सवना - भदवना घेरेली जब बदरी।
झुमरि - झुमरि सखि गावेली कजरी॥
लहरि-लहरि उठै निबिया क डरिया।
भउजी के झलुआ झुलावेली ननदिया॥

गितिया के बोझवा झुकलि धनरोपनी।
लहरेला खेतवा गवाली जब सोहनी॥
जतसरि गितिया गूँजलि बड़े भोरवा।
जनु बनवाँ में कहूँ पिहकले मोरवा॥

फगुना उड़ेला अबीर - गुललवा।
बाजै ढोल-झाल होले होली चौतलवा॥
अहिरा क छयला बहुत सैलानी।
मटकि-मटकि गावै बिरहा क बानी॥

कहँरा झुमरि झूमि गावेला कहँरवा।
कतहूँ पवरिया सुनावेला पवँरवा॥
मोटि-मोटि रोटिया पकाउरे धोबिनियाँ।
नाचि-नाचि धोबिया सुनावैं रसबनियाँ॥

चमरा क बेटवा बनेला मृगनैनी।
गावेला कजरवा लगाइ के चनैनी॥
कतहूँ नयकवा कतौं बनिजरवा।
भोर रतिया के गूँजै घरवा-दुअरवा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोरकी लचारी होइ पुरुबी बिदेसिया।
मचिया बइठि धन झारेली केसिया।।
गितिया में चइती, चिरइया में श्यामा।
"एही ठइयाँ मोतिया हेरइलों हो रामा।।"

अइसनि सुघरि भूइं भोजपुरीया।
गितिया क बरहो मास बहरिया।।
इहवाँ क मनई गजब लोहघरिया।
सब दिन तनलि रहलि तरुअरिया।।

बतिया कहीला आजु बहुत पुरानी।
भइल हजार बरिस क कहानी।।
भोजराज उज्जैन क रजवा।
जितलेनि भुइयाँ बजाई रन-बजवा।।

पहिले क रजवा रहल यहँ चेदी।
भोजराज रन दिहलें लखेदी।।
कइलन भोजपूर रजधानी।
धारराज लिहलेनि परधानी।।

तबसे चलल यहँ बंस उजैनी।
बड़-बड़ जोधवा कटार बड़ि पैनी।।
सब रजपूतन के संग मिललें।
मुहमद गजनी के रन सर कइलें।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फेरि कनउज पर कइलें चढ़ाई।
भोजराज जितलें बरियाईं॥
उदयादित्य पूत बलधरिया।
जंकर कतहूँ न घटलि कटरिया॥

लछिमनदेव भइलें भोज क नाती।
बंस दियरिया में चमकलि बाती॥
एनहीं चलउलेनि नाउँ भोजपुरिया।
अबहीं ले गितिया में गावेला पवँरिया॥

जब दिल्ली में चमकलि बदसाही।
इहवाँ क दलपति झुकलेनि नाहीं॥
अकबर मोगल क बड़गरि सेना।
बीरवा त समझत रहल चबैना॥

हरलें कबहुँ-कबहुँ रन जितलें।
पगिया में दगिया लगइ नाहीं दिहलें॥
एहर अकेल ओहर दुइ पीढ़ी।
किछु न बिगाड़ि सकलि जहँगीरी॥

जिनगी ले जियलें मउतिया से मरलें।
नृप परताप सिंह तब तपलें॥
ओहर से साहजहाँ रन बजवा।
एहर से भोजपूर क रजवा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छूनउँ कुल क निभउलेनि रितिया।
हरलें नृप चढ़ि गइलेनि फँसिया॥
बाढ़ल कुल बाढ़ल परिवरवा।
संग-संग बढ़ल तेग औ भलवा॥

भइ जगदीसपुर रजधानी।
नृप उदयन्त सिंह बलखानी॥
बड़ निरमल कुल कै मरजादा।
पूत जनमलेनि साहबजादा॥

धनि पंचरतना कुंअरि महरनियाँ।
तेज गजब जस दमकै अगिनियाँ॥
एनहीं की कोखिया में अस बिधि लिखलें।
जौने से जनम कुंअर सिंह लिहलें।

सन् सतरह सै अउर बयासी।
भुइयाँ प उतरलि पुन्नि क रासी॥
सीतलि, मंद, सुगंध बयरिया।
बहि पंचरतना क हरलेसि थिरिया॥

बंसवा की कोखिया में उपजेला बंसवा।
गइया की कोखिया में जनमेला बछवा॥
सिअरा के कब जनमावै सेरिनियाँ।
कायर पूत न देइ छतरनिया॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेकरी मतरिया क नाउं पंचरतना।
ते कस होइ न बीर बहुगुना॥
जेहि दिन पूत भयल पहिलौठी।
अइलें पुरोहित लेइ सगुनौटी॥

"बीरन-क खानि ठकुरइनी क अंचरा।"
बोलल पंडित देखतइ पतरा॥
बड सुभदिनवाँ, बहुत सुभ घड़िया।
होइहैं बंटबा गजब लोहधरिया॥

एनके जनमवाँ से बिहँसै धरतीया।
एनहीं से देसवा क बचिहैं इजतिया॥
बंस उजंन रहल जस सनगर।
तइसइ कुँवर जनमलेनि जहगर॥

पुतवा बढ़इहैं कुल मरजादा।
विधिना से अस कइ अइलेनि बादा॥
साहब सिंह सुनत हरसइलें।
बिहसेनि दान चरन रज लिहलें॥

अंगने में नाचि उठलि सब दासी।
परसन भइलेनि गउवाँ क बासी॥
जवन दिवस पंचरतना के नोहर।
आवल तवन गवावत सोहर॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जुटलीं सुहागिनि मंगल गावैं।
हरसि - हरसि बहु खेल रचावै।।
जउ केउ अंगना में ठनगनि ठानैं।
भीतरा से पँचरतना सनमानैं।।

गोतिनि अवरू पड़ोसिनी तिरिया।
जुटि-जुटि अंगना में कइलिनि भिड़िया।।
भाँटिनी, नाउनि, धोबिनी आवइ।
हँसि-हँसि पचरतना के गरियावइ।।

नेगिया बदे ठाढ़ि ठनकैं दुअरिया।
दुअरे पै ठनगन करेला पवँरिया।।
एक रहै नेग तहवाँ दुइ जोहइं।
कुलि लिहले बिनु पिंड न छोड़इं।।

हँसि - हँसि झूठइ नरपति खीझड़े।
पहिले त चिढ़ै फेरि पछवाँ पसीजइं।।
अइसइ बीतलि छठिया-बरहिया।
बेटवा बढ़इ जस दुईज अंजोरिया।।

कुँअर के अइले भरल दस कोरा।
राजा - रानी हँसि करैं छोरी क छोरा।।
अँगना से दुअरे दुअरवाँ से अँगना।
पूत कुँवर बनि गइलें खेलवना।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोरवा क कुँवर उतरि अइलें भुइयाँ।
ठाढ़ होइ जाले नाहीं चललें बकइयाँ॥
मटिया में लोटइं देइं किलकारी।
सुनि-सुनि मनवाँ मगन महतारी॥

अंगुरी पकड़ि के चलावै लागीं रानी।
लेइ दुलराइ तुतुराइ बोलैं बानी॥
अढ़ुकि अढ़ुकि गिरैं चलि नाहीं जाला।
मथवा क तेज जस पनिगर माला।

बबुआ रिसाइं त मनवले न मानइं।
गरवा लगाइ पंचरतना दुलारइं॥
दसिया पठाइ माई किनलीं खेलवना।
एकहू न लेइ बड़ अजब बेटवना॥

फेंकि देला घुघुना अउ माँगेला चटरिया।
कहे जे चाही हमें ढाल - तरुअरिया॥
नन्हवें क टेढ़ ठकुरइनी क बेटवा।
लपकि-लपकि लेइ छुरिया क बेंटवा॥

केहू घाह पकड़ें छोड़वले न छोड़इ।
तेगवा क धरिया अंगुरिया से मोड़इं॥
टेइ - टेइ पथरा प करै तेज भाला।
माई कहैं चोटिया लगं न मोरे लाला॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाढ़ै लागे कुँअर बढंलि तरुअरिया।
रसे - रसे पनियाँ भिनल भोजपुरिया ।।
हनि - हनि भलवा से साधलें निशाना।
बबुआ रचलें रजपुतिया क बाना ।।

आगे - आगे दबरैं कुँअर लटगेना।
गउआँ क लड़िका बनलें मिलि सेना ।।
देखि मैदनवाँ गदेलवा जुटावइं।
नकली लड़इया क खेलिया रचावइं ।।

बँटि जाइं लड़िका बनाइ दूइ टोलिया।
कइलि कटार बनै ढेलवा क गोलिवा ।।
कबउँ हथियार चलै, कबउँ घमसनवाँ।
मारि - मारि ताल सब जुटैं मैदनवाँ ।।

लड़िके लड़इया कुँअर घर आवइं ।।
झारि पोंछि माई कोरवाँ में बइठावइं ।।
पूछली कवन खेल खेललऽ हो बेटवा।
कुँअर बतावैं खेलवाड़ कुरुखेतवा ।।

भइख अवंर तू भूखान होबऽ पुतवा।
तोहैं बदे धरल कटोरवन दुधवा ।।
तनिकउ न पीयइं जड़ मुँह बिचकावैं।
तब पंचरतना बहुत फुसिलावैं ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अजब लइकवा से परल बा पाला।
कइसे मनावैं नाहीं तनिकउ डेराला ।।
फेरि पुचकारि पलथी पऽ बइठावइं।
एहर-ओहर बात कहैं बहकावइं ।।

तबौ जौ न मानै त देखावलीं कुट्टी।
कुँअर बिहँसि कहैं पियवै मैं घुट्टी ।।
जवन लइकवा न डर-भय मानइ।
जबै देखऽ तबै तरुअरिया बखानइ ।।

तवन डेराला देखि माई क अँगुरिया।
रामजी बनवलेनि धनि महतरिया ।।
कबउँ रिसियालीं जब धइ लेलीं चोटी।
पुतवा क थर-थर काँपलो पोटी ।।

हथवा क घाउ जस झरि जाले फुलवा।
तबउ सहमि जाला देखतं बबुलवा ।।
रतिया में माई जब कोरवाँ सोवावइं।
तरह-तरह क कहनियाँ सुनावइं ।।

सुनि-सुनि कुँअर जी भरलं हुकारी।
पुतवा निहारि के मगन महतारी ।।
पूछं कइसे राणा जी चलवलेनि भाला।
कइसे जुझल रनखेतवा में भाला ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिवाजी क किहिनी त बहुत पियारी।
हमहूँ के ओइसै मँगाइ दे कटारी।।
घोड़वा चढ़ब रनखेतवा में जाबै।
नाहीं यदि किनबू कलेबा नाहीं खाबै।।

गद-गद होलीं माईं भरि लेलीं कोरवा।
तनी अवरू बढ़ि जा मँगाइ देबै घोड़वा।।
बबुआ के देइ-देइ थपकी सोवावइं।
सपने में कुँअर कटरिया चलावइं।।

सँझिया से भोर भोरवा से होले सँझिया।
लहगर होइ लगलें जोहधरिया।।
एकदिन ठनकल ठकुरे क पानी।
कहैं रोज कहनी सुनावलू पुरानी।

मुंसी जी कालि पढ़वलें इतिहसवा!
कहलें "बिदेसिया दबवले बा देसवा"।।
उहउ कहनियाँ सुनाव मोरी माई।
सुनले बिना त हमें निदिया न आई।।

एतना कहत लपटइवेनि गरवा।
सुनत-सुनत होइ गइलन भोरवा।।
कुपवी फिरंगिया क अस मनसूबा।
धीरे-धीरे हजम करत जाला सूबा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहिले की नाई रहि गइल दिल्ली।
चोरवा निहारे मोर सोनवा क सिल्ली॥
कुंअर के हियरा जमल वाय अँखुआ।
रहि-रहि मनवाँ विचार करैं बबुआ॥

आजु रजधनियाँ बनलि बा खेलवना।
नाहीं बरियार बाटै मोगल बेटवना॥
देसवा से कहवाँ गइल रजपूती।
बड़े-बड़े ढोवलें विदेसिया क जूती॥

मुन्सी पढ़ावैं बाकी मनवाँ न लागै।
रतिया कुंअर बड़ देरिया ले जागैं॥
सोचहिल भइले बितन लागे दिनवाँ।
कुँअर की पिठिया प भइले बिरनवाँ॥

अनुज दयाल सिंह लेइ संधवा।
कुँअर खेलत रहे अपने दुअरवाँ॥
बड़ नीक सीत-बसंत क जोड़िया।
मनवा मइल नाहीं अलफ उमरिया॥

खेलत-खेलत गइलें कुँआ की जगतिया।
देखतै मरलि गोतिहरवा क मतिया॥
लहगर लवकलें दूनउँ बिरनवाँ।
राम अस कुअँर दयाल लछिमनवाँ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुसरी के मनवाँ में पपवा समायल।
कुँअर दयाल क देखत बउरायल।।
हमें बदे एनहों बबुरवा क पेड़वा।
गड़िहइं सँझिया-बिहान बनि कँटवा।।

जब मतिया में दुरमतिया समाला।
बड़-बड़ कुकरम पुन्नि जनाला।।
कहाँ अभिमनु कहाँ सात महरथिया।
पपवा भुलवेलेसि सबही क मतिया।।

सतए फटकवा पहुँचि रन जुझलें।
कुलि पंचिया एक साथइ जुटलें।।
आइ दुरजोधना में जब दुरमतिया।
बंस के दियरिया क बुति गइलीं बतिया।।

कुमति सियावै बदनामी क जामा।
पाँच पूत कटलेनि अस्वस्थामा।।
एनहीं से मिलत पिंड - अउ पानी।
दुरमति कइलेसि खतम निसानी।।

कुबधि से भरल जबइ जयचन्दा।
सबदवेधि गर पड़ि गइलें फंदा।
घरवा क फूट बहुत दुःख देला।
अगड़-बगड़ होले जमकल मेला।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूझलि इसरी के मत बरबादी।
खूब समुझाइ के पठवलेनि बाँदी॥
रामजी के कुबरी दियउलेसि बनवाँ।
बाकी ई तऽ काढ़इ चलल परनवाँ॥

कुअँना जगतिया के जाइ नियरइली।
पहिल बिपतिया कुँअर पर अइली॥
कइलेसि तनी-मनी कुँअना में झाँकऽ।
बड़ नीक लागेला दूनउ जन ताकऽ॥

मनवाँ क पाप कुँअर नाहीं जनलें।
दूनउँ भाइ झुकि-झुकि कुअना में झँकलें॥
तऽले करिहइयाँ में हथवा लगाइ के।
चेरिया भगलि दूनउँ बिरना गिराइ के॥

दुनिया से भले सब पपवा चोरावइ।
रामजी क पुतरी सबत्तर धावइ॥
सगरौं फिरत बाटै ओनकर खोपिया।
चौकस रहलें चुकली नाहीं अँखिया॥

ओनहीं के कहले हिलेली बन पलई।
केतनउँ बचावै केउ खुलि जाले कलई॥
इसरी त सोचलें भयल मोर कमवाँ।
केहू क न चेरिया प परल नयनवाँ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लठिया टुटलि नाहीं मरि गइलें सँपवा ।
दूइगो निसनवाँ भयल एक तिरवा ।।
कुँअर दयाल जब कुअना में गिरलें ।
किछु नाहीं भयल सँभारि हरि लिहलें ।।

गिरतइ दूनहूँ बिरनवाँ तरइलें ।
गटिया से ठेलि के कुँअर उतिरइलें ।
चारू ओरी चितवें न भइया देखाला ।।
कहवाँ हेरायल बा बिरना दयाला ।

फेरि झट कुँअर जी डुबको लगवलें ।
पनियाँ में हथवा बढ़ाइ टकटोरलें ।।
देरिया भइल त फुलन लागी सँसिया ।
बुढ़वा के हथवा लगलि नाहीं मोतिया ।।

सोचलें कुँअर मन बरु बुड़ि जाबइ ।
बबुआ के बिना हम नाहीं उतिराबइ ।।
सँसिया के छन-छन होत बा पहड़वा ।
ग़ज भइलें कुँअर परेम घरिअरवा ।।

पनियाँ में टोइ-टोइ हथवा बढ़ावें ।
चेहला के छोड़ि के कुछउ नाहीं पावें ।।
झखलें मनवाँ कुँअर बड़ भइया ।
तबले भयल बाटें रामजी सहइया ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनवाँ में आइ, लछिमन क इयदिया।
सकती क बनवाँ, सजीवन बिरइया॥
हनुमत अउते न भइले जौ भोरवा।
बहियाँ टुटत मोर, सून होत कोरवा॥

होतइ बिहान तजि देइत परनवाँ।
तब काहे कुँअर तियागैं बिरनवां॥
गोड़वा से ठेलिके कुँअर फेरि बढ़लें।
हथवा में हथवा बिरनवाँ क पवलें॥

एँड़िया लगाइ उपराँ के उतिरइलें।
कुँअर - दयाल छन भर में उबरलें॥
जेकरे लगलें भगवान जो सहइया।
किछु नाहीं तेकर बिगारेला मनइया॥

बुड़त के तिनका क बहुत सहारा।
कइ देला पार बड़-बड़ जलधारा॥
बरवा क पेड़वा जमल रहा दाँती।
कुँअर दयाल के भयल बा संघाती॥

बायें हाथे कन्हिया प बिरना उठवले।
दहिने से बरवा क सोरिया पकड़लें॥
तब बिरना के भरि अँखिया निहरले।
तकलें दयाल कुँअर मुसुकइले॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुँवर सिंह

मनवाँ भयल भरि खेई अँकवारी।
हलुक पियार देईं गलवा प पारो॥
बाकी कैसे करैं तनिउँ न बस डोलइ।
कन्हिया दयाल बड़ धीरे-धीरे बोलइं॥

नगवा नियर लगं बरवा क सोरिया।
खाइ-खाइ पनियाँ भइल बाय करिया॥
तवने के कसलें कुँअर भरि बहियाँ।
सँपवा से जस लिपटलि बा सँपिनियाँ॥

सेस के बखानी कि बखानी सोरि बरवा।
एक धारै भूइं, एक भूइं रखवरवा॥
मनवाँ निहाल देखि पेंड़वा क पाती।
जइसे पपिहरा के मिललि सेवाती॥

देरिया ले सोरि नाहीं थम्हले थम्हाला।
अलफ उमिरिया पं बड़का कसाला॥
रसे-रसे भिनत पोढ़ाई जात हड़वा।
लड़िका न जानेला कि कस होला गढ़वा॥

कनवाँ से कबहूँ न सुनलें विपतिया।
तेकरे कपारे पड़ी बड़को अफतिया॥
अंगुरी में कँटवाँ न जेके कबउँ गड़लें।
फुलवउ छड़ियवा न माई-बाबा मरलें॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहि लेइ छुरिया त अंगवइ कटरिया।
बाकी एन्है पहिले धँसलि तरुअरिया ॥
उपराँ निहारै जहाँ केहु न देखाला।
कोअँर गदोरिया में पड़ि गइलें छाला ॥

मनवाँ बिसूरलें कुँअर लटगेना।
हमहन बनि गइले पिंजरा क मैना ॥
गुरू क कहनियाँ भइल बाय साँची।
रजपुत जनमेला विपति की आँची ॥

सहै दुख बरदा कि सहै दुख मरदा।
छतिरो के सोहै रनखेतवा क गरदा ॥
आइल सीत-वसंत क सुधिया।
लव-कुस भरि देलें मनवाँ में बुधिया ॥

राम अस बाप सीतल अस माई।
बन में जनमलेनि दूनउँ भाई ॥
तपसिनि आइके लकड़िया जरवलीं।
पहिले पहिल तब पुतवा निहरलीं ॥

अस सोचि सोरिया गदोरिया दबवलें।
सरकत बिरना के कन्हियाँ सँभरलें ॥
तबले लखेबा पंचरतना क लउडी।
कलपत रोअत करत सार दउड़ी ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुंवर सिंह

हालो आवऽ हालो आवऽ जलदी बचावऽ ।
गउआँ के लोगवा सबै मिलि धावऽ ।।
अनभल केहू क न कइलीं पंचरतना ।
कुअँना में गिरि के बुतात बाय दियना ।।

हाइ मोरे राम गजब बड़ भइलें ।
कुँअर - दयाल दूनउँ कुअँना में गिरलें ।।
जंहि - जेंहि ओरिया गइल बाय चेरिया ।
तेहि-तेहि ओरियाँ से दवड़लि भिड़िया ।।

कुअँना जगतिया जुटल बाय गउँआ ।
लेइ गोहरावैं सब कुँअर क नउँआ ।।
सुनलीं खबरि जब माई पँचरतना ।
होंकरत-चोकरत धाइ अइली कुँअना ।।

कहवाँ गिरल मोर राम-लछिमनवाँ ।
पनियाँ में हमहूँ तियगबं परनवाँ ।।
कुँअर - दयाल बिनु कवन जिनिगिया ।
दाईं बाईं अँखिया क दुनहूँ पुतरिया ।।

हाइ मोर ककरी - करइला क बतिया ।
कहतइ भभरि - भभरि आइ छतिया ।।
जेंहि तन चितवैं तेहि क धरै गोड़वा ।
भइया ! बचावऽ मोर दुनहूँ बछेड़वा ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुइ-चारि मिलि जउ कसिके न धरतिनि।
निहचइ माई जाई कुँअना में गिरतिनि।।
अँखिया से लोरबा क धरिया न टूटइं।
पकड़ि के रोवलीं छोड़वले न छूटइं।।

अपनइं अस पूत सबहीं क जनली।
केहि अपरधवा क फल अस पवली।।
केहू अस नाहीं बा जे कुअनाँ से कढ़तै।
मोर हीरा-लाल तनी अँखिया देखवतै।।

कलपि-कलपि माई करलीं मनउतो।
बुढ़िया निहारि कहैं देखऽ सगुनौटो।।
एतनी बिपतिया करेजवा न फाटै।
पपिया परान केहि कोनवाँ में बाटै।।

कइसे गिरल हाइ राम मोर बचवा।
रोवति बा गइया उछरि आउ बछवा।।
छतिया में हनि-हनि मारैं माई मूका।
कस नाहीं हियरा होत दुइ टूका।।

कुअना पुरान बसैं नगवा-निगिनियाँ।
पवँरै न आवेला गहिर बाय पनियाँ।।
दतिया में चारू ओरी जमलि बा काई।
हथवा न सँभारी परत बिछलाई।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तब समझावै लागें साहबजादा।
नीके बाटें तोर दूनउँ सहजादा॥
हँथवा से धइले एहनि बर सोरिया।
कन्हिया प बइठल बाय छोट भइया॥

होत बा उपाइ बड़ हाली निकलिहैं।
धीर मन धरऽ दूनउँ गरवा से लगिहैं॥
बोधलें बहुत पर मन न थिरायल।
छौना निहारे बिन हिरनी बा धायल॥

जोरि दुनउँ हथवा बोललीं सतवन्ती।
मन बल बढ़ल भइनि बलवन्ती॥
बहियाँ फटत होई जउ थकि जइहैं।
सोरिया के छुटले गजब बड़ होइहैं॥

पनियाँ में जाइ अब हम बुड़ि जाबै।
कुँअर के गोड़वा के निचवाँ तराबै॥
मोरि लसिया प ठाढ़ होई मोर ललवा।
पनियाँ थोरइले से बचिहैं बबुलवा॥

चोटिया लगलि होई कम होई पीरा।
मरि के बचाइ लेबै लाल अउ हीरा॥
बेरि-बेरि जब देबी - देवता मनवलीं।
कोखिया सुफल भइली लाल तब पवली॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अबहीं त बाय बड़ अलफ उमिरिया।
लोरिया सुनाये बिनु आवै न निदरिया।।
जउ फेरि कुँअर-दयाल के पउबै।
बरवा की सोरिया में सोनवाँ मढ़इबै।।

कुअनाँ जगतिया पूजब देइ पियरी।
बचि जइहैं जउ मोरी अँखिया क पुतरी।।
नगवा-नगिनियाँ के देब दूध-लावा।
जउ भरि अँखिया लखब दूनउँ छावाँ।।

धरिया न तोरै पँचरतना क अँखिया।
फुलति बा अमवाँ सेन्हुरिया क फँकिया।।
नयना कटोरवा में लोहुआ उतरलें।
रोइ-रोइ दुनहूँ रकत रंग भइलें।।

केतना रहलि ऊ पबित्तर घड़िया।
जेहि छन विधि रचलें महतरिया।।
माई के धरम से बचलि बाय दुनियाँ।
बरसे अँचरवा से अमरित बुनियाँ।।

धरती क तीरथ-बरत मिलि आवैं।
गंग-जमुन सौ संगम लावइं।।
एक जुट होइ जाइं चारिउ बंदवा।
मिलि जाइं सबही धरमवाँ भेदवा।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुन्नि भइल बाय जेतना सबत्तर।
जोड़ले न माई अस होइहैं पबित्तर॥
दुनियाँ क झगड़ा भले भरि जाई।
बाकी नाहीं माई जी क गुनवाँ ओराई॥

माई से उरिन कब भयल बा पुतवा।
आइ के बतावैं तनो बड़-बड़ बंटवा॥
अलर - बिलरं भइलीं पचरतना।
तबले घटलि मन चाहलि घटना॥

पूजलि बाय सब लनवाँ क आसा।
हारत - हारत पलटल पासा॥
लोग कहैं तनिक पलकिया उघारऽ।
छौना दुनउँ भरि नयना निहारऽ॥

सुनतइ छतियन भरि अइलें दुधवा।
रतना के लेखे फेरि जनमेनि पुतवा॥
मुरछा गइल बा हहाइ रानी उठलीं।
जसुदा कन्हैया के जमुना से पवलीं॥

उमड़ल हियरा भरलीं अँकवारी।
आइल अन्हरिया के कोरवां डिवारी॥
भइलीं दुलरवा क खानि जस अम्मा।
एक-एक गलवा पऽ सौ-सौ चुम्मा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेइ दुलरावैं कबउँ हलुक दबावइं।
चोटिया लगलि कहाँ कहि सोहरावइं।।
कोरवाँ भरल जनु बड़का खजाना।
जवने से खरच न एकउ आना।।

छोटका के चूमि बड़का के पुचकारइं।
मन न अघाइ चाहे केतनउँ दुलारइं।।
चेरिया के अढ़वइं हरदिया पिसावऽ।
चोटिया पिरात होई जलदी मिसावऽ।।

हँसि कहैं कुँअर सुनऽ हो मोरी माई।
आगे कस होई जब एतनैं पिराई।।
हरदी लगइबै नाहीं लागत बा लजिया।
घउवा अघाले नाहीं छतिरी क जतिया।।

अबहीं त परी मोर लोहवा से पाला।
होइ जइहैं छतिया के आर-पार भाला।।
गिरले गड़हवा जौ लचिहैं ठटरिया।
कइसे चलब जहँ बोअलि कटरिया।।

डहरि हमारि तरुअरिया क धरिया।
तोरे कोरवाँ के पाछे जुझिया क परिया।।
एतना त सोचऽ हम रतना क पुतवा।
लहरी जरूर एक दिन तोर दुधवा।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बतिया सुनत माई करलीं निहोरा।
साहेब उठाइ भरें पुतवन कोरा ।।
लवटल जस पंचरतना क दिनवाँ।
सब क फिरइ, भले होइ दुसमनवाँ ।।

पनियाँ में तर-पर जइसे हिलोरा।
अइली अन्हरिया दबाइ के अँजोरा ।।
बितलें सुदिनवाँ कुदिनवाँ क फेरा।
दुखवा क सुखवा की पीठिया पऽ डेरा ।।

फेरि से उठल तकदिरिया में लहरा।
घर क कुमतिया हरेला सुख पहरा ।।
रजिया छुटल, छुटि गइलेन गउवाँ।
पवलेनि जाइ दिलीपपुर ठउवाँ ।।

साहेब सबै दुरदिनवाँ से लड़लें।
नन्हवें से कुँअर सँसतिया में बढ़लें ।।
भयल वियहवा सुलछना जी अइलीं।
सुभ पौ पड़ल[1] विपति हरि गइली ।।

गया जी के देवमुँगा कऽ धेरिया[2]।
रतना के अँगना क भइलीं अँजोरिया ।।
घुघुटा उघारि के पतोहिया निहारें।
लागेला जे कोसिला सीतल के दुलारें ।।

---

१. आगमन २. बेटी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फंरि जगदीसपूर रजधानी।
भइलन रजवा कुँअर बलिदानी।।
देसवा के अइलेनि भूपति भारो।
मथवा प देलेनि तिलक सँवारी।।

गते-गते मनवाँ में हँसलो धरतिया।
बबुआ से बचिहैं हमरो इजतिया।।
एनहीं से रोइ के कहब कुलि पीरा।
रामजी रखैं मोर जोगइ के हीरा।।

हमरी बिपतिया क एनहीं नयकवा।
बड़ि भगिया से केउ पाव अस पुतवा।।
मन-मन कुँअर के भुइयाँ असीसइ।
रतना से ढंर एहि पुतवा प रीझइ।।

आगम जानी भारत माता।
जब निरखैं बेटवा सूघर।।
सोचइं एनकर पाइ पसीना।
हरियर होइ जइहैं ऊसर।।

बड़गर पेंड घने बादर से।
गयल हमार ताप कहिया।।
एकदिन अवसि जुड़ाइब बइठी।
एनके बहियाँ की छहियाँ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइलें कुअँर अँजोरा पाख

बचपन गयल पिछाड़ी बाढ़ल ठकुराई क पानो बा।
सीना अउर मुसुक-बल्लन[1] पर पहरा दिहे जवानी बा।।
नैनन बरि-बरि उठइ मसाल-चढ़ानी देत गवाहो बा।
कइलन कामदेव हस्ताक्षर रेखिया भिनल सिपाहो बा।।

मलपट भरल दनाइल गाल, गाल पर लोहू नाचत बा।
चितइ के लखइं त अइसन लागइ दुइगो सूरुज झाँकत बा।।
दाँतन परलि बतीसी हँसइं त जस सोनकिरवा सनकत बा।
करिया गझिन-गझिन बा भौंह, भौंह पर भौंरा गुजरत बा।।

दरपन अस माथा पर तोन लहरिया अइसन देहले बा।
कविता लिखइ बदे 'बरदाई'[2] जइसे डाँड़ी खिंचले बा।।
देहियाँ तूरैं मोछा पूरैं रग-रग कैंड़ों[3] लागल बा।
पुट्ठन पर बा पोढ़गर लाथि ढाल जस गेंड़ा बान्हल बा।।

---

१. पुट्ठा २. चंदबरदाई ३. आलस्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोपिया बान्हि लेइं अंगड़ाई, अँगुरी-अँगुरी मिलि छूटइ।
जइसे बीच अकसवा में दुइ बिजुरी मिलि-मिलि के टूटइ।।
छाती कमर सेर से मिललि, रानि जस साखू क बल्ला।
जे देखइ देखत रहि जाइ जवानी फूटि भइल कल्ला।।

घींचइ कबौं बैंठकी-दंड, पसीना तन से छूटत बा।
टहलू लिहले लाल अँगौछा सीना-मोढ़ा पोंछत बा।।
जोड़ी, नाल, बनेटी, पटा सउख से फेरइं सब बाबू।
आवइं बड़-बड़े बरियार अखाड़ा में न चलै काबू।।

दस्ती घींचइं, अंटी मारैं, काला जंग चलइ कबहूँ।
भरि असवारी रद्दा मारैं धोबियापाट लगैं कबहूँ।।
कूनउँ पंजा अइसन तानैं टाप उठवले बा घोड़ा।
भरि के बाँह लेइं मोढन पर अंटाचित्त गिरै जोड़ा।।

जे जे हाथ मिलावै तेकरी-तेकरी पिठियाँ धूरि लगै।
जेकर जोर होइ ते निकलि अखाड़ा के बहरे बइठैं।।
लागै मो ओहर से दाँव टपाका देइं एहर मेहिया।
घस्सा घिसैं कनपटी मारि बैंठकी पर तूरैं देहियाँ।।

कूड़ी कूदि कलइया खाइं दहाड़ैं जय बजरंग बली।
मारैं जब जंघन पर ताल त जइसे छूटाले बा दुनली।।
बाबू कोसन दउड़ लगावैं दम ना होइ अखाड़ा में।
हूँफरी छूटइ नाहीं, भले पसीना छूटइं जाड़ा में।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुअँर सिंह

जबसे राज कुअँर सिंह लिहलें सबके सुखिया कइ दिहलें।
राजा अउर रिआया निर्फुल बेटा-बाप नियर भइलें।।
गावँइ खेतन-खेत किसान फसलिया मारै जब लहरा।
एतना बहै पसीना खेते देखि लजाइ जाइ बदरा।।

बाढ़ल धंधा औ बेपार न कतहूँ केउ बेकार रहै।
अपुनै भइलन कम अपराध अदालत ना अन्याय सहै।।
जे जस तस पउलेसि अधिकार केहू कऽ हक ना थोर पर।
चिउँटी कन भरि हाथी मन भरि अपन-आपन भाग लहै।।

अपने-अपने धरम रहैं सब, आपन-आपन डहरि चलइं।
भइलैं कुअँर अँजोरा पाख, बरोबर सब पर जोति झरइं।।
लड़िका पठशाला में पढ़ें त भारत कऽ आगम बोलइं।
जहवाँ पडित अउ विद्वान गठरिया ज्ञानन क खोलइं।।

रजधानी क सोभा बाढ़ल तरह-तरह कऽ हाट लगइं।
जहवाँ दूर-दूर से बेपारो आवइं कोनइ बंचइं।।
मंडी - सट्टी अउर सराफा सजलि बजाजी गुड़हट्टी।
बाहर के बेपारी टिकइं मजे कऽ बनलि रहल चट्टी।।

गढ़के पच्छिउँ तरफ तलाब घाट सब सबुजा पथरा कऽ।
देखत पानी बढ़ै पियास नोर अस निरमल पोखरा कऽ।।
पुरुब तरफियाँ बाबू घाट पछूँ गइया पानी पीयइं।
उत्तर-दक्खिन में नर-नारी मरजादा से जल सेवइं।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चारु ओरियाँ हलरै पानी बीच में गाड़ल बा लाठा।
जइसे मथनी पड़लि दही में, गिहथिन अ । मथिहैं माठा॥
नीचे बींडर-बींडर उप्पर बड़ छतना (गझिन बारी।
छवले रहै जहाँ दिन-दुपहरिया में जइसे अन्हियारी॥

झलइं पात सुरुज कऽ जोति, बटोहिन के ना घाम लगइ।
तइसइ बाबू सगरी परजा कऽ सब आफति-विपति सहइं॥
भारी बनलि धरमसाला तऽ कतहूँ उठलि सराँय बड़ो।
टूटल-फूटल ना रहि गइलन एकउ कहीं मजार-मढ़ी॥

गढ़ के बगले बङला बनल, लाल दरवाजा जहँ लागल।
फटका उप्पर नौबतखाना बाजै सहनाई - मादल॥
लोह पिंजरबा अगले-बगले जौने में बन कऽ राजा।
देहियाँ तोरैं पोंछि मरोरैं, गढ पर जब बाजै बाजा॥

लगं अदालत जहाँ कचहरी ना अन्याय होइ कब्बउँ।
बइठें परमेसर अस पंच, जाँच खुपिया क चलै तब्बउँ॥
दुखिया दीन, राँड़-रेवा कऽ पोषण होइ खजाना से।
बाबू क साही भंडार रहै ना खाली दाना से॥

बरखा-सूखा से मारल जब कबउँ किसान गोहरि करैं।
मालगुजारी माफी होइ खरच सरबस सरकार सहइं॥
कबहूँ सरस्वती क पूत उड़ेलइं ज्ञानन क गठरी।
कबहूँ छमकि नर्तकि थिरकैं मोरन के मन सोच परी॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरा वासिन धर्मन बीबी, रहली रूप उजागरि जे।
जइसें नउवाँ तइसें गुनवाँ, नाच-गवनईं अगरि जे॥
जबसे नाचे लगलीं, नचलीं बस बाबू के बङला में।
ना तऽ आरा करें निवास, डोरि कसि जाइ न तबला में॥

का छवि बरनइ कवि धरमन कऽ सोभा नवले डेरा बा।
जगमग जोति करै सुघराई, घर अन्हियार उँजेरा बा॥
रचि-रचि पाँवन देइं महावर डोलले धरती लाल लगइ।
पड़ल अँगुरियन में बिछुआ बा, रुनझुन-रुनझुन बोल कढ़इ॥

पहिरइं कड़ा, कड़ा पर छड़ा पाउँ पैजनियाँ सोहत बा।
धरमन के दूनउँ चरनन पर रति अउ रंभा लोटत बा॥
लहँगा मोरपंखिया सोरह गज कऽ लहरा देहले बा।
ओढ़इं धूप-छाँह क ओढ़नी जइसे बदरा छवले बा॥

कमर करधनी बा धरमन के लपटलि नागिन ना सरकइ।
चाभी क गुच्छा जाँघन पर रूप पिटारी के लटकइ॥
अस सोइलार उदर में नाभी जस नदिया में भवँरी बा।
अँचरा में दुइ कोरा-खोरा देहियाँ साँचा ढारी बा॥

उज्जर कोआ डोरा लाल, सेन्हुरिया अमवा क फाँकी।
परदा पलक खुलइ त मिलइ पुतरियन क मोहक झाँकी॥
माथा चमकें ऊपर कार-कार केसिया क घेरा बा।
जइसे नीचे जोति दिया कऽ ऊपर धुआँ अँधेरा बा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एकतौ रचलें विधिना सूघर दूजे उमिर चढ़ानी कऽ।
तिसरे सवँरइं चउथं असर गजब भोजपुरिया पानी क।
जे देखैं देखत रहि जाइ पुतरिया नाहीं टारि सकैं
जोगी-जती निहारैं मन में संयम नाहीं धारि सकैं।

जइसइ सूघरि राम बनउलेनि,
तइसइ ऊजरि लागैं हिया कऽ।
सोन परी उतरी सरगे से कि,
खानि नचै निचवाँ नचिया कऽ।।
धर्मन भइलिनी रूप तिजोरी,
त लागलि ताली बड़ी नथिया कऽ।
टाँगलि चाभी कि हौ झुलनो कि,
बरइ ओठवा पर जोति दिया कऽ।।

जब जगदीसपुर में धर्मन बोबी पहिल-पहिल अइलीं।
अइसन नीक नाच नचलीं बाबू की अँखिया घर कइलीं।।
नाहीं छिपलि छिपउले दूनउँ ओरियाँ नेह पलै लगलें।
आखिर टूटि गइल मरजादा बाबू धर्मन से कहलें।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धर्मन धर्म न मोर बचे,
कइलू हमरे उपराँ हतियारी।
बाढ़ल नेह मोरे मन में,
जइसे कि पियारी लगेली कटारी।
पातर काजर बा पलकी में कि,
धइलू मियानी में चोखि कटारी।
आँखिन में पुतरी हौ कि—
आम को फाकिन में घरो जामुन कारी॥

धर्मन जोरि के हाथ कहैं,
हमहूँ के उठेला लखे बिनु हीका।
अइसे त देलेनि राम सबै पर,
एक सोहाग बिना सब फीका।
चाहत बा मन में कुल नीच—
तियागि सिखउँ सेन्हुरा कसलीका।
बाकी अपावनि जाति हमारि,
मैं पाउँ क धूरि तू माथे क टीका॥

एक भरोस पलै मन में,
सेबरी घर जूठन रामजो खइलें।
झारि के गोड़न के धुरिया,
अथरा-पथरा कुलवन्ती बनइलें॥
भागीरथी जल में परिके—
जस नीर अपावन पावन भइलें॥
तइसइ मोर उदय बड़ भागि कि,
लोह के आँगन पारस अइलें॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोटि गये बड़ जोगी जती—
एहि रूप के आगे कहाँ केउ जीता।
भइल सगाई परेम क दूनउँ—
ओरिन कै भइलें मन चीता।
नेह से नेह मिला जस मेह से—
मेह मिला भरलें सब रीता।
माँग में सेन्हुर अइसन लागल,
फाटल कूँड़ कढ़ी जस सीता।।

जेतना ओनके तन पर पानी, तेतना एनके तेगा पर।
मिललें गले कुरान-पुरान, नेह क दुनियाँ बा दूसर।।
कासी बढ़ि के काबा के माथे में टीका देहले बा।
महजदि परलि पाउँ पर, मंदिर भरि अँकवरिया लिहले बा।।

बाबू कऽ जस पसरल अइसन, दुनियाँ में परतोख बनल।
लागइ उड़ै खबरि चउगिर्दा गोरन के मन सोच बढ़ल।।
घन बन बीच जितोरा ठाउँ, जहाँ पर प्रकृति लोभानि रहै।
बाबू खेलें रोज अहेर, साथ में बीर जवान रहैं।।

अइसन खेल बहुत दिन चलल, बरोबर सब दिनवाँ नाहीं।
सब किछु रुकइ भले दुनियां में, रूकइ घड़ी छनवाँ नाहीं।।
जवन फिरंगी आयल विल्लाइत से बनि कै बंपारी।
धीरे-धीरे लागल पसरै जइसे पसरै महमारी।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चरचा चलै लाग देसवा में, पाप फिरंगिन क बाढ़ल।
कलियाँ क बनजारा आजु देस पर राज करै लागल।।
जस चाहेला तस कइलेला, अइसन हिम्मत बाढ़ल बा।
केउ ना तपनी बुझावत बा, धरती क छाती डाढ़लि बा।।

लूटत बा राजन कऽ राजि, दुखी होईं परजा रोवत बा।
कहवाँ बाटेनि मुगल-पठान, कहाँ रजपूतो सोचत बा।।
आइल बिपति धरम पर भारी, के कइसे बरदास करी।
कलपति बाटिनी धरती मइया, मनवाँ कबले धीर धरी।।

डोललि नगर-गाँव में पातो, पाती किला डोललि।
जूझऽ देस-जाति पर, कमल फूल अउ रोटी भी बोललि।।
अब त चौकस भयल फिरंगी, गाँवन-गाँवन लूटि परि।
जनता कहँरि-कहँरि के कलपै, कहवाँ जाइ गोहारि करी।।

अइसन राज बेराजी भयल, केहू रखवार न लौकत बा।
गोरन से मिलि के गद्दार गाउँ में आगि लगावत बा।।
बढ़ल बाबू के मन सोच, देहँ से गइल जवानी बा।
झूलल चमवाँ लटकलि लोथि, उमिरि आइल लटकानी बा।।

निलहा साहेब, गोरा अफसर, अपने मन कऽ काम करइं।
जइसे बन में बाघ बुढ़ायल देखि सियारउ नाहीं डरइं।।
सुलगति रहलि देस में आगि, लवरि फूटलि बारिकपुर में।
हिन्दू मुसलमान एक भइलें, मंगल पांड़े के सुर में।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोज सनेस मिलै मलिकार के कि,
लुटिया परलीं सब गावँन।
चोरी से एक दिना चललें,
घोड़वा चढ़ि बाबू जी टोह लगावन।
गाउँ के छोर मिलि पनिहारिन,
रोइ के लागलि हाल बतावन।
अइसे त अइलें कई सन-संवत्,
बाकी सतावन आइ सतावन॥

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"चुरिहारिनि गाउँ में आवत नाहीं"

बाबू कहैं कस गाउँ लगइ—
बड़ सून बतावऽ हमैं पनिहारी।
बाल-गोपाल देखालें कतउँ न,
घरे जर गइलिनि फूँकी अटारी॥
आयल होई फिरंगी इहाँ—
विष-माहुर भा गेड़ुआ जल झारी
पानी पियात न बा हमसे,
हमहूँ से पियासलि लागइ कटारी॥

घूमि के देखि लऽ गाउँ हमार,
तोहइ घर अइसन भी मिलि जइहैं।
पूत जुझाइ के देस बदे—
बुढ़िया, बुढ़वा जहँ बइठल होइहैं॥
जेकर कान्ह कुआँर जुझं,
उजरी मथुरा अब कौन बसइहैं?
का अब ई देवकी-वसुदेव जी,
कंस की कोठरी में सड़ि जइहैं?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेवता बलि वेदी क छोड़ि के,
औरन कऽ कबहूँ एहँ आवत नाहीं।
मारू - जुझारू बजैं बजना,
केउ दूसर राग बजावत नाहीं।।
छोड़ि के वीर भरी कविता,
रस दूसर में कोई गावत नाहीं।
छूरी कटारी बिकइं सगरउँ,
चुरिहारिन गाँउँ में आवत नाहीं।।

देखऽ जहाँ बखरी बलिदानी कऽ
मंदिर जानि के माथ झुकावऽ।
जेकर औन कुमार न लौटल,
पानी ओन्हैं दुइ घोंट पियावऽ।।
जे कहलें हँसिके बेटवा—
इतिहास के आगे कहानी चलावऽ।
पानो लियावइ गइलन औन त,
तू बढ़ि देस क पानी बचावऽ।।

पूतन से बुढ़वा कहलें, रन—
कइसे चली रहलो न जवानी।
पेड़ किनारे क जानऽ हमैं,
बस चारि दिना क बची जिनगानी।
बेद के मन्त्र से पिंड न लेबइ,
बोलाऽ तबउ जयदेस क बानी।।
पानी बचाइ के ना रखबऽ तब,
ना हम लेबै सराध में पानी।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ना भुललें दिन ऊ हमके,
हे बटोही ! भई भुइयाँ रतनारी।
सूतलि आँगन में खटिया—
पर से बोललीं जब सासु हमारी।
देखऽ पिया सरगे से तुहूँ,
बेटवा चललं अब देस गोहारी।
तानि के धाये पिया छतिया,
हम आगे से जाइ थम्हौली कटारी।।

कइलेसि भूइं गोहारि जबै,
रन खेल चला तब मोर परानी।।
जूझ क लागलि अइसन तास[1] कि,
पी गइलें तरुआरो क पानी।
झाँकि झरोखन मैं देखलिउँ,
सबसे अगवाँ मगिया क निसानी।
फूलि के छाती भई गज ऊपर,
साटन की अँगिया मसकानी।।

झूमि के जूझ पिया कइलें,
रन खेतन में रजपूती कमइले।
लाल-गुलाल निहारत नीक लगा,
फेरि से दुलहा बनि गइले।।
नाचि उठी तरुआरि अकास में,
दूत तहाँ जम के डरि गइले।
कौनउँ पाप से जं पुरखा—
नरके रहले, सरगे चलि गइलें।

---

१. ऐसी प्यास जो तृप्त न हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कइसे परान तियागउँ मैं,
पिय की पछिली बतिया जिय साले।
गंग क नीर धरइ रहि गइलन,
ना तुलसी सोनवाँ मुँह डाखे।।
आपन पूत लगाइ के कंठ से,
नेह चटाकन[1] मारि के गाले।
जात की बेरी इहइ कहि गइलन,
आजु से भारत तोरे हवाले।।

होइ न पावं तनिउँ खर-सेवर[2]
ई धरती बहुतइ सुकुमारी।
राखऽ सँजोइ के सावन-भादउँ
के घन से न फुली फुलवारी।।
खूब पसीनन से सिंचिहऽ,
सिंचिहऽ फेरि नेह के लोरन ढारी।
जउ एतनउँ से न काम चलइ तब,
लोहू दिहऽ बेटवा—महतारी।।

कान कथा सुनले रहलीं, जस—
पारथ मारथ बीच समइलें।
बानन कऽ बरखा कइले अस,
जइसे कि मेघ मघा झरि अइलें।।
कर्ण के तीरन के समूहे,
ओनहूँ रन से रन बीच अघइलें।
बाकी न जोड़ पिया क मिला,
हरि मोर भुखायल हो चलि गइलें।।

---

१. चाटा। २. देर से दिनचर्या के कारण होने वाला कष्ट।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सेस परान रहा जबले किछु—
लाली रही लोहुआ कतरे में।
मैल न लागलि बाप की पाग—
न माई के दाग लगा अँचरे में।।
काहे न भूइं गुमान करइ,
छिपलें अस लाल जहाँ कचरे में।
झूमत बा इतिहास जहाँ,
तहँ कइसे भूगोल रहे खतरे में।।

छाँटल मूड़ नचइं धरती,
तब भी निकलइ 'जयदेस' क बोली।
अंतिम साँस क ई रुतबा—
रुकली छन एक अजादी क डोली।।
लालच में पड़िके बलिबेदी,
सियाइ के आइ बड़ो-बड़ी झोली।
माथ बिकइलन फूल के भाव,
बिका लोहुआ ज्यों टके कइ रोली।।

अइसइ बीतल वासर पाख न—
हाथ हटा असि की मुठिया से।
होत सुनइं रन कै चरचा तब,
घायल कूदि परइं खटिया से।।
सेवक° राह में रोकि रखइं,
झटकारि कहइं 'हटि जा बटिया से।
जीवन के घिक बा बइरी—
खेलवाड़ करइ हमरी मटिया से'।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जोतलि गइ तरुआरिन से भुइं,
लोहुन के बदरा घिरि अइले।
तालन तालन धान के थानन,
सूघर-सूघर माथ छिटइलें।
कइसे न जामे अजादी क अंकुर ?
लाल दुकाल पड़ं बलि भइलें।
बारिन - भोरिन के सेन्हुरा,
रण खेतन में खदिया बनि गइलें ।।

टोप लगउले बनूक लिहे जब,
खोरिन में घुसि अइलन गोरा।
जे जइसइ ते चला तइसइ मन—
अइसन देस के रंग में बोरा ।।
छूटि गईं थरिया ठहरे पर,
आगे से टारि दहो क कटोरा।
धाइ जवान चले रन में,
लड़िका जस देखि के माई क कोरा ।।

साँवर रंग बढा रन में—
लखिके समूहे ललकारत गोरा।
टोलन-टोलन में घमसान अउ—
माटिन की भइ छोरी क छोरा ।।
गोर कभी, कभी ऊपर साँवर,
दूनउँ बीर बड़े बरजोरा।
तीरथ लाग दुआर-दुआर पऽ,
मानहु संगम लेत हिलोरा ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वीर चढ़े रन-खेत में अंतिम—
सांस ले पाटलि गइ परिपाटी।
मूड़ इहाँ जेतना कटलें—
ओतना पटले पटि जातइ घाटी ॥
बोलि उठीं तिरिया घर में,
हम कोखि अउ माँग चढ़ावत बाटी।
कइसे तहाँ बइरी बसिहैं,
सेन्हुरउ क सोहाग भई जहँ माटी ॥

धूरिन में धुरिअइलन लोग त—
लागल देहँ भभूत पियारा।
नागिन सी लपटैं तरुआरि,
गरे बनि गइलन नाग दुधारा ॥
बीच लिलार लगी गोलिया,
छुटलें ललका लोहुआ क फुहारा ॥
जूझ में बीर बना जनु संकर,
माथ से फूटलि गंग क धारा ॥

होत बिहान कढ़ैं जेतना—
सँझिया ओतना फरि ना घर अइलें।
एक कटइ तहँ दूइ डटइं,
बलिदान त बासी कबउँ नहि भइलें ॥
छाती उतान सबइ कइलें,
रन बीच कचाकच कीच मचउलें।
जूझ में अइसन लोहू बहा,
बहि भारत कऽ नकसा बनि गइलें ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जीति के हारइं हारि के जीतइ,
मारि के ताल कबउँ ललकारइं।
छातिन में चुभि जाइं संगीन,
जवान तबउ पग पाछ न टारइं॥
भोजपुरी सरदार लपालप,
भालन ऊपर टोप उछारइं।
अइसन लागल दीपक बारि के,
चण्डी खड़ी रन काजर पारइं॥

सत्रु मिले जस राम करें तस,
बइरिउ ना बइरी कभी पावइ।
काँपि उठइ रनचंडी तबइ जब,
वीर न जूझ क रीति निभावइ॥
अइसन पापी फिरंगी रहा,
लड़िका-तिरिया पर हाथ उठावइ।
थूकत बा इतिहास ओन्हइं पर—
पापिन के लजियउ नहिं आवइ॥

हार कहाँ कहँ जीत लोकाइलि,
खेत में ना खोजले पर पावइं।
पीठिन ढाल परी रहि गइलिनि,
दूनउँ हाथे कटार चलावइं॥
"जीत हमार बा" "जीत हमार बा"
बोलि उताइल पाउँ बढ़ावइं।
जूझ में लोह बना टिसुना[१],
हरिना अस बीर कुलाचत आवइं॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जे एतनी मधुरी बतियाइं कि,
बोलत की झुलनी न झकोरइ।[1]
लाज क मारी लजाधुरि[2] जे—
पिय के अगवउँ नाहीं घूघुट खोलइं॥
ओठ खुलइ त कली चटकइ,
रस बात करैं मिसिरी अस घोलइं।
झाँझी क कौनउ बयारि लगी अस,
ते रन में बिजुरी बनि डोलइं॥

दानव भइलन बैरी सबइ—
बिटिया दुरगा क संहार मचावइं।
जे रहलीं बहुतै सुकुआरि—
तनिउँ तन बीच थकान न लावइं॥
भोजपुरी दुलही - बलही —
रनभूमि अउ आँगन एक बनावइं।
फूल के मालन से झुकि जाइं,
ते भालन क बोझवा पहुँचावइं॥

"भारत कऽ जय, भारत कऽ जग"
बोलत-बोलत लागलि लाटी[3]।
लालन भालन में बिंधलें,
सहलें न कबउँ जिन फूल क साँटो॥
सासु कहैं बहू! माँग चढ़ाव तू—
मैं रन कोख चढ़ावत बाटी।
जउ लोहुआ क ललाई परै कम,
छींटि के सेंधुर पाटि दऽ माटी॥"

१. हिलना। २. लज्जाशील। ३. मुंह सूखने से ओठों पर सफेदी आना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंडित से सुनले रहलीं,
सचहूँ देखली दुरगा क कहानी।
ना रुकलीं रोकले घर भीतर,
नारि सबैं भई जूझ दिवानी।।
घंहन[1] कऽ सेवकाई करइं,
पिछवाँ लटकइ मसका भरि पानी।
बाँधि के पीठिन से बेटवा जनु,
घूमइं हजारन झाँसी क रानी।।

धूरिन कऽ ओढ़नी बनि गइलिनी,
सूघर रूप लगइ मटमैला।
माथन लादि के ढाल लिपावइं,
मंडप में जस पावन घइला[2]।।
बीर बदे तरुआरि उठावइं,
नागिनि जइसे उठावइ मोरइला[3]।
या दुलही सतभावँरि देलिनि,
लाल कटार बनो सोहगइला।।

लोह के चादर में अस जोर कहाँ—
जस जोधन के नरखा[4] में।
बेग कहाँ नदिया पउलीं जस,
तेज दुधारन के तरखा में।।
का बघआ गरजे ओतना—
जंतना बल बीरन के करखा[5] में।
अइसन लोहू बहा यहँ जइसन,
मेघ कभी न झरा बरखा में।।

---

१. घायलों। २. कलश। ३. मोर लम्बा सिधोरा। ४. कुर्ता
५. वीरता भरी बात।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लागलि आगि बड़ो भकसावनि[1],
काल क राति कराल बटोहो।
आपुस में लपटें लिपटइं,
लपटावइ गरे जस मोही बिछोही ॥
लोहू के कुण्ड में लोह क आहुति,
बाढ़लि ज्वाल लगाइ के लोही।
कोठन-कोठन छानिन-छानिन,
जामलि लाखन लाल सिरोही ॥

जइसे दवागि उठइ बन में,
बदरी-बरखा बिनु कौन कौन बुझावइ ?
जेठ जरइ, बइसाख बरइ,
के असाढ़ बिना दहकीच[2] मचावइ ॥
तइसे अजादी जहाँ झुलसइ,
तहँ नार, नदी, नद काम न आवइं।
ई अगिया नहीं और के मान कऽ,
खाली कृपान क पानी बुतावइ ॥

हाथी रहे जरलें हथिसारन,
अउ घोड़सारन धोड़ झुरइलें।
कूदि अजादी के कुण्ड में भइलन—
होम, सबइ देवता बनि गइलें ॥
काटल गइलन गाइन कऽ थन,
दूध बिना बछरू अकुलइलें।
कइसे न होइ भला मनई बलि,
गोरू जहाँ बलिदानो कहइलें ॥

---

१. डरावनी। २. पंकिल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइलन राख सबइ घरवा पर—
आँच अभी तक आवत बाटइ।
बीर रहे चढ़लें बेदिया पर,
के महतारी क बन्धन काटइ॥
गोड़न से उड़िके धुरिया,
हमरी धरती के सुनावत बाटइ।
पइबू अजादी बिना तपले न,
कहानी हमार बतावत बाटइ॥

क्रूर फिरंगिन के नरमेध में,
गोंद क पूत भये अगियारी।
आँखि मुदाइल दूनउँ हाथ से-
कइसे लखइ महतारी बेचारी।
दूध झुरायल ओठ से ना,
छन में बरलें देइ के किलकारी।
छाइं से एक आवाज उठीं जस,
राकस छौंकत बा तरकारी॥

याद करऽ कुरुखेत क बालक,
सातउ बीर बुलावल गइलें।
भीषम-द्रोण बड़े धरमी—
सतयें फटका सब पाप कमइलें॥
बीर किसोरन ऊपरं तइसइ,
सउ-सउ सत्रु इहाँ चढ़ि अइलें।
भारत बीच त एक रहा,
अभिमन्यु अनेक इहाँ होइ गइलें॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माई की गोद से छोरि के लालन,
आगि के अंक में फेंकल गइलें।
ज्वालन की गोदिया पड़लें,
केतने कुल क दियना बुति गइलें ।।
एकउ दाइ-उपाइ न लागल,
देखत-देखत में बरि गइलें।
आवे अँजोर अजादी क बालक,
ईंधन देस बदे बनि गइलें ।।

आपन-आपन आइ परी कोई,
लागल नाहीं गोहारि ए भइया।
लोहू बना जमिके जमुना दह,
लागइं ढाल चरइं जस गइया ।।
गोंद क पूत संगीनन में बिंधि,
बीच अकास में खाइं कलइया।
अइसन लागल नाग के ऊपर,
नाचत बा फेरि नाग नथइया ।।

आइल नाहीं अजादी तबउ,
केतना लड़िका बनि गइलें चबैना।
माई कहैं रनमें बन में—
"अँचरा से कहाँ उड़ि गइलन मैना ।।"
लोहुन के लोरवा बहलें,
बिलखैं चिरई कटले जस डैना।
आगिन में सुलगे ललना—
धुअना लगले महतारो के नैना ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुरुज देलें जहाँ पहरा नित,
राज में राति कबउँ नहिं भइलीं।
सागर भी बस में जेकरे—
अछिमी-लक्षिमी जहँ चेरी कहइलीं ॥
खात कमात न देखि सका तेउ,
बाढ़ल बोझ धरा अकुलइलीं।
दूसर रावन जानि के भोज—
पुरी सब नारि सिया बनि गइलीं ॥

गाउँ में लोग न खोजे मिलइं किछु,
अइसन आई ईहाँ मह्मारी।
जे बचले ते टँगइलन डारन,
बेंतन कऽ मरिया भई भारी ॥
पीठिन से चमड़ो उधिरईलिनि,
केउ अस नाहीं जं लागइ गोहारी।
पौन पसीजि झकोरि बहई तब,
डारि अउ पात भरइं अँकवारी ॥

पातन - पात मचान बनाइ,
मसान चढ़ा दुरगंधि छिटइलीं।
काग ररइं कगरोर करइ बड़,
गीध अउ गीधिनि भी मेड़रइलीं ॥
चोंचन-चोचन मासु नोचाइल,
हाड़न के ठठरी रहि गइलीं।
पेड़ की डारिन में टँगली-टँगली,
देहियाँ लसिया बनि गइलीं ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माई बिना मरि गइलन बालक,
बाल बिना मरलीं महतारी।
लागल नाहीं पता पति कऽ,
अबहीं ले बिलाप करैं बहुआरी ॥
गाउँ क हालत देखि करइ मन,
पेट में मैं भरि लेईं कटारी।
लेकिन बैरी के नास बदे,
कोखिया में छिपउले हईं चिनगारी ॥

मासु नोचाइल चोंचन से तब,
केकर लासि बा? के पहिचानै।
गाउँ में बास करइ समसान,
पिसाचिनीं डाकिनि काही के मानैं ॥
प्रेतिनि पूछेली कइसे मरे सब,
प्रेत नचाइ के नैन बखानैं।
जे पगलायल देस बदे,
रचिकउ ते परान क मोह न आवै ॥

गीधिनि से गिधवा कहलें सब—
मासु में मानुस मासु बखानी।
तौनेउँ में अति उत्तम लागेलो,
लोथि उहै जवने में जवानी ॥
नीक ओहू में हउ बीर क लासि,
इहै पुरखा कहि गइलें कहानी।
"लेकिन मोर बिचार कहै अस,
देले मजा सबसे बलिदानी ॥"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रावन - बाग सिया बिलखैं,
हनुमान बिना सुधि कौन लियावै ।
आन्हर बाप मतारी पियासल,
औण बिना के सरीर गँवावै ।।
पीयलें दूध सबे बेटवा पर—
पूत सपूत ही मोल चुकावै ।
लोहू पियाइ पियास बुझावइ,
माथ चढ़ाइ के भूख मेटावै ।।

भूत परेत पिसाचिनि-डाकिनि,
हाकिनि भारी लड़ाकिनि अइलीं ।
मैल चुड़ैल खड़ी कलटाइनि,
डाइनि, चंडी सबैं जुटि गइलीं ।।
नाच करइं छोहरा-छोहरी अउ–
कपाली-कपालिनि धूम मचइलीं ।
आखिर भैरव भी चढ़ि अइलेनि,
पै सबकै भुखिया मिटि गइलीं ।।

कूदि मसान - मसानिनि भैरव—
भैरवी नाचलि बाजलि ताली ।
भूतिनि भूत से, प्रेतिनि प्रेत से,
अउ बयतालिक से बयताली ।
होड़ पिसाच - पिसाचिनि में भई,
बोली कपालिनि "ए हो कपालो !
मैं लोहुआ अधिका पियली,
मन चाहैं मिलाइ लऽ जोभी क लाली ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जे चटलीं लोहुआ बलिदानी कऽ,
छूटल रोग रहीं नहिं बंझा।[1]
नाचि के कूदली, कूदि के नाचलीं,
झूमत बा झकझोरत झंझा[2]॥
मूड़न कै बनि गइलें पतंग,
अउ आँत के ताँत में मासु क मंझा[3]।
जीभि लपालप काढ़ि भयावन,
खेल मचावन आइलि संझा॥

डाइनि केस खड़ी छितिरउले,
कि आँखिन में अँजले नभ काजर।
की परलै झकझोरत रुमत—
झूमत बा उलटा विष सागर॥
गोरन क अपकोरति आइलि,
ओढ़ि खड़ी करिया रंग चादर।
छानि बचीं तवनउँ सुलगी अस,
जइसे अकाल क अइलन बादर॥

जीभि पसारि के लाली मिलावइं,
बीर बना जनु पान क बीरा।
लेइ मुड़िया रगड़ें धड़ ऊपर,
लासिन से बनि गइलन खीरा॥
डाइनि लोहू क दालि बनउलेसि,
तौने के ऊपर दाँते क जीरा।
घोटन घोंटि पियइं सरपोटि,
चूवै लरवा लटकइ जस कीरा॥

---

१. वंध्या। २. झंझावात। ३. पतंग की डोर में दिया जाने वाला माझा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राम बनउलेनि राति अन्हार,
इहाँ जरि लोग लिअइलें अँजोरा।
साँवरि आँखि बनी रतनार कि—
लोहुन से भरि गइलें कटोरा।।
ढोवन लागिनि ते जियरा नित,
ढोवत जे रहलीं भरि कोरा।
आखिर खाइ गिरीं घुमरी जब,
लातन रौंदल गइलें सिधोरा।।

लूटलि गइ बखरी - बखरी,
धन, सात समुन्दर पार भेजइलें।
भइलिनि छूँछ सबै मउनी[1],
बहरे असबाब निकालि फेंकइलें।।
संचलि चीज पुरानि बिलाइत,
की हटिया में निलाम करइलें।
ई सब भूलि नमा दुख आयल,
आँचर के गहना[2] लुटि गइलें।।

बाँक बिजायठ टीक कड़ा,
हँसुली बँगुरी मुदरी मणिमाला।
बारी छड़ा पयरी पटरी झुमका,
गलचूमनि साँकड़ बाला।।
बेनी छला नथिया झुलनी,
सिकरी कनफूल न हेरे देखेला।
किंकिन हार हुमेल बिचाइल,
बेचि के कीनल गइलन भाला।।

---

१. मूँज से बनी पिटारी। २. पुत्र।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छन्द अनन्त झवा गुलबन्द,
पछेली अगेली अउ साँट उतन्ना।
कंगन हैकल लौंग पलानी,
नगानउ सातलरी सिरबन्ना।।
हाथन के फेरवा बेरवा,
पहुँची पउली सब नीमन सोना।
तौन सुनायल मेमिन कऽ—
लड़िका नोचलें सब जानि खेलौना।।

सासु - जेठानी - पड़ोसिन मोहँ—
देखाई दिहीं गहना बड़ पावल।
चंपकली लुरकी मुरकी,
दुलरी तिलरी बिछिया अउ छागल।।
बेसर गोप बड़ी नथिया—
सँटिया सब ठूँसि पेटारी में राखल।
तौन सबइ सपना भईलें,
लुटलें-जरलें किछु थाह न लागल।।

लोहन के खरचा बढ़लें,
मोरचा बढ़लें बढ़लीं मजबूरी।
कूदि जवान कटइं रन में,
बलिदान से आयल गंध कपूरी।
देस बदे टुकड़े-टुकड़े बिकि—
गइलन बाकी न गइ मगरूरी।
जौन सोहाग क चीन्ह हौ अन्त में,
चूरी बिकाइल आइल छूरी।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धोती बिना छुटि गइलें नहान,
तऽ ना रहि गइलन ओठ करौना।
बाहन कं तकिया बचलों,
ओढ़ना असमान अउ माटी बिछौना ॥
एकउ भाँड़ देखाले कहीं न,
लुटे लोटवा थरिया अउ भगौना।
काम चलावै बदे बचलें—
हँड़िया पुरवा पतरी अउ दोना ॥

कानन से सुनले रहली,
अँखिया देखली परलै क निसानी।
अइसन लूटि परी एही गाउँ में,
भइलीं बराबर रंकिनि-रानी ॥
तेकर माई उपास करइं,
बेटवा जिनके रहलें बड़ दानी।
नाहीं गिलास बचो फुटही,
चिरुआ-चिरुआ पियलीं सब पानी ॥

भीतिन से कँटिया कहलीं अब,
काढ़ि हमें लोहबन्द बनावऽ।
बोलि उठों खुरपी हँसिया—
बनबै हथियार लोहार बोलावऽ।
जोर से माटी गोहारि लगउलेसि,
बैरी सतावले लाज बचावऽ।
धाइ कहइं हर अउ फरसा,
पहुँचे-पहुँचे मति लोर बहावऽ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आइ सियारिन डीहन में फेकरइं[१],
मनई क न पूत देखइलें।
ताखन में रुई[२] चिरई—
लिहलीं घरबास उलूक समइलें।।
साँपिनि - साँप कुलेल मचउलेनि,
छोड़ि के केंचुर खेलन अइलें।
आँगन रोवल देखत ई गति,
पालल मोर सुआ कहँ गइलें।

चारि में तीनि बिलइलेनि लोग,
संजोग से सेस बचे एक सूका[३]।
जंहल ते छुटि अइलें त गाँउ—
निहारि के छातिन मारइं मूका।।
देहँ न देस के काम में आइलि,
सोचत भैल हृदय दुइ टूका।
ई सब चाहि रहे बदला,
भइलें तन क्रोध से आगि भमूका।।

जे तिरिया बचलीं एहि कोप से,
ते कहुँ मागलि भीखि न पउलीं।
पास - पड़ोस के गाँवन में एहि—
गाउँ से ना बिपदा कम अइलीं।।
पेट क आगि सहइं केतना—
जठरागि भैला केहि से सहि गइलीं।
जेके न नीक लगइ पकवान,
महीनन पात चबाइ बितइलीं।।

---

१. डरावनी बोली। २. अशुभ बोलने वाली चिड़िया ३. चवन्नी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धावत-धावत जंगल झाड़िन,
गोड़न में परि गइलेनि छाला।
ठोकर-ठेस लगे फुटलें तेउ,
छोट क फाँस चुभइं जस भाला॥
ए हो बटोही! कहों केतना,
बिपदा बड़ बा कहलो नहिं जाला।
राम से ठीक कहे हनुमान,
बिना कहले भल दीनदयाला[1]॥

बीरन क करनी सुनि बाबू क,
छाती फुली फुलि के भई छाता।
काही के बीर बेकार बिलातिनि,
जउ एनके मिलतइ केउ भाता॥
ओकर हउ जिनगी दुइ कौड़ी क,
माटी से जे न निबाहेला नाता।
अइसन लागल कि पनिहारी के,
भेस में रोवलीं भारत माता॥

—०—

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबू कऽ फिरली दोहाई......

होइ नीद मगन भितरइं भींतर,
दादा सपना देखत बाटेंनी।
ताना मारत बाटइ माई,
सरगे पुरखा रोअत बाटेंनि।।

माई के दूनउँ नैनन से,
रक्तन कऽ लोर बहत बाटइ।
लागलि पियास सूखल ओठवा,
तौने पर किछु बोलत बाटइ।।

रहलऽ जब छोट पूत तोहके,
अपनी कोखिया में रखली हम।
बेड़ी हमार जरूर तोरबऽ,
तोहसे बड़ आसा कइली हम।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक तउ लड़वइया बंस तोर,
दूसरे बरदान दिहल हमहूँ।
तोहरे तेगा - भाला कऽ जीड़ा,
दुनिया में न मिलल कबहू ॥

तूँ बड़ सूघर रहलऽ बेटवा,
मथबा लुटुर बरवा।
जब याद परेला, मन होला,
तोहके फेरि भरि लेई कोरवा ॥

जब घोड़ा पर बइठइ लगलऽ
सीखइ जुझिया क वार लगे।
लखि-लखि हुलसलि छतिया हमार,
जब तैं बाँधइ तरुआरि लगे ॥

लड़िकाई अउर जवानी गइ,
सूरुज क किरन गइल अब ढलि।
मेटत बाटऽ आशा हमार,
हथकड़िया - बेड़िया ना टूटलि ॥

सब दिन अइसइ नाहीं रहबइ,
केउ पूत सपूत निकालि आये।
बाकी बेटवा मन में सोचऽ
दिनवां त कहइ के रहि जाये ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तोहके लगाइ तोहरे बेटवा के,
आगे जउ ताना मिलिहइं।
सरगे में जे बइठल पुरखा,
ओनहूं नरके में गिरि जइहइं॥

भारत माता के बिलखत लखि के,
सपनइं में दादा रोवलन।
बेटवा क भूल छमा कह दऽ
धीरज राखऽ अइसइ बोललन॥

दाना ना खाये भोजपुरिया,
पानी ना पीये भोजपुरिया।
बाकी जब तक दम में दम बा,
तेगा चमकाए भोजपुरिया॥

निरबंस अउर कंगाल भले,
होइ जाये माई भोजपुरिया।
बाकी मरि-कटि के इतिहसवा,
धनवान बनाये भोजपुरिया॥

लड़वइया पुरखन की पांती में,
नाउँ लिखाये भोजपुरिया।
आवइ वाली पीढ़ी के रग-रग,
जोस जगाये भोजपुरीया॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सारी दुनियाँ चाहे सूतइ,
बाकी अब जागे भोजपुरिया।
बरबाद होइ अजादी कऽ
गितिया अब गाये भोजपुरिया ॥

होये गवाह असमान जहाँ,
लोहा लपकाये भोजपुरिया।
मैदान सत्रु के लासिन से,
समसान बनाये भोजपुरिया ॥

जे आँखि देखाये माई के,
अँखिया धइ फोरे भोजपुरिया।
जे कड़ियल बात कहे ओकर,
जिभिया धइ तारे भोजपुरिया ॥

रन खेतवा में धरती-परती,
लोहू में बोरे भोजपुरिया।
पीले रणचण्डी पी ले रस,
लोहू में घोरे भोजपुरिया ॥

आजादी देवी की माला में,
माथ गुहाये भोजपुरिया।
बैरी कऽ बाँह मुरेरि—
विजय क पत्र लिखाये भोजपुरिया ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छाती उतान कइके पुरान,
पैतरा देखाये भोजपुरिया।
गोरन के छट्ठी के दुधवा कऽ
याद कराये भोजपुरिया॥

भारत में फेरि महाभारत कऽ,
समर मचाये भोजपुरिया॥
जब रनखेतवा में लपकि-लपकि,
तरुआरि चलाये भोजपुरिया॥

रणचण्डी के गोड़े में लोहू—
लाल लगाये भोजपुरिया।
मुडन क आहुति देइ, स्वतंत्रता
मंत्र जगाये भोजपुरिया॥

भारत माई के हाथे कऽ,
हथकड़िया तोरे भोजपुरिया।
दुख देवइ बालन के लोंहू में,
सरिया बोरे भोजपुरिया॥

बेड़ी तोरे बिनु ए माई।
गोड़वा ना छूये भोजपुरिया।
अपमान तोर देखइ के पहिले,
लड़ि के मूये भोजपुरिया॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

माई हँसि के देखऽ अब—
दुधवा सफल करत बा भोजपुरिया।
देइदे असीस रन खेतवा में,
ललकारि चढ़त बा भोजपुरिया॥

चिन्ता क बात न बा माई,
जब तक जीयत बा भोजपुरिया।
सिंहासन पर आसन मारऽ—
ललकारि कहत बा भोजपुरिया॥

दुस्मन के महलन बंगलन कऽ—
नेइयाँ खनि डारे भोजपुरिया।
मटिया करोड़ के ढोइ-ढोइ,
सागर पटवाये भोजपुरिया॥

बैरी के देसवा तकि तेगन कऽ,
हर चलवाये भोजपुरिया।
एकउ बिरवा नाहीं जमिहइं,
कंकड़ पटवाये भोजपुरिया॥

आजादी लाये बिनु देसवा में,
मुँह न देखाये भोजपुरिया।
माई तोहार चाहे असीस,
तब सब कइ नाये भोजपुरिया॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुतरी घूमलि बा माई कऽ
चरनन लोटत बा भोजपुरिया।
बैरी से लोहा लेवइ के—
आज्ञा चाहत बा भोजपुरिया।

माई देहले बाटइ असीस,
अँचरे कऽ छाया नवले बा।
उठुरे बेटवा! उठुरे बेटवा!!
लोह सम्हारा दम जब ले बा॥

अपने पुतवा क प्रेम देखि,
छाती से दुधवा चूवत बा।
कोखिया क मोह उमड़ि आयल,
लोहुन कऽ लोरवा ढरकत बा॥

जउ होतऽ पूत न तूँ तोहरी—
माई क सुधिया के लेतई।
बिपतलि, बान्हलि मारलि—
महतारि के अस धीरज के देतइ॥

अँसुआ-दुधवा दूनउँ टपकल,
अब नीद टुटल बा दादा कऽ।
सपनइं में सब निहचै कइलें,
धनि बेटवा साहबजादा कऽ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इतिहास लिखइ वाले आवऽ,
कविता बनवइ वाले आवऽ।
अइसन फेरि मौका ना लागे,
इतिहास लिखऽ कविता गावऽ ।।

पुरखन के याद करइं बाबू,
अभिमान सामने नाचल बा।
रन में चढ़ि के लोहा चबाब,
छत्रिन के हिस्से बाँटल बा ।।

आँखिन के आगे नाचि उठल,
लोहधरिया छत्रपती आला।
नाचल झाला, राना प्रताप कऽ
चमकल बा ललका भाला ।।

बा चोला के धिक्कार अउर,
धिक्कार तेग - तरुअरिया के।
सब छत्रिन के धिक्कार—
हजारन धिक बड़दार पगरिया के ।।

धिक बाटइ मोछा पूरइ के,
धिक ! धिक !! सिल्ली अस बहियाँ के।
धिक बा माई के दुधवा के,
धिक्कार करोरन कोखिया के ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जौने के जियतइ जाति लुटइ,
जौने के जियतइ धर्म लुटइ।
जौने के जियतइ देश लुटइ,
पूजा अउ पाठ सुकर्म लुटइ।।

बाबू क फिरलि दोहाई,
गावँन-गावँन में डुग्गी बाजल।
लोहा चबाइ के नेवता बा,
सब साजइ आपन दल-बादल।।

बा कोखि जुझावइ के नेवता,
चूरी फोरवावइ के नेवता।
सेन्हुर पोंछवावइ के नेवता,
बा राँड़ कहावइ के नेवता।।

जं हउ हमार ते साथ देइ,
जे हउ हमार ते माथ देइ।
जं हउ हमार ते दुख बूझइ,
जो हउ हमार ते अब जूझइ।।

बा इहाँ न मौका समझइ के,
बा इहाँ न मौका बूझइ के।
को तउ फेरऽ नेवता हमार,
की तउ तयार हो जूझइ के।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेवता कबूल बा हमहन के,
सब गाँवन कऽ मुखिया बोलल।
नेवता कबूल बा हमहन के,
सुखिया बोलल, दुखिया बोलल ।।

महलल से निकलि जवान चले,
मड़हन से निकलि जवान चले।
खड़हर से निकलि जवान चले,
घर-घर से निकलि जवान चले ।।

माई कऽ बन्दि कटावइ के,
बलहीन चले बलवान चले।
भारत कऽ बेड़ा पार करइ,
कंगाल चले, कंकाल चले ।।

सुनि पड़लि मुनादी कऽ पुकार,
बुढ़वन के कान अवाज गयल।
फर-फर-फर देंहियाँ फरफरानि,
फेरि गइल जवानी याद भइल ।।

मोछन पर ताव पड़ल अउ,
हथियारन के ओर नजर घूमल।
बनराज जवानी के पंजन कऽ,
पौरुष सुमरि-सुमरि झूमल ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आँगन में लड़िकन के बटोरि,
हर घर में माई बोलि उठलि।
बस एही समइया की खातिर,
बेंटवा तोहके पाललि-पोसलि ॥

हमरे दूधे क लाज रखऽ,
घर-घर में महतारी बोललि।
हमरे सेन्हुरे कऽ लाज रखऽ
घर-घर वे मेहरारू बोललि ॥

हमरी राखी कऽ लाज रखऽ,
घर-घर में बहिनी बोल उठलि।
पाकल मोछा क लाज रखऽ,
ई बूढ़ बाप कऽ बोल रहलि ॥

हुंकार उठल जब सेना कऽ
गूँजल आवाज नभ चीरि गयल।
केउ बीर तपल बा भरत खण्ड में,
सरगे में अस सोर भयल ॥

फर-फर-फर देहियाँ फरफरानि,
धरती कऽ बात इयाद भइल।
फेरि धरमराज केऽ आगे,
हमरे पुरुखन कऽ फरियाद गइल ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धरती पर हमके भेंजि देहु,
हम सरगे में नाहीं रहबइ।
घेरे विपत्ति भारत के बा,
हमहूँ चलिके लोहा गइबइ॥

हम बइठि इहाँ लूटी बहार,
हमरी धरती पर दाग लगइ।
अइसन सुख हम न हीं भोगब,
तोहरे बैकुंठ आगि लगइ॥

हमरी माई की छाती पर,
जब बैरी पाउं धरत होई।
'नाहक जनमउली हम बंटवा,
कहि धाड़ मारि रोअत होई॥

हम कोटि-कोटि रे साँड़ असस,
देटवा जनमा के का कइली।
नाहक एतनी पीड़ा सहली,
काहें न निपूती हम भइली॥

अपनी माई कऽ रोवब सुनि,
ना फटल करेजा टूक-टूक।
जौनी छाती में देस-प्रेम,
उकसउखेसि नाहीं यार हूक॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेटवा लेइके पनहीं घूमइ,
माई सेवइ दासी बनि के।
जेकर बैरी सुख से सोवइं,
धिक्कार यार ओहि जीवन के॥

बाबू कहलन सुनि लऽ भाई,
ओहँ लोथि लोथि पर भहराई।
अनजाने में कतहूँ ओटं से,
अगिनबान गोली आई॥

जेके पियारि घर कऽ तिरिया,
ते लौटि घरे के चला जाइ।
जे के पियारि भारत माता,
रण में चढ़िके लोहा चबाइ॥

बाबू कऽ बोली गोली अस,
लगि गइल जवानन की छाती।
तूँ माई क दुधवा पियलऽ
का हमहन नीर पिये बाटी॥

गंगा भागइं सागर ताकइं,
सागर भागइ तब कहाँ जाइ।
भोजपुरिया भागइं ये बाबू!
केहि कायर के पाछे लुकाइं॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कह भोजपुरी भागत पवलऽ,
सरदार हमें तलाह देउ।
संका मन में राखउ नाहीं,
रण में चढ़ि के अजमाइ लेउ ।।

मारे लोहन के गोरन के,
लासिन पर लासि गिराइ देब।
हाड़न में नून समायल बा,
बदले में खून बहाइ देब ।।

हम निमक हरामी ना करबइ,
करतब हमार गोहरावत बा।
इतिहासकार बीरन क गाथा,
पोथी में दोहरावत बा ।।

अइसन फेरि मोका ना लागे,
मरि जाये के, मिटि जाये के ?
टुटही खटिया जे प्राण तजे,
ओकर जस गथा गाये के ?

रन में चढ़ि के तरुआरी से,
ठाकुर तू चीन्हि खँचाइ दिहऽ।
ओहि चीन्ही से पीछे आई—
तऽ माथ हजार उतारि लिहऽ ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घउआ जउ देखिहऽ छाती में,
तउ छाती से चिपकाइ लिहऽ।
पीठी में घाउ देखाइ जाइ,
तऽ लातन मारि गिराइ दिहऽ॥

जेकर बैरी बचि जाइ आजु,
ओकरी तरुआरी के धिकार।
ज बिनु मारे लौटइ घर के,
ओकरी तैयारी के धिकार॥

जेकर मोछा नीचे झुकिहँइ,
ओकरी सरदारी के धिकार।
जेकरी पीठी में घाउ लगइ,
ओकरीं महँतारी के धिकार॥

अँगरेजन कऽ छोटका टापू-
गेना अस आजु उठाइ लेब।
हम मारब ठोकर लाते से,
सागर में कतउँ गिराइ देब॥

लागे न पता ओहि देसवा कऽ,
नकसा से नाउँ निकालि देब।
एकउ न पूत बचिहइँ दादा-
हम खोजि बीनि के बालि देब॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजपुरियन कऽ हुंकार सुनत,
हर हर हर सागर हहरि गयल।
कंपिनी कँपलि, इंग्लैंड महा-
रानी कऽ आसन थहरि गयल।।

ना पुरवइया, ना पछुअइयाँ,
ना बहलि बयरिया चउमुखिया।
एह भोजपुरी चप्पा में खाली,
लप-लप लपकलि तरुअरिया।।

कड़ियल ठाकुर ओह बीर बाँकुड़ा,
कुँअर सिंह के रोष आइ।
जाँघन के ऊपर ताल पड़ल,
बोललन दादा हथवा उठाइ।।

पगिया अरुझलि बा गाढ़े में,
कइली आसा मरदानन से।
लजिया रखिहऽ भाई सब जन-
बाबू अस कहइं जवानन से।।

पेड़वा कऽ साखा भले दूइ,
पर एक बरन क पात-डार।
काहे केहू सुरमा होए—
काहे केहू होए लेलार।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नौकर - चाकर कोई नाहीं,
सब हौ हमार सगे भाई।
सब एकइ कोखी में जनमल,
सब कऽ माता भारत माई॥

जौनी माटी के पउरुख से,
लंका में रावन मारि गयल।
जौनी माटी के पउरुख से,
सेलूकस आइ, पछारि गयल॥

जौनी माटी पर कइ घमंड,
इतिहास मुरेरत मोछा बा।
ओकर पानी के ना राखे,
अइसन के जग में ओछा बा॥

जब तकि देहियां में जान रहइ,
अउ हाथन में हथियार रहइ।
तब तक एहि धरती पर,
भारत के बीरन क अधिकार रहइ॥

की तऽ सिर लोटी खेतन में,
की माई कऽ बेड़ी टूटी।
हम इंच - इन्च भरि धरती के-
खातिर सौंपब बोटी - बोटी॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपुस में करइं गुनादन सब,
जुझिया क चर्चा चलत रहइ।
एहि पार अउर ओहि पार,
फिरंगिन कऽ सिंहासन हिलत रहइ॥

हम अगले भाला भोंकि देब;
हम बगले भाला भोंकि देब।
आगे छूरा, पाछे छूरा,
चउतरफा छूरा कोंचि देब॥

बस आबू कऽ आज्ञा चाही,
हम पाउं पिछाड़ी ना धरबइ।
छूड़ी चहले छूड़ी देबइ,
मूड़ी चहले मूड़ी देबइ॥

तन में नाहीं लोहू कम बा,
लोहन में नाहीं कम पानी।
दादा पुतरी घुमाइ देखऽ,
बउरायल बा सबकी ज्वानी॥

सब जन बनि जावइ रन दुलहा,
बलि बेदी पर होए वियाह।
चाहे एहि बल चाहे ओहि बल,
चाहे उज्जर, चाहे सियाह॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाला तेगा क बात करइं,
घर-घर हथियार मजाइ लगल।
हम खून पियब, हम खून पियब,
कहि-कहि लोहा झननाइ लगल।।

जहँ गिरे पसीना दादा कऽ,
तहँ हमहन खून चुवाइ देब।
जहँ बाबू क लोहू चूए,
तेहि ठइयाँ माथ चढ़ाइ देब।।

केकरे तारू में दांत जमल,
के जनमल अइसन लोहधरिया।
जे भोजपुरी मरदानन कऽ,
दुइ हाथ सम्हारइ तरुअरिया।।

अब देर करऽ नाहीं बाबू,
ई भोजपुरिया फेरि जागल बा।
मारू डंका पर चोट परइं,
रन में जाये के मातल बा।।

बा खून सवार जवानन पर,
बैरी फटिहइं जइसे काई।
गोली हमहन की छाती में—
लागी त फूल अस झरि जाई।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोरन कऽ बँगला ऊँच देखि,
ढुइ तल्ला तुरत गिराइ देब।
सूघर छावनी जहाँ लिलहा[1] कऽ,
दादा आगि लगाइ देब।।

सासित हो गयल महासागर,
जेहि सासन क अस रोब जमल।
धरती अस पसरल जौने पर,
सूरज कबहूँ नाहीं अथवल।।

ओकर लोहू पीयल जाए,
कहि भोजपुरी नाहर गरजल।
तरि गइल कोख जौने से—
अइसन सेर बबर बेटवा जनमल।।

अब सगुन बिचारऽ ना भाई,
भारत माई ललकारत बा।
नंगी तरुआरिन कऽ पानी,
रहि-रहि के लहरा मारत बा।।

बारिक पुर में जब ताल मारि के,
कुदि पड़लेन पांड़े मंगल।
होइ गयल सगुनवां तबइ कि जब,
बाभन मरलस पहिला दंगल।।

---

१. नील की खेती करने वाले अंग्रेज।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवतन क पूजलि ई धरती,
पुरखन क पूजलि ई धरती।
पूतन रजपूतन के टटके,
लोहुन से सींचलि ई धरती॥

सूई भरि भुइयाँ की खातिर,
यहँ भाई-भाई से जूझल।
भइ बीर हीन धरती देसवा कऽ,
सेवा तब्बउ ना पूजल॥

माई कऽ लाज बचावइ के,
घासी क रोटी खाइ गइल।
अनगिन बहुआरिन के सेन्हुरे कऽ
रेखा नई मेटाइ गइल॥

ई धरती भइया बड़ पियारि बा,
कुअँर सिंह अइसइ कहलन।
जब तक ठटरी में प्रान बचल,
तब तक कइ लऽ पूजा-दरसन॥

माथे पर अपने धइ लिहलन,
मूठी भरि धूरि उठाइ कुअँर।
जइसे ऊपर धुरिया फेंकइ,
मद मातल झूमि-झूमि करिवर॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जस महानास के बेला में,
सिव के माथे भभकल भभूत।
तइसइ उपरां धुरिया लागल,
तड़पल बा भारत कऽ सपूत।।

अबकी अइसन ताण्डव होए,
रंगि जाई धरती लाल-लाल।
लोहू पी-पी सूघर बीरन कऽ,
रनचण्डी होई निहाल।।

तिरसूल न चमके भोला कऽ,
अब बाबू कऽ भाला चमके।
ना डिम-डिम डमरू नाद करे,
रन बीच नगाड़ा बस धमके।।

नदियन कऽ चरचा कौन करइ,
सागर में ज्वार उभरि आये।
भोजपुरियन कऽ गरजब सुनि,
बड़वा कऽ हुँकार पिछड़ि जाये।।

बूड़े-उतिराये बैरी दल,
परलै कऽ बेला मचि जाये।
छाती उतान कइके जवान,
रन में जब भाला चमकाये।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोरन के जिउ कऽ काल बने,
समराज बदे जंजाल बने।
सोसक से बदला लेवइ के,
कंगालन कऽ कंकाल बने॥

बरसे आगी बादर जरिहइं,
जरि-जरि अकास अरराइ परे।
जब ताल बजे भुज दंडन पर,
सुनि-सुनि पहाड़ भहराइ परे॥

मचि जाये उथल-पुथल खल-भल,
झर-झर नभ से झरिहइं तारा।
अनगिन कोखिन, डंगुरिन माँगिन कऽ
होइ जाये वारा-न्यारा॥

जब लोहू बहे पसीना अस,
तब देहियँन कऽ छूटे फेंड़ा।
जेकरी बाहन में बूत होइ,
ते रोकइ बाबू कऽ पेंड़ा॥

परबत सँभारु आपन पाथर,
ज्वाला मुखियन क लवरि फुटी।
कच्छप हुब जोर लगइहऽ तूँ,
अब धरती कऽ किल्ली टूटी॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सागर आपन पानी राखऽ,
लछिमन कऽ धनुष उठल बाटइ।
रावन लंका पर करु खियाल,
हनुमान दूत छूटल बाटइ॥

काली लप-लप जिभिया निकालु,
लेइले खप्पर, लेइले खंजर।
कंगालन कऽ कंकाल लड़े,
रन बीच करे तांडब पंजर॥

बाबू तूँ गरजऽ धीरे से,
नाहीं अकास अरराइ परे।
एतनी न लाल अँखिया कइ दऽ,
नाहीं सूरुज भहराइ परे॥

बूढ़ा, बच्चा जवान भोजपुरियन—
कऽ सब रोआँ फरकि गयल।
पोरन-पोरन लोहू खौलल,
नस-नस में बिजुरी दउड़ि गयल॥

रन में जाये के एक लालसा से—
जन-मन बउरायल बा।
तेकरे कइसे निदिया लागइ,
जेकर महँतारी घायल बा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बरदास न अब होये तनिकउ,
इतिहास निहारत बा डगरा।
झगड़ा कऽ दिन पीछे लौटल,
भागल झगड़ा, आयल रगड़ा॥

बाबू कहलन तइयार रहऽ
ना ठीक नगाड़ा कब बाजइ।
ई गुपुत बात मन में धइके,
सब बइठि-बइठि लोहा माजइ॥

हर घर में ढलइं सिपाही अब,
विर्धापन कहइ जवानी से।
पितरन कऽ तरपन कइ डारऽ
अब तरुआरिन के पानी से॥

अब सजग रहऽ भाई सब जन,
ना जानी कब लागी अगिया।
बस एकु बात क ध्यान रहइ,
पगिया में ना लागइ दगिया॥

★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धनि पीरअली धनि तोरि महतरिया

बा जुटलि फिरंगिन कऽ जमात,
मूड़न पर धरे गोल टोपिया।
भूँजइ खातिर मुँह बाइ-बाइ,
ताकत बा चौतरफा तोपिया।।

पटना में पड़ल सियापा बा,
कौनउँ चुल्हिया ना आगि बरलि।
सीझल भोजन माहुर भइलन,
हे राम समय कइसन आइलि।।

भा हुकुम फिरंगी क तुरतइ,
फाँसी तख्ता तइयार भयल।
बलिवेदी तनिक बताउ कि—
केहि बलिदानी कऽ पारी आइलि।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जेकर लोहू चमके बताउ—
जावक बनि तोरी एँड़िया में।
कौने बेटवा से बढ़ल नेह,
के के लेबे अंकवरिया में॥

जेकरे देहियाँ कऽ मोह न बा,
के भा तोरे पीछे पागल।
हँफवा केहि बाघ बदे भइलन,
हुंकार मारि के के जागल॥

कइसे समान ऊ पिंजरा में,
जे के ना आँटल बन-पहाड़।
आजादी कऽ जंगल गूँजल,
जेकर सुनि-सुनि के दहाड़॥

जेकर साथी मथवा पर हथवा—
लेइके सगरउँ घूमत बा।
जेकर तरवा आजादी, ओठवा—
काल 'राति-दिन चूमत बा॥

ओह बीर कुअँर कऽ मीत 'पीर'—
रनधीर आजु चढ़िहइँ सूली।
रनबउरन के माथे कऽ चन्दन,
जेकरे गोड़वा कऽ धूली॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फरमान कइल फाँसी कऽ,
हुकुम लगावइ के बस देर रहल।
नभ से चमकत भारी तारा,
टूटइ में रचिकइ देर रहल॥

अपराध रहल ओनकर एतनइं,
रन कऽ परचा बाँटत रहलन।
गोरन कऽ जुलुम भरी करनी,
अखबारन में छापत रहलन॥

धइके मसकी सिकचा टूटइ,
पिंजरा में सोचत सेर रहल।
माथें कऽ दान चढ़ावइ में,
बस चन्द मिनट कऽ देर रहल॥

भरि देत चोकड़ी जो हरिना,
केतने मूड़न के डाकि जात।
मस्ती में झूमत हंस चलत,
बैरी काई अस फाटि जात॥

गरजत जवान तऽ गोरन के—
काने कऽ परदा फाटि जात।
हुँकार भरत केतनी मेमिन कऽ,
असमइ होतइ गरभपात॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फाँसी कऽ बतीया दूर रहलि,
रोआँ ना कोई पाइ सकत।
एतना पउरुख केकरे बाढ़ल,
जे ओनकर छहियाँ छू इ सकत॥

केतनउँ तितर-बटेर आवइं,
बजवन से मोरचा के लेई?
हाथिन कऽ जुटइ जमात भले,
बघवन क मोहड़ा के लेई?

तब बीर पीर कइसे भागइं,
चढ़ि गयल भोजपुरिया पानी।
इतिहास अमर जेहि धरती कऽ,
नाहीं राखत आपन सानी॥

टूटइ भलहूँ टूका-टूका,
पर ओनवइ कऽ ना पड़लि बान।
जे आपन अँगुरी काटि-काटि,
तरुआरिन कऽ नित लखइ सान॥

जरि जाइ जेंवरिया भले मगर,
सब अँइठन बनल रहइ ओकर।
एहँ कऽ दादा-परदावा नित,
कायरता के मरलन ठोकर॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

उड़ि गयल खबरिया बा सगरउँ,
अब जुझिहइं भाई पीरअली।
अंतिम झांकी लेवइ खातिर,
अकुलाइ उठलि बा गली-गली॥

जस पूरनमासी कऽ चन्दा लखि,
सागर लेत हिलोर रहइ।
तस पीर अली के दरसन खातिर,
भिड़िया मारे जोर रहइ॥

पिंजरा से सेर निकालि गयल,
जेकर चलिया मस्तानी बा।
जद्यपि अठवारन से जवान,
ना पाये दाना-पानी बा॥

सोचत बलिदानी बा मन में,
भइ मोर जवानी सफल आज।
आजादी देवी के गोड़न पर,
चढ़िहइं मुड़वा कमल आज॥

अनगिन वीरन के लोहू से,
बलिवेदी जवन नहाये बा।
अनगिन बहुआरिन के मांगिन कऽ
ललकी रेख मेटाये बा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइ भागि उदय ग्रोकरे ग्रँचरा में,
गिरे लाल मथवा हमार।
ग्रइसन दीया लेसल बाटइ,
जहँ पाँखी बनि जूझइं जुझार।

ग्रब चलल पीर जूझइ खातिर,
भारतमाता देइ देउ बिदा।
बीरन क धरती भोजपुर,
ग्रब बलिबेदी पर भइल फिदा॥

मोहड़ा जहँ फिरिहइं बैरिन कऽ,
नदियन कऽ उहइ कछार बिदा।
जहवाँ चमके तेगा-भाला,
रन खेतन कऽ तेवहार बिदा॥

कल-कल कल-कल जस गावत बा,
गंगा मइया जलधार बिदा।
खड़हर नवरतन[1] बिदा देइ दे,
संगी-साथिन कऽ प्यार बिदा॥

नैनागढ़[2] कऽ करिया किलवा,
जगदीशपुर दरबार बिदा।
झन-झन ग्रागे नाचइ रन में,
सच्ची तिरिया तरुग्रारि बिदा॥

१. एक ऐतिहासिक खंडहर। २. चुनार।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुख में पाछे, दुःख में आगे,
जे डटल रहल ऊ ढाल बिदा।
बलिदानिन कऽ बादर अस झूमत,
मस्ती वाली चाल बिदा।।

देसवा, जतिया पर जूझइ वाले,
पानीदार जवान बिदा।
एहि भोजपुर क जंगल-झाड़ी,
नदी, पहाड़, सिवान बिदा।।

सुख-दुख क साथी बीर बहादुर,
कुअँर सिंह तोहके सलाम।
सब कहल-सुनल अब माफ किहऽ,
अंतिम असीस अंतिम प्रणाम।।

लऽ चलल पीर जूझइ खातिर,
बड़कवा सुनऽ ठाकुर हमार।
पुरखन के अउ बलिदानिन के,
भारी बाटइ आसा तोहार।।

जब गाढ़ परे बाबू तोहके,
हमरा खातिर करबऽ पुकार।
मेटब नाहीं बतिया तोहार,
हम तोड़ि-फारि निकलब मजार।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चट्टान तोरि झरना कऽ पानी,
फूटेला अपने बल पर।
जब कहबऽ कबर तोड़ि देबइ,
हम रहब न माटी-पथरा तर ॥

तोहरी ओरी से किछु सनेस,
बलिदानिन से चलिके कहबइ।
विसवास हमइं बा तोहरे जोयत,
नाहीं झूठ कबउँ परबइ ॥

कहबइ "जब तक बाबू के—
तेगा-तरुअरिया बाटइ हथवा।
बैरी कऽ गोड़ जमे नाहीं,
चाहे धड़ से छटकइ मथवा ॥"

कांपल बयार बा थर-थर-थर,
अउ दसउ दिसा हीलइ लागलि।
हूँकइ लगलें छौना बन में,
पालव-पलई हाँफइ लागलि ॥

भारतमाता कऽ जय कहिके,
हँसि पीरअली चढ़लें फँसिया।
जे हँसत रहल छन भरि पहले,
ओकर बस सेस रहलि लसिया ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

फेरि एक अउर दलिदान बढ़ल,
फेरि एक सहीद अउर जूझल।
फेरि मुंडमालिका की माला में,
एक मूड़ टटका गूहल।।

मुड़वा जे आपन ओखरिया में नवलेबा,
लगेला न रचिकउ मुसरवा कऽ तेके भय।
उहइ जहजिया सगरवा में छोड़ेला जे,
पहिले भयल बा तुफनवाँ से निरभय।।
चाहे जस कइलें पिंजरवा में सेर पाइ,
मनवां में धुकुर-पुकुर बाटइ निहचय,
सुनि पइहें कुँअर जौ मोत कऽ सँसतियात,
देस से बिदेस ले मचाइ देहैं परलय।।

चम चम चमकल, लासि पर लपकल,
एक गरदनवाँ अनेकन कटरिया।
सीनवाँ संगीनियाँ क नाकिया मुड़लि जाइ,
गरवा पै मुड़लि कटरिया क धरिया।
लखि नाहीं सकल अकसवा अनीति अस,
ढँकलेसि मोहवाँ बदरिया चदरिया।
तड़पलि बिजुरी ठठाइ घन बोलल जे,
"धनि पीरअली, धनि तोरि महतरिया"।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोखिया सुफलि, कोखि पीरिया सुफलि आजु,
जतिया सुफलि अउ सुफलि भइ जवनियाँ।
जब लगि सुरुज, अँजोरिया अकास रहे,
सुरसरि जमुना के पेटवा में पनियाँ।
जब लगि धरती पऽ बीरन कऽ बास रहे,
अउर इतिहसवा में रहिहैं लिखनियाँ।
गरब से देसवा कऽ छतिया उतान होई,
जब-जब कहे केहू पीर कऽ कहनियाँ ॥

जब फूल फुलेला बगिया में,
गम गम गम गम गम गमकेला।
माली केतनउँ हाता बान्हइ,
पर गंध फानि के फइलेला ॥

अब सोचले से ना काम चले,
पटना में बीर सबइ जुटलन।
बाबू के खबर देइ खातिर,
एक चुनल दूत तुरतइ भेजलन ॥

फइलत-फइलत ई खबर जाइ,
दानापुर सेना में पहुँचलि।
सुनतइ सब बीर दुःखी भइलन,
अउ देस भगति मन में मचलति ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

तब एक सिपाही बोलल भाई,
हमसे अब न सहल जाला।
हमके कायर-कायर कहिके,
गोहरावत बा हमार भाला।।

धनि पीरअली जे देस-जाति,
अउ माटी के कामे आयल।
लेइके देहियाँ ई का होई?
ना एकउ अंग भयल घायल।।

फारऽ अँगरेजन कऽ वरदी,
पहिरऽ आजादी कऽ बाना।
अब बीर पीर कऽ बदला लऽ,
तब होइ सफल पानी-दाना।।

दानापुर दानादार रहल,
कइसे मानइ तन जोस बढ़ल।
चमकल लोहा, उमड़ल सेना,
नदिया सागर की ओर चलल।।

बँटि गयल कमल[१] बँटि गइ रोटी[२]
सब धइलन पटना कऽ रहिया।
आजादी कऽ रथ के रोकइ,
बनि गयल सिपाही जब पहिया।।

१-२ कमल और रोटी उस समय क्रांति की प्रतीक था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोलन गोलिन होम करऽ,
उड़ि धूइं अकास रहइ मड़रानी।
तेगन छाइ रहइ मड़वा भरि,
आँखि लखइ रन भूमि भवानी॥
जूझ कऽ बाजन बाजि उठइ,
अस मेजर जोस में बोलल बानी।
लोहू क सेन्धुर माँगि भरऽ,
तरुआरि भई अब तोरि सयानी॥

आपन कफ्फन बाँधि कपार में,
झूमल बीर तऽ झूमो जवानी।
"पाउँ परे हमरे अँगना कब?
सोचि धरा रन कऽ ललचानी॥
आगे कतउँ लहरात रहइ,
अगवानी बदे नद सोन कऽ पानी।
कागद-स्याही लखइ इतिहास,
बढ़े जब टोलिन में बलिदानी॥

घेरे रहइं करिया बदरा,
नभ में जनु पोतल कार सियाही।
रेती कहइ मन में हँसि के,
धरलें गोड़वा जब बीर सिपाही॥
"लोग अनेकन अइलन गइलन,
ना मिलले कबहूँ अस राही।
तूँ सब देस गोहारि लगऽ,
हम पीढ़िन-पीढ़िन देब गवाही॥"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

भइलन ठाढ़ किनारे सबइ पर—
पास देखानि न एकउ नइया।
सोच विचार बिना कइले,
जलधार में कूदि पड़े सब भइया।
सोन क भागि सराहत बा, अपने—
मन भागीरथी अस मइया।
पौंरत बोर, पछारत नीर,
निहारत भारत लेत बलइया॥

जगदीसपूर के गोंयड़[1] में,
बगिया में खेमा गड़ल रहल।
झलमल-झलमल लटकत झालर से,
जगमग-जगमग होत रहल॥

गरभे मातल रन कऽ निसान,
चढ़ि के अकास फहरात रहल।
लागइ ना ठोकर सूरूज भी,
रस्ता बचाइ के जात रहल॥

पंघति बइठल बा बीरन कऽ,
दरबार लगल बा गरम् जहाँ।
सब टेंढ़ बात करखा बोलइं,
केहू नाहीं बा नरम तहाँ॥

१. बस्ती के पास की भूमि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केतनन के रेख भिनलि बाटइ,
गरदन में धूरि लगलि बाटइ।
ठेहुना नंगो तरुआरि धरलि,
जइसे नागिनो लोटलि बाटइ॥

केउ सिंहासन मरले बाटइ,
मोछन पर ताव पड़ल बाटइ।
गलगुच्छा भौंह छुवइ जइसे,
बिच्छी क आर उठल बाटइ॥

केउ बीर कहत बा साथी से,
मुरचा लागल तरुआरी में।
अबहीं केतनी देरी बाटइ,
भाई ! रन की तइयारी में॥

बइठल सब बीर लखत बाटेनि,
कब बाबू कऽ घुमइ पुतरी।
किलकार मारि के रनखेतवा में,
ताल ठोंकि के हम उतरी॥

सबके अगले-बगले भाला,
बरछी बा, तेग कटारी बा।
जौने क वार न खाली गइ,
अइसन लोटलि दुइधारी बा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

अपने पूतन क पौरुख लखि,
धरती क छाती भरि आइलि।
हर हर हर बम-बम कऽ अवाज,
नक्षत्र लोक के पार गइलि।

कतहूँ जिरही पहिरात रहल,
कतहूँ हथियार मजात रहल।
कतहूँ तयार बइठल जवान,
देह तोरि-तोरि अँगरात रहल॥

जौने में जड़ल अनेक रतन,
सबसे ऊँचा ऊ सिंहासन।
तौने पर बाबू कऽ आसन,
तौने पर बाबू कऽ सासन॥

लप लप लप जइसे लवरि लाल,
पुतरिन पर धरल मसाल रहइ।
सूरज अस तेज बढ़ल जेकरे,
नैनन से निकलत ज्वाल रहल॥

के बइठल बाबू के बगले,
के बइठल बाबू के अगले।
सोना अस दमकऽ लेनि दूनउँ,
जस खूब सोनरधा बा तपले॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई अमरसिंह लहुरा भाई,
दादइ कऽ परलि मुखारी बा।
बड़ गजब तेज बा चेहरा पर,
दुर्गा कऽ भइल सवारी बा॥

हरकिसुन सिंह बगले जेकरे,
तकले बइरी भहराइ परइं।
ओनके बस एक इसारा पर,
सब बोर सिपाही जरइं-मरइं॥

सेनापति एनहीं बाबू कऽ,
एनके जियते न मइलि पगड़ी।
जेहि दिन दादा कुर्सी बँटलेनि,
एनके हिस्से तरुआरि पड़ी॥

रणदलन सिंह, तुलसी प्रसाद,
नीधा-सीधा बदलइं तेवर।
सब एक-एक से बीर तहाँ,
रहलं बेलउस[1] नर्मदेश्वर॥

सब असरुदार सरदार तहाँ,
जे जस ते तस बइठल बाटइ।
केउ जाजिम पर अँगड़ाइ अउर,
केउ चौकी पर अइंठल बाटइ॥

---

१. निश्चिन्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

बा भीड़ जवानन कऽ भारी,
कंधाँ से कंधा रगरि जाइं।
तनिकउ केउ नरम बात बोलइ,
सुनि बगले कऽ जोधा लजाइ॥

किछु बात जरूरी चलत रहलि,
दरबार ठसाठस भरल रहल।
कइसे-कइसे मोर्चा लागि,
केउ कहत रहल, सब सुनत रहल॥

माथा झुकाइ एतने में—
ड्योढ़ीदार आइ कइलस जुहार।
सरकार! क दरसन चाहत बा,
पटना से आयल घोड़सवार॥

गंभीर बोल में बाबू बोलि—
उठेंनि जइसे गरजल बादर।
मजलिस में हाली लेइ आवऽ
घोड़ा सवार कइके आदर॥

जइसइ धूमल ऊ पीछें के,
तइसइ बाईं अँखिया फरकलि।
दादा कइलन मन में बिचार,
हे राम! खबरिया का आइलि॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूड़ी उठाइ देखलन बाबू,
धावन सामने खड़ा बटइ।
बस 'पीर अलो' कहतइ रोवल,
बाबू के तन नागिनि काटइ॥

उतरा चेहरा लखि धावन कऽ
बाबू मनवाँ के समझउलेनि।
जियरा कइलन आपन करेर,
सम्हरल नाहीं, भितरइं रोवलेनि॥

झट से पोछलन आपन लोरवा,
धइ लिहेनि करेजा पर पथरा।
चलि गइलऽ मीत तुहीं पहिले,
सब भीड़ छोड़ि हमरे उपराँ॥

तोहरे अस मीतन के बूते,
अँगरेजन से ठइचा ठानल।
तोहरे अस मीतन के बूते,
कम्मर रन कऽ फेटा बान्हल॥

तोहरे बाँहन कऽ जोर पाइ,
हम चाहल सपना साँच करइ।
एहि जुल-जुल देहियाँ में,
ज्वानी कऽ जोर मीत बिनु कौन भरइ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भइलऽ बेपीर 'पीर' होइ के,
एतना कहतइ पीरा बाढ़ल।
दूसरे कऽ आँसू पोंछइ जे,
होये लागल अपुनइं पागल।

दरबारी सब रहि गयेनि ठाढ़,
धावन बपुरा किछु ना बोलल !
दादा के सोच समान, बँसुरिया—
बाबा कऽ आसन डोलल ॥

ठाकुर अउ मुसलमान धावन,
के सटले जब देखलेनि बाबा।
कहले जे 'पीर धन्नि रहलऽ,
पुजलऽ कासी पुजलऽ काबा ॥

बैरागी रागी होत रहल,
तबले करतब कइलेसि पुकार।
तू भी जउ कुँअर सिंह रोइबऽ,
तऽ कइसे बेड़ा लगी पार ?

छतिया लगाइ बाबू के बाबा,
पटुका से पोंछलेनि लोरवा।
फेरि से दादा पवलन जइसे,
साहबजादा वाला कोरवा ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बैरागी बोलल, 'ई तोहके—
सोभा नाहीं देला राजा।
बदला साथी कऽ लऽ रन में,
अब बाजइ दऽ मारू बाजा॥

तोहरे माथे पर मउर बन्हल,
तोहरे दम पर सब मेला बा।
जब तूँ रोइबऽ त सब कहिहैं-
"बाबा कऽ कायर चेला बा॥"

महराज भोज क तूँ बंसज,
पुरखा कऽ पउरूख याद करऽ।
ताकत बा तरुअरिया तोहार,
ओकरे कब्जा पर हाथ धरऽ॥

तूँ बिलखत बाटऽ अउ तोहार,
महतारी सेवत बा कारा।
ठाकुर! हाथे लोहा लेइके,
हाली कइ दऽ वारा-न्यारा॥

अब तोहइ सँभारइ के बाटइ,
तोहरे कंधा पर बा बहँगी।
छोड़ऽ माया, आजादी कऽ—
कीमत होले बहुतइ महँगी॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरखन कऽ करऽ इयाद कि—
रनखेतवा मूड़न से पटत रहल।
भाई की लसिया पर धइ गोड़वा,
भाई आगे बढ़त रहल॥

जौने देसवा के खातिर देहलें,
पीरअली मथवा चढाइ।
ओकरे खातिर रन में कूदऽ—
औ लऽ ओनकर बदला चुकाइ॥

जेके न मरइ आयल बबुआ,
का मजा जिन्दगी कऽ जानइ।
ऊ मउत होइ दुइ कौड़ी कऽ,
इतिहास न जेके सनमानइ॥

जनमइके सब जनमऽला खा ला,
पोयऽला अउ मरि जाला।
पर असली जिनगी ओकर जे,
दुनिया में कीरति कइ जावा॥

हमरे-तोहरे सबके जीवन पर,
मउत देत बाटइ पहरा।
कायर मरलैं केउ ना जनलस,
दुनिया जनलेसि जब बीर मरा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन्यासी बोलल हे बाबू !
अब कब तक चुप बइठल रहबऽ।
हउ जूझ धरम, गीता बांचऽ।।
ओकर केतना पन्ना फरबऽ।।

ई हाड़ मास लेइ का करबऽ ?
जब देसवा कलपत बा तोहार।
महतारी थर-थर काँपति बा,
बैरी घींचत बाटइ ओहार।।

आखिर जरि जाई चिता बीच,
ना जानी कहाँ लगी माटी।
एके रन बीच सुफल कइ लऽ,
अब लोहुन से भरि दऽ घाटी।।

सब आपन-आपन मउत मरइ,
देसवा पर सब ना मूअला।
देबता तऽ बाटेंनि बहुत मगर,
बिष खाली भोला पीयऽ ला।।

अपमान भरल जिनगी लेइके,
एहि दुनियाँ मैं जे जीयऽला।
ओकरे ऊपर इतिहास बेचारा,
नउ-नउ पाँती रोवऽ ला।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चढ़ि रणखेतवा में भूमि देवकी-
कऽ हथकड़िया तोरऽ तू।
कोठरी छोड़ऽ, मैदान धरऽ,
बैरी क मोहड़ा मोरऽ तू।।

सुनली देसवा पर बिपति परी,
नाहीं मन लागल जंगल में।
सब धरम-करम फरका कइके,
हमहूँ चलबइ अब दंगल में।।

रखि देब कमण्डल ढाल लेब,
अउ दण्ड छोड़ि लेबइ भाला।
पेटी बाँधब हम गोलिन कऽ
किछु दिन छोड़ब कंठी-माला।।

जोगिया रंग कऽ बा मोर लंगोटी,
हमके नीक न लागत बा।
मन कसमस-कसमस कइले बा,
लोहू कऽ छींटा मागत बा।।

सुनिलऽ तू देस भगति के ऊपर,
कौनउ भगति न दुनियां में।
एतना आनन्द कहाँ बाटइ,
निगु नियाँ और सगु नियाँ में।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रन बीच जीत से नीक मउत,
दूनउँ में ई अन्तर होला।
जीतले जोधा घर आवऽ ला,
बाकी जूझले सरगे जाला।।

ई जिगनी देस बदे पउलऽ,
अधिकार देस कऽ बा एहू पर।
जब चाही आपन लेइ लेई,
आखिर तूँ के बाटऽ एकर?

सुनतइ बाबू के आँखिन कऽ,
परदा हटि गयल, अँजोर भयल।
बाबा जी ज्ञान दान कहलन,
मन से सारा अपसोस गयल।।

बाबू सोचलन अपने मन में,
सचहूँ माथे बाटइ जवारि[1]।
बाबा कऽ गोड़ पकड़ि कइलन,
बूड़त के तूँ लिहलऽ उबारि।।

फाँसी देहले बाटइ टेलर,
पटना कऽ जवन कमिस्नर बा।
हमहूँ के बोलवउले बाटइ,
भेजले सनेस अउ आडर बा।।

---

१. परेशानी भरी जिम्मेदारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंचन कऽ मत हमके चाहो,
जाई की ना जाई पटना।
सब दार मदार एही पर बा,
एके जनिहऽ पहिली घटना।।

बाबू एतना कहलन तबले,
एक पंच उठल देलेसि जवाब।
एहि समय फिरंगिन कऽ दाबा,
भारी बाढ़ल बा रोब-दाब।।

ओनकर सेना भारी बाटइ,
बा तोप अउर बन्दूक ढर।
मंगल पांड़े सरगे गइलन,
फांसी चढ़ि गइलन कई सेर।।

रन कऽ सनेस सुनि के राउर,
डुमरांव भयल नाहीं तयार।
आन्हीं अस गोरन के लखिके,
केतना जन धइ देहलन कटार।।

एहि बखत न रन कऽ मौका बा,
टेलर से मेल करऽ दादा।
बिनती हमार एतनइ बाटइ,
मति दूसर खेल रचऽ दादा।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबू कहलन, "का बोहनी के,
बेला असगुन बोलत बाटऽ।
रन से बचि के ना मरबऽ,
का अमृत घइला पियले बाटऽ ?

चर्चा सुनि के तरुआरी कऽ,
जेकर छाती नाहीं उमड़लि।
छत्री के घर नाहक जनमल,
जेकर बहियां नाहीं फरकलि।।

ना गइल जवानी फेरि लौटी,
अब कौने दिन लोहा लेबऽ।
दादा - बाबा क धरती का,
गोरन के डरि के देइ देबऽ।।

भइया अबहींले सपना में भी,
रोब केहू कऽ ना सहलऽ।
जब समय जूझ क आयल तब,
कइसे ई मत आपन देहल ?"

तवले हरि किसुन सिंह कहलन,
"दादा सुनिलऽ अब मत हमार।
जंगल में एकह सेर रही,
ना एक म्यान में दुइ कटार।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के हउ टेलर ? जे हमरे दादा–
के अस हुकुम लगवले बा।
जउ गरज होइ त, खुद आवइ,
तोहके का उहाँ बोलवले बा ?

एतनी हिम्मत कइसे बाढ़लि,
फरमान इहाँ तक भेजले बा।
भोजपुरिया तेगा कS पानी,
दादा अबहीं ना देखले बा।।

बढ़ि गयल सियारन कS साहस,
अब हुकुम चलावइं सेरन पर।
तब पता चले दादा ओनके,
जब झपटें बाज बटेरन पर।।

लिखि भेजS पाती टेलर के,
काहे अइसन कढ़लस जबान ?
मुंह मिलल छोट अउ बात बड़ो,
लिखि दS राखइ आपन परान।।

आवन बइठल बा मजलिस में,
ऊ का सोचत होई मन में,
अब टेलर कS अउ हमहन कS,
निर्णय होई रन खेतन में।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सब निर्णय जउ मनई करिहइं,
तब लोहा का बेकार रहे।
जौने दिन तूँ पटना जाबऽ,
आतमा पीर कऽ काउ कहे ?"

फेरि कहलन "हद् द भयल दादा,
अपमान भला कबले सहबइ।
सब बात कागजी बन्द करऽ,
तरुआरिन से बतिया करबइ॥

लोहा पहिरब, लोहा ओढ़ब,
रणगंगा में गोता मारब।
अब बात करऽ खाली मोर्चा कऽ
चाहे जीतब या हारब॥"

सुनिके बतिया सेनापति कऽ,
सबके मन ही मन जोश भड़ल।
दादा कऽ दूनउँ हाथ उठल,
उठि के गलगुच्छा पर घूमल॥

तड़-तड़ तड़-तड़ ताली बाजल,
दरबार अउर हो गयल गरम।
सब मन ही मन निहचय कइलन,
बस युद्ध धरम, बस युद्ध करम॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जय-जय भारत जय भोजपूर

जूझल कऽ बदला कब लेबइ ?
ना सहि पइलन बीर बिछोहा।
सोवल केउ तनिकउ रतिया में न,
बा मनवां रन ऊपर मोहा ॥
सोर मचा चढ़िहइं अब ठाकुर,
चारण भांट सुनउलेनि दोहा।
लोही अकास में लागलि ना,
तबले रण बाबू क लागल लोहा ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंदिर में घंटा बजत रहल,
महजिद में होत अजान रहल।
पूरब वाले देवता कऽ नभ में,
फहरत लाल निसान रहल॥

आवत बा बीर बिहान दिहे,
मथवा पर लोहू कऽ टिक्का।
तारा गोरा अस भगिहइं, पूरब—
में न जमइ पाये सिक्का॥

जवने डगरा में किरिच किरिनियाँ,
धइ के चमकत सान रहलि।
तारन कऽ टोली तवन राह तजि,
लेइ के भागत जान रहलि॥

लोहू में बोरलि सारी पहिरे,
नाचि उठलि भोरहरिया बा।
लखि के अकास कऽ रंग आंजु-
रण माति उठल भोजपुरिया बा॥

कड़ियल ठाकुर जगदीसपूर कऽ
रण मातल अकुतायल[1] बा।
ओनके तरुआरिन पर पानी,
तन बीच जवानी आयलि बा॥

---

१. ऊबना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोहा बढ़ि के लेई सपूत,
जंगल क बाघ धधायल बा।
एकरे पंजन से अनगिनती,
गोरन कऽ मौत लिखायल बा॥

जेतनी लाली बा सूरुज में,
तेतनी बाबू के नैनन में।
जेतना तड़पन बादर में बा,
तेतना दादा के गरजन में॥

मूड़ि उठाइ नभ में कहलन,
'पुरखा गण मोछा ऊँच करऽ।
तोहरो पगड़ी क लाज रखबइ,
निहचिंत होई अब तूँ बिचरऽ॥

जौनी धरती पर तूँ अइलऽ,
तौनइ महँतारी बा हमरि।
तूँ किरनन से साजऽ ए के,
हम लोहुन से देबइ सँवारि॥

देसवा कऽ लाज बचाइ लेब,
रण में झंडा फहराइ देब।
गरजब बैरिन की टोली में,
तोहके हुँकार सुनाइ देब॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस सोचि हुकुम कइलन बाबू,
चलिजो सहीस घोड़साला में।
हिहिनाइ बछेड़ा बोलल बा,
हम ना रहबइ अब ताला में।।

घोड़ा कऽ कटलि अगाड़ी बा,
घोड़ा कऽ कटलि पछाड़ी बा।
बाँधे कऽ बार सहीस धरे,
घोड़ा कऽ करत तयारी बा।।

ताते पानी ततहायल बा,
फेरि जूड़े से नहवायल बा।
रेसमी रुमालन से ओकरे,
बारन कऽ नीर पोछायल बा।

गर में मोतिन कऽ माला बा,
पीठी पर लाल दुसाला बा।
झलकत ओहार पसमीनन कऽ
पुट्ठन पर लाल नीराला बा।।

ग गूहल बारन-बारन में,
छाया परि जाइ दुधारन में।
पेटी अइसन बांधलि बाटइ,
लागइ ना फरक कटारन में।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रोहू मछरिन के खालन से,
घोड़ा का पुट्ठ मढ़ावल बा।
चारउ टापन में झामदार,
सूघर घुघरू पहिरावल बा।।

देहँ तोरत पोंछि मरोरत बा,
रन कऽ पागल हिहिनायल बा।
दूधे कऽ लार चुअल मुँह से,
चुइ के धरती पर आयल बा।।

खौलल फेरि खून पुराना बा,
बेंदुल[1] कऽ बंसज बउरायल।
अपने पियार पुरखा चेतक[2] कऽ,
याद करेजा में आयल।।

पुरवा कऽ झोंका लागि गयल,
माथे कलंगी लहराइल बा।
पीठी हाली बइठइं दादा,
घोड़ा फेरि से ठेहनाइल बा।।

कसि के बन्हलन बाबू फेंटा,
नैपाली कोर देखायल बा।
अगले छूरी, बगले छूरा,
जौने में जहर बुतायल बा।।

१-२ उदल एवं राणा प्रताप के घोड़ों का नाम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिरही पहिरइं, बख्तर बान्हइं,
तारन क बन्द लगायल बा।
छाती पर लोहन क तावा,
जड़वायल बा, बन्हवायल बा।

मर मर मर मर मोजा मरकल,
लप लप लपकलि तरुआरिया बा।
बगले गैंड़ा कऽ ढालि पड़लि,
भरि माथ सोनहुली पगिया बा॥

बान्हलि बा रतन जड़लि पेटी,
रस में मातलि दुइ धरिया बा।
मुठिया कऽ नग चम चम चमकइ,
ताकत जइसे मणिधरिया बा॥

पटुका सिरउँज वाला बन्हलन,
जेहमें लगि गोली झुरुकि जाइ।
पीठी बज्जर अस ढालि परलि,
लोहा लागे जहँ मुरुकि जाइ॥

रग-रग में रकत कऽ जोस बढ़ल,
कइसे समाइं अँकवारी में।
दर्पन कऽ कवन जरूरत बा,
चेहरा देखलन तरुआरी में॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छोहरो से पूछले बा दुर्गा,
"केकर भाला चम चम चमकल।
कौनी धरती कऽ ई गहना,
ई तपल सोन केकर दमकल ?

"तोहरइ बेटवा तपलन माई",
आंचर पसारि छोहरी बोललि।
कुरुखेते में चढ़ि के गरजल,
तरुआरि ओही कऽ बा डोललि॥

उर्बर धरती बा भोजपुर,
जौने क नग जगदीसपूर।
इतिहास अमर बाटइ एकर,
ई धरतो देहलेसि कुँअर सूर॥

रन में जाये खातिर मातल,
रनबउरा के अब के रोको ?
अइसन कड़ियल छाती बाटई,
मुड़ि जाई भालन कऽ नोकी॥

धरती इतिहसवा कऽ पन्ना,
अउ ओनकर लोहू हउ स्याही।
तिनका-तिनका पर लिखई चलल,
ना टिके इहां नोकरसाही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओनके गरजे भहराइ किला,
अँगरेजन कऽ काँपइ पोटी।
जे भी एनकर डगरा रोके,
काटल जाये बोटी-बोटी।।

कुरुखेते में गरजत बाटइ,
सरदार भोजपूर कऽ आला।
फर फर फर झंडा फहरि रहल,
झंडा में भी लागल भाला।।

अब पाप न होये छाती पर,
धरती मन में अकुलाउले बा।
लागइ ना घाम लड़इतन के,
तम्बू धुरिया कऽ तनले बा।।

दुर्गा कहलिन "जा ये बेटवा,
तेगा तोहार जब खिंचि जाये।
केउ बीर न दूसर वार सहे,
रन में तब परलै मचि जाये।।

जोड़ा धरती पर ना कोई,
तेगा पर पानी कहाँ थोर।
के कहे बुढ़ापा आयल बा,
रग बीच जवानी करइ जोर।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अइसन किछु बुढ़वा मिलि जातेनि,
देसवा कऽ पासा पलटि जात।
अँखिया के एक इसारा से,
देसवा कऽ नकसा सलटि जात ॥

धौंसा बोलल, धरती डोललि,
रन बन धन उपवन काँपि गयल।
कहि उठलिन मेम फिरंगिन कऽ,
तूफान चलल, अंधड़ आयल ॥

मारल गा चोट नगाड़ा पर,
डंका रन कऽ बाजइं लागल।
सुनि-सुनि अवाज रन बउरन कऽ,
मोछन पर ताव पड़इ लागल ॥

सब जय भारत कऽ जय बोलईं,
सब देस-जाति कऽ जय बोलइं।
फेरि एक साथ मिलि के जोधा,
हर हर हर हर बम-बम बोलइं ॥

जय बोलइं कुअँर बहादुर कऽ,
धरती मइया कऽ जय बोलइं।
बजरंग बली ! या अली !! विजय,
जय जय जय जय जय बोलइं ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहिली तुरही 'राणा कऽ जय,
दुसरी बोलिल 'जय सिवा धीर।
तोसरी तुरही कसि के बोलिल,
जय कुँअर बीर ! जय कुँअर बीर ।।

ई सेनापति हर किसुन सिंह,
मस्ती में दुलकी घोड़ चलइ।
तरुआरि खींचि करखा बोलइँ,
सबके रग-रग में जोस भरइँ ।।

"मति रुकऽ बीर ! बढ़ि चलऽ वीर !
चढ़ि चलऽ बीर ! लड़ि मरऽ बीर !
समराज बिगारत चलऽ बीर !
सिंहासन टारत चलऽ बीर !

तूँ अपने पुरखा के समान,
सागर उठाइ के पी डारऽ।
बलिबेदी जोहति बा तोहके,
टटका माथे कऽ दान करऽ ।।

तूँ आगि लगावऽ दुनियाँ में,
पानी बरसावऽ दुनियाँ में ।।
चाहे जे के छोड़ऽ चाहे जेहि,
मारि लड़ावऽ दुनियाँ में" ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

बाबू कऽ सेना बढ़लि एहर,
दानापुर ओहर चढल आरा।
सब वीर सिपाही पहुँचि तहाँ,
बन्दिन कऽ खोलि दिहेंनि कारा।।

जइसे पारस पाथर छुअले से,
लोहा सोना होइ जाला।
तइसइ बन्दी सैनिक भइलन,
हथकड़ी फेंकि लिहलेनि भाला।।

लुटल खजाना, जेलखाना, मालखाना और
आरा हाउस के चहुँ ओर घेरा परलें।
परलें सियापा अंगरेजन के दल बीच,
कपतान डनवर सुनि-सुनि जरलें।।

जरलें गुमान-मान गोरन कऽ रन-बन,
थर-थर सासन कऽ आसन थहरलें।
हरलें सिंहासन तबइ कि जब अरि धुज,
फर-फर फटि-फटि भूइं में लथरलें।।

झपसलि आवति बा अन्हियरिया,
करिया-करिया बदरी अकास।
रहि-रहि के कतउँ चमकि जाला,
बिजुरी अस तेगा अउ गड़ास।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झंझा बोलति बा झाइं-झाइं,
उलटइ कछार कहि साइं-साइं।
रतिया झंझायल झाइं-झाइं,
चुप बा गोलिन कऽ ठाइं-ठाइं।

गांगी नदिया इतिराइलि बा,
मातलि बा चढ़लि जवानी बा।
लहराइ लहरि तरुआरि मतिन[1],
झूमति बा उमड़ल पानी बा।

मुड़ि धारा कतहूँ हर-हराइ,
बोलइ करार गिरि झम्म-झम्म।
जइसे केउ भोजपुरी जोधा,
गरजत बा हर-हर बम्म-बम्म।

ऊजर फेनवां करिया लागइ,
पनियां उपरां पौंरत बाटइ।
जइसे फेंकल बा गोरन कऽ,
ई टोपी गोल बहुत बाटइ।

झोंका झंझा कऽ लागत बा,
पेंड़न कऽ झरिया झूमति बा।
गावत कुचकुचवा[2] बा कजरी,
की भूत हिंडोला झूलत बा।

१. तरह २. उल्लू।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नागिन अस सरकति बा रतिया,
ना सूझइ हाथ पसारे पर।
निहचिंत होइ बइठल बाटेनि,
पानी क जन्तु करारे पर॥

करिखा बरसत बाटइ सगरउँ[1]
ना टिमटिमात बाटइ दीया।
सूरुज देवता बिसवत-बिसवत,
रोपललन अन्हियरिया कऽ बीया॥

लेइके सेना अइसे बेला में,
डनवर[2] आजु चलल बाटइ।
अगवानइं जानइं एनहून के,
किसमत में काउ लिखल बाटइ॥

तइं गोड़ सम्हरि के धरु डनवर,
इ धरती हउवै बीरन कऽ।
कड़ियल दाना, कड़ियल पानी,
कड़ियल लोहा रणबीरन कऽ॥

एहँ कुँअर सिंह कऽ तेज तपल,
डनवर तूँ ओहमें जरि जइबऽ।
लसिया कऽ गंध लगे नाहीं,
संजोगइ से लौटइ पइबऽ॥

१- सब जगह २- अंग्रेज कप्तान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सेरन की मानिन[1] के आगले—
बगले मति फेंरा नावऽ तूँ।
एक त ओकरे बन में अईलऽ,
दुसरे मति खोदि जगावऽ तू।।

खरकत पातन कऽ सुनि अवाज,
जे दहिने से होला बायें।
ऊ भोजपुरी बीरन के लोहन—
कऽ मोर्चा का लेई पाये?

गिनि-गिनि के परग परत बाटइ,
धरती कऽ भार बढ़त बाटइ।
आहट लेवइ वाला लेईगा,
रतिया आगे सरकत बाटइ।।

बाबू कहलन हरकिसुन सिंह से,
भइया! खबरदार होइ जा।
बैरो नियरायल आवत बा,
रचि व्यूह पैतरा पर डटि जा।।

सब सजग रहइ अपने पहरा,
लऽ अब मोर्चा नियरायल बा।
आपन-आपन तेगा चूमऽ,
बोहनो कऽ बेला आयल बा।।

---

१. माद।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चढ़ि गयेनि जवान डाँकि फानि डार पर,
चढ़ि गइनि मियान लपलपात धार पर।
पेंड़ हरहराइ भूत भो डेरात बा,
डाकिनी - पिसाचिनी परात जात बा ॥

सत्रु कऽ मसाल तऽ कतउँ देखाइ ना,
दूत कऽ अवाज भी कतउँ सुनाइ ना।
आसमान से नखत्त टूटि गयल बा,
अंधकार में अँजोर फूटि गयल बा ॥

डार पर चढ़ल कुअँर बिचार में बुड़ल,
ऊभि साँस लेइं कि सिकार का भयल ?
दूत अहिटावत बा कि पात खर खरान।
सत्रु दल बढ़ल कि तेज वायु सनसनान ॥

मन कहई कि आउ दूत देर ना लगाउ,
बाँह फरफराइ मोर तें सगुन जनाउ।
दूत बस एही समय उहाँ पहुँचि गयल,
एक पेंड़ के तरे मसाल बरि गयल ॥

कब अँजोर मा, मसाल कब बरल-बुझल,
चारि आँखि छोड़ि पाँच देखि ना सकल ॥
डार छोड़ि बीर कुँअर झम्म से कुदेनि,
गोड़ कऽ धमाक पाइ पेंड़ हिलि गयेनि ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बात गुनगुनाइ गइल दूत फुसफुसात[1],
डार-डार, पात-पात बीर कनमनात[2]।
बाढ़ि गयल अन्हार सत्रु गयल पास आइ,
जानि गयेनि बीच बाग में गयल समाइ ॥

अद्धराति करत रहलि सांइ सांइ सांइ,
चलि पड़लि बनूक दनदनाइ धाँइ-धांइ।
पेंड़-पेंड़ से घिरल रहइं कहाँ पराइं ?
झरत जाइ गोलिन कऽ बून ना ओराइं[3] ॥

आजु जवानी क पूर जस लिहऽ कमाइ,
बूढ़ सेर कहइ धन्नि भोजपुरी भाइ ॥
पूर घटाटोप रहल राति कऽ अन्हार।
गछिन पात पाइ भयल अउर कार-कार[4] ॥

परत रहलि बादर में बिज्जुरी दरार।
छउँकि[5] छोपि[6] लेइ धाइ-धाइ अंधकार ॥
बाग में अजीब किछु समानि बा बहार।
आम कहाँ गोलिन से झरइ डार-डार ॥

झउँसि-झउँसि जूझ बीच जरइं आगि में,
डनवरी भुनाइ गयल आजु बाग में।
कान में लगल त कान उड़ल बाग में,
नैन में लगल त नैन कढ़ल बाग में ॥

---

१. फुसफुसाना २. चौकन्ना होना ३. समाप्त ४. काला
५. छलांग लगाना ६. ढँकना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घूमि-घूमि घुमरि आइ गिरइं बाग में।
चलि न सकइं लड़खड़ाइ परइं बाग में॥
राह भूलि आइ गयल प्रेत बाग में।
कोटि काल बसल कुरूखेत बाग में॥

देहँ में लगइ त कतउँ पेंड़ में लगइ।
कौन बचल कोन कि गोलो जहाँ न गइ ?
पाइ के गली बचाइ जान केउ भगइं।
आसमान से बनूक धाइं से दगइं॥

बाग में लहुलुहान राति भरि मचल।
चोट खाइ-खाइ सत्रु राति भरि मरल॥
बस एही तरह बनूक राति भरि दगलि।
बदलि गइल राति, राति-राति भरि जगलि॥

हो गइल निहाल नदी हँसलि राति भरि।
पेंड़ से दहकि अँगार झरल राति भरि॥
पाइ के सनेस बीर भोर तब चलल।
आसमान में लगल अन्हार थकि रहल॥

गुच्छ-गुच्छ तारन कऽ कम भँयल बजार।
परग-परग भूइं भयल सत्रु के पहार॥
"डार छोड़ि कूदि परऽ फऊज आदि दऽ"।
किसुन कहइं "तू बिजय निसान गाड़ि दऽ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हे जवान ! आइ जो जवान !! आइ जो।
माथ दे चढ़ाइ, देह तइं कटाइ जो।।
देस कऽ पुकार ई गउ गुहार हउ।
जाइ न पावइ कि लाज ई तोहार हउ।।

तू कूदऽ अंगार चोख तेज धार पर।
आगि के पहार, लोह के कछार पर।।
राह में लवरि उठइ तऽ रौंदि के बढ़ऽ।
राह में लहरि उठइ त छउँकि के चढ़ऽ।।

जउ बिछी संगीन होइ, नोक मोड़ि दऽ।
भाई गोड़ दरि-दरि नोक तोड़ि दऽ।।
खून दऽ बहाइ देस भूइं के बदे।
देह मिललि भाइ देस भूइं के बदे।।

पाउँ पिछाड़ो न परइ रे जवान तोर।
आजु पहिल जीत से पवित्र होइ भोर।।
माई की कोखि कऽ किरिया जवान रे।
पुरुखन की मोछि कऽ किरिया जवान रे।।

भोजपुरी नाउँ कऽ किरिया जवान रे।
भोजपुरी गाउँ कऽ किरिया जवान रे।।
तेग कऽ किरिया तोहइं तरुआरि कऽ किरिया।
भाइ कुँअर सिंह से सरदार कऽ किरिया।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोह लपलपात रहइ भाइ पइठि जो।
पैंतरा बचाइ मारि-मारि बइठि जो।।
ई न दालि-भात कऽ भोजन जवान रे।
ई न साग-पात कऽ भोजन जवान रे।।

जूझ भूइं हउ जवान दौड़ि आइ जो।
भूख लागि होइ तऽ लोहा चबाइ जो।।
किरिच नोक तोड़ि-तोड़ि भाइ खाइ जो।
चलि पड़इ बनूक तऽ गोली पचाइ जो।।

एहर तोर, ओहर बिलाइत कऽ रवानो।
देखु मोर भाइ परइ कम न जवानो।।
सात पुस्त होइ उरिन आजु नून से।
हाथ गोड़ धोइ ले गोरन के खून से।।

जोस ना घटइ जवान तें रहे कड़ा।
होस ना हटइ जवान तें रहे अड़ा।।
भोर आई रहल यार डोलिगा मलय।
मारि-मारि सत्रु के मचाइ दऽ प्रलय।।

लोह लगल बा त तनी प्रेम से लड़ऽ।
एक दिन मरइ के बा तऽ देस पर मरऽ।।
जानि लेइ मानि लेइ बाग धनुपुरा[1]।
भोजपुरी पूत इहां झूमि के लड़ा"।।

१. स्थान का नाम।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुअंर सिंह

ऊ रहल दौंगरा[1] कऽ बेला,
लेइ सूघर भोर असाढ़ चढ़ल।
बिजुरी कटार लेइ कोरा में,
बादर जवान नभ में गरजल।।

घहराइ कतउं, भहराइ कतउं,
अरराइ कतउं चिरी[2] चर्र-चर्र
थिर होई अकास में कतउं बदरवा,
सुनत रहल बम-बम, हर-हर।।

बदरी पुछलेसि बादर से जब,
पहिले पानी धरती नहान[3]।
"परि गयल दौंगरा खेतवा में,
काहे न आइ अब तक किसान ?"

बादर बोलल "एहि साल भला
पगली ! फुरसत के के बाटइ।
सब निकलल बा खंजर लेइ,
भारत माता कऽ बेड़ी काटइ।।

कइ-कइ नहान जल से भारत कऽ,
रन भुइयां अकुलायलि बा।
अब एके पानी कऽ नाहीं—
लोहू क पियसिया लागलि बा।।

१. पहला पानी २. बिजली ३. नहाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोहूलुहान धरती में बिरवा—
आजादी बोवल जाये"।
पुरखन के माथे कऽ कलंक—
रन खेतन में धोवल जाये ।।

बदरी कहलेसि "हमहन लड़वइया—
पूतन पर छाया करबइ।
घायल के लगि पियासि तऽ,
मोहवां में बुन्दी बनि चू परबइ" ।।

कहलेसि बयार "रन खेतन में—
हम बीरन पर पंखा हाँकब।
ये तखत हिलइहैं बिल्लाइत,
हम बन पहाड़ सागर डाँकब" ।।

जुटलन जवान रन खेतन में,
बा बन्हल मुरेरा माथे में।
"हम खून पियब, लोहू चुहुँकब,
बोललि बा दुर्गा हाथे में ।।

दूनउँ सेना मिलि एक भइल,
मोर्चा लागल देखत-देखत।
भोजपुरिया अरर मारि धावइं,
रन खेतवा में खेलत-खेलत ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जस-जस लोहू चूवइ छाती से,
रन बउरन के रोस बढ़इ।
आगे मुहँ धावत चलइं बीर,
पाछे वालन के जोस बढ़इ॥

तरुआरिन कऽ मोर्चा लागल,
दूनउँ दल से बिजुरी चमकलि।
सन् सन् सन् कइ नागिनि लपकलि
झरना फूटल, छाती टूटलि॥

जर-जर पंजर, तर-तर बखतर,
जेकर बा उहउ लड़त बाटइ।
दूना उछाह कइले मन में,
भोजपुरिया आजु चढ़त बाटइ॥

केउ अगले भाला भोंकत बा,
केउ बगले भाला भोंकत बा।
केउ साँग लपालप लपकावइ,
केउ करखा बोली बोलत बा॥

"ओह गउवाँ में लागइ अगिया,
जहँ होइं न लड़वइया जवान।
ऊ कोखि सून भगवान करइं,
नउ मास जहाँ कायर समान।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जौनी तिरिया कऽ मंसेधू—
खाली सेजिया कऽ बा सिंगार।
यमराज आजु लूटइं ओके,
ओसे धरती कऽ बढ़ल भार॥

खइले-पियले न जोस उभरल,
ओह दाना-पानी के लानत।
इतिहासे दाग लगावइ जे,
अइसे सेनानी के लानत॥

जेकर जोड़ा जीतइ भाई,
ओकरी मरदानी के लानत।
जे साथ न देइ आजु बाबू कऽ,
ओकरी ज्वानी के लानत॥

लेइके घोड़ा आपल बाबू,
मोरचा-मोरचा घूमत बाटेनि।
सब ओर इहइ देखलें जवान—
काटत बाटेनि, छाँटत बाटेनि॥

"तू कसर न राखऽ ए भाई,
जोड़ा आपन-आपन बीछऽ।
सामने सिकार खड़ा बाटइ,
चाहे भारऽ चाहे नीछऽ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अब एक-एक पर एक टुटऽ,
पैंतरा देखावऽ हे जवान।
खींचऽ मियान से तरुअरिया,
लप-लप लपकावऽ हे जवान।

कहले रहलऽ 'मुण्डन से भुइयाँ—
पाटब' पाटऽ हे जवान।
कहले रहलऽ 'माई कऽ बेड़ी,
काटब' काटऽ हे जवान॥

अपनी-अपनी तरुआरी कऽ
भाई अब प्यास बुझावऽ तू।
बहियाँ में केतना जोर भरल,
बैरी के आजु देखावऽ तू॥

गोरउ का जनिहइं आजु इहाँ,
रन बउरन से पाला परलें।
जेके जानल गाजर-मूली,
हमरे जियरा क काल बनलें॥

एकइ माटी, पानी, आगी,
जौने से ईंट बनलि बाटइ।
पर एक ईंट नेई में बा,
अउ एक अकास चढ़लि बाटई॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमहन वह नेईं क पथरा,
जौने पर महल खड़ा होई।
भाई! एतना मजबूत बनऽ,
अब ढाहि न सकइ किला कोई।।

पहिला धक्का अइसन मारऽ,
गोरा सिंहासन उलटि जाइ।
दूसर धक्का हनि के मारऽ,
भइया इतिहसवा पलटि जाइ।।

भोजपुरिये गावइं कौनउँ—
मोर्चा पर नाहीं केउ कायर बा।
दिन जवन जोहाई होत रहल,
अब ऊ सुभ घड़िया आयल बा।।

रन खेतन में तड़पइं जवान,
बा खून सवार कपारे पर।
किछु अपने मन से बढ़इं अउर,
किछु बाबू के ललकारे पर।

जे के नैनन से घूरि देइं,
बस ओके भइलें सन्निपात।
जेकरे ऊपर हथियार परल,
लागल भइलें जस वज्रपात।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हुंकारि जेहर धावइं जवान,
ओह ओर जना आयल परलय।
ललकारि जेहर धावइं जवान,
बरम्हा ओहि लिखि दिहेनि छाप।।

सच्चा जब पार लगइ अउ--
बैरी सहि न सकइ धइ लेइ भूमि।
तब रन बाँकुरा उछाह भरल,
आपन तरुअरिया लेई चूमि।।

अपने भाइन क जोम देखि,
दादा कऽ गज भरि भइ छाती।
अउ भोजपुरी भुइयाँ जनलेसि—
अजुवइ अपने के अहिवाती।।

जब तकि गोरा सोचति बाटइ,
रन बउरा से पाला परलें।
तबले छाती में हूल मारि,
झट भोजपुरी भाला धँसले।।

पतवा-पतवा डरिया - डरिया,
पेड़वा-पेड़वा सोचत बाटेन।
हमहन कौने कामे अउबै,
भगवान कहाँ बइठल बाटेन।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जमराज ! आज ु द मउति हमइं,
बैरिन पर हम भहराइ परी।
आन्ही आवइ ओझवइ डरिया,
हम सब रन खेतवा में घ ुमरी ॥

हमरे अँगना में जूझ मचल,
कइसे हाथे पर धरी हाथ।
सोभा हमके नाहीं देला,
हझहूँ बढ़ितोरित सत्रु माथ ॥

जौने पड़वन की डरिया तर—
लोहूलुहान नाहीं माचल।
जवने गांछन की छहियां में,
घायल जवान न सोहतायल ॥

टहनी जौने पेड़वा क हॅकलस—
बीरन पर पंरवा नाहीं।
माली नहॅकइ सिंचलस ओके,
जमतइ काहे सूखल नाहीं।

बॅसवा कऽ भ.गिया बा अपार,
पलई-पालव सोमत बाटेन।
जौने में लागल बा भाला,
लेइ जोधा रन खेलत बाटेन ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केउ गोरा गहिरो चोट खाइ,
अपने मन में सोचत बाटइ।
अपने देसवा में ना जाई—
माटो परदेस लिखल बाटइ।।

ईसा-मसीह बकसऽ परान,
कौने गाढ़े में आई फँसे।
हम पाउँ उठाइति ना जउ जानिति—
एहि दल-दल में गोड़ धसे।।

साहस कइ-कइ मोर्चा आड़इं,
हिम्मत कइ-कइ लोहा ओजइं।
दादा कऽ भाला होइ सचेत,
भिड़िया में डनवर के खोजइ।।

मिलतइ मरलेनि हनि लोहा,
डनवर को छाती में लागल।।
सब खेला खतम भइल रन में--
जे बचल-खुचल भागइ लागल।।

जब सारी दुनियाँ जागि-जागि,
धरती पर गोड़वा धरत रहल।
तब भोजपुरो जोधा रन में,
लोहन से दतुइनि करत रहल।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आधा हजार में आधा सइ,
भगलन बाकी सब बिछलि लास ।
गलगुच्छा पर देइके मुर्रा,
दादा आराम से लिहेनि सांस ॥

अइसे तऽ मोर सदा आवइ,
पर आजु भयल दुसरइ बिहान ।
ओड़न के जगहे पातन पर,
बस लाल-लाल छींटा देखान ॥

कोअँर पातन पर लोहुन कऽ
ललकी बुनियां सोहत बाटइ ।
अस लगल गदोरिन पर जइसे,
दुलही मेहदी रचले बाटइ ॥

जौने पेड़न के मालिक,
खादी पानी से सेवत रहले ।
तौनो बगिया कऽ कुलि धरती,
लोहुन से जोधा भरि देहलें ॥

भुइं पटलि लहासन से बाटइ,
अइसन लागत बा रनखेतवा ।
जस रुप धनुपरा कऽ धइके,
जनमल कुरुखेतवा कऽ बेटवा ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सब रुकल भले एहि धरती पर—
ना रुकल कऽ पहिया बा।
किछु दिन बितले फेरि जूझ लगल,
फेरि झूमल बीर सिपहिया बा।।

ई बाटइ बोबीगंज जहाँ,
मातल जवान बइठल बाटेंन।।
अपनी बहियेंन पर बा भरोस,
सब जोस भरल अइठल बाटेंन।।

बा भागि उदय एहि धरती कऽ,
जहँ बीरन कऽ लोहू टपके।
बा भागि उदय एहँ के अकास कऽ,
जहँ तेगा-भाला चमके।।

दाना-पानी कऽ ख्याल न बा,
जुझियइ कऽ होत गुराउर बा।
कइसे बेड़ी टूटइ माई कऽ,
एही बदे सब बाउर बा।।

केउ पूछत बा अपने साथी से,
तूँ कइठे गोरा मरबऽ?
गोरन के लोहू में चुभोइ,
कइ बेरी तरुअरिया तरबऽ?।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोछा मुरेरि केउ कहइ कि तंब की,
भइया, खूब मजा आयल।
सब वार निसाना पर बइठल,
ना एकउ तेगा गा बायल॥

एतने में बाबू आ गइलन,
देखतइ सब जय जयकार किहेन।
जय जय भारत जय भोजपूर,
जय कुअँर सिंह ललकारि उठेन।

फेरि खड़ी-खड़ा दरबार लगल,
छोटका-बड़का सबु जुटि गइलन।
आजादी क नइया खेवइ वाले,
माझी-मलाह अइलन॥

सब जन जलपान करत रहलन,
तब तक डंका पर चोट परल।
दोना गिरि गयल मिठाइन कऽ,
पजा तरुआरिन पर पसरल॥

हथवा उठाइ कहलन बाबू,
भाइन से नाहीं उरिन सेब।
जइसइ वादा कइले रहलऽ
जुझिया में तइसइ जमल रोब॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बा जेंकरे कुल में जवन लिखल,
तेकरे कुल में तौनइं होला।
सिहन-बाधन के छौनन के,
मारइ-काटइ के सिखवऽला॥

बाँसन की कोठि बाँस होइं,
तस भोजपुरी के भोजपुरी।
जब जनम भयल तब्बई किस्मत,
में लिखले विधिना तेग-छुरी"॥

एक दूत तबइ आके कहलस,
"गोला लेइ आयर आवत बा।
खलबली मचलि बा गावन में,
बूढ़न - बच्चन के काटत बा॥

कँहरत बाटेन सब चोट खाइ,
दादा डालि लागइ गुहार।
अललात हयेन बूढ़ा-बच्चा,
बस लेइ-लेइ के नउवाँ तोहार॥

बाबू कऽ बहियां जजकि उठलि,
जइसे केउ नगवा खोदले बा।
आँखिन से कढ़इ मसाल लगल,
जनु केहू अंगार कुरेदले बा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जंगल में सेर जगल फेरि बा,
हुंकार मारि के गरजल बा।
धरती अकास क फटल कान,
बुबुकारि बिजुरिया तड़पलि बा ॥

तरुअरिया कढ़ि गइली मियान से,
लप-लप कइ अस लपकलि बा।
जस करिया बादर फाटि परल,
चर-चर कइ चिर्री चमकलि बा ॥

बाबू कहलन "हिम्मत कइ के—
अपने से आइ गयल दुस्मन।
भाई! सनातनो खातिर अब,
आगे से पहुँचि करब हमहन ॥

मुँह में तरुअरिया चाँपि देउ,
गजराज गंज में घेरि लेउ।
आगे बढ़ि अगवानी कइ के,
बैरी कऽ मोहड़ा फेरि देउ,"

"हाँ चापि देब, हाँ फेरि देब"
कहि-कहि के गरजि उठेनि जवान,
ललकार सुनत रनधीरन कऽ,
मनही मन बिहँसल आसमान ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"आगे मोर्चा हमही लेबई,
दादा तूं नउवां लिखऽ मोर"।
"पहिली पाँती में हम रहबइ"
बोलल केतनन कऽ पोर-पोर ॥

"नहवाँ गोला - बरूद आवइ,
तहँ छाती मोर अड़ाई देउ।
जहँ किरिच संगीनन कऽ मोर्चा,
तहँ दादा हमइं चढ़ाइ देउ ॥

ई कायर कऽ खेती नाहीं,
जेके जं चाहइ काटि लेइ।
ई बिधवा कऽ धरती नाहीं,
जे के जे चाहइ बाँटि लेइ ॥

ई भुइयाँ हउ रन घोरन कऽ,
रन में होये संग्राम घोर।
एके राखइ खातिर कटिहइं,
लसिया औ देहँ कऽ पोर-पोर ॥

देखत-देखत भोजपुरियन कऽ,
पौरुष रन में झूमइ लागल।
अइसन किछु जय जयकार भयल,
गजराज गंज गूंजइ लागल ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देहियां तोरइं मोछा पूरइं,
तरुअरिया भाला लप-लप-लप ।
दादा बछेड़ पर चढ़ि गइलन,
टपिया ल बोलऽप टप टप टप ॥

घोड़ा जोड़ा होइगा बयार कऽ,
कोड़ा अस बा तेग तनल।
अपनी माई कऽ बेड़ो काटइ,
जोस भरल बेटवा दौड़ल ॥

जस टूटल लूक अकासे में,
नभ चीरत-फारत आवत बा।
फर फर फर पुंछिया फर फरानि,
पीछे से लीक बनावत बा ॥

बाकी भोजपुरियन कऽ बछंड़,
बस ओही लोक पर धाइ चले ।
गोरन कऽ सोरि उपरि जाये,
सब अस मन में बड़बड़ाइ चले ॥

गरदा उड़ि के लागल अकास,
सूरज कऽ जोति छिपाये बा ।
की भादउँ के करिया बदरा कऽ
केउ चदरा तनवाये बा ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किछु आगे बढ़ि के टाप मजल,
लट्टू अस घोड़ा नाचि गयल ।
पह पह पह पह पखनी बोलल,
हिरना बन बीच कुलाँचि गयल ।

बँटि गइल फउज दुइ टोली में,
आधी आगे गइ धावत की ।
आधी से कहलन बाबू 'तूँ'—
मरिह बैरी दल आवत की ।

फेरि समर भूमि में जाइ डटे,
भोजपुरिया बीर जवान सबइ ।
आपन सेना लेइके पहिलइं,
घुमरत आयर कप्तान रहइं ॥

दहकत बरूद बा ओहर अजर,
तेगा-तरुआरि एहर बाटइ ।
जरि-जरि के बीर गिरइ लगलें,
पर नाहीं जोस घटत बाटइ ॥

"भाई आगे बढ़ि के मारऽ,
गोला - बरूद बेकार करऽ ।
काटऽ कटि जा, मारऽ मारे जा,
संहार करऽ संहार करऽ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तोपन के मुँह रंजक लागल,
अंगरा फूटइं छितिराइ जाइं।
ज्वाला मुखियन के मोहड़ा पर,
लावा सैनिक उधिराइ जाइं॥

तोपन कऽ गोला फूटि-फूटि,
रन भुइयाँ में दहकत बाटइ।
भोजपुरिया अपने लोहू से,
अंगरा के राख करत बाटइ॥

धूआ-धूआं से रगड़ि जाइं,
जस अन्हियरिया से अन्हियरिया।
बदरा अरुझल बा बदरा से,
जनु लड़इ राति करिया-करिया॥

ओहि अंधकार में उड़िके गोला,
दहकि जाइं फेरि बरइ ज्वाल।
जइसे रन चंडी खेलत बा,
जिभिया निकालि के लाल-लाल॥

अंगरा पर धावइं भोजपुरी,
जरि-जरि गोड़न परलें छाला।
बैरी के जगह लवरि पावइं,
केकरे ऊपर मारइं भाला॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रन बीच गड़ासा तौलि-तौलि,
जोधा लचार पछताइ लगल।
लेकिन मरते दम तक देसवा-
की पगिया में ना दाग लगल।

आगी से जूझ करइं मनई,
मनई से जूझ करइ आगी।
केउ कहइ, "तनी बगले हटि जा",
केउ कहइ "यार कइसे भागी"॥

हरकिसुन सिंह कहलेन भाई!
मोर्चा नाहीं बा लोहन कऽ।
खेलवाड़ मचल बा अगिया से,
मोहवां धइ फेरऽ तोपन कऽ॥

तोपिया अगले फहरात बाय,
तोपिया बगले घहरात बाय।
आगे तोपिया, पाछे तोपिया,
गोला उगिलत अररात बाय॥

जे बनवाँ में पियलन अगिया,
ओह कृष्ण चन्द्र कऽ ध्यान करऽ।
अंगरा बरसावत बा बैरी,
बढ़िके दावानल पान करऽ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सेनापति कऽ आज्ञा सुनके,
तोपन की ओर जवान बढइं।
तबले भारी गोला बरसइ,
देखत-देखत जरि खाक बनइं॥

गोला पर गोला आवत बा,
अंगरा पर अंगरा ढावत बा।
धूआँ पर धूआँ घरि लेइ,
बदरा पर बदरा धावत बा॥

फूहेफुह बाढ़लि बा बनास,
जस मातलि झाँसी कऽ रानी।
बोलल तरुआरि नदी से "तोहसे—
ढेर हमइं में बा पानी॥

हमसे तिरेस तूँ का करबू,
हमरा तोहरा में बड़ आतर।
खालइ देखइ भरि के बाटइ,
तन-पाट मोट तोहसे पातर।

छोटे मुँह बात बड़ी मति करु,
मन होइ त गंगा के बोलाइ।
ना अउर कतउँ तोरे आगे,
रन खेतउ में करबइ नियाउ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मरती बेला में गंगा जल,
जेकरे मुहवा में परि जाला।
सब पाप धोइ के तन-मन कऽ
निहचै ते सरगे चलि जाला॥

हमरउ पानी रन में जेकरे—
गरदन के लहरइ आर-पार,
निहचिंत रहइ ते बीर,
खुलल बा आके सरगे कऽ दुआर॥

एहिपार लड़त बाटें नि जोधा,
ओहि पार लड़ाई तब मानऽ।
पानी पर काऽ इ तिरइलू ललकी—
धार बहाई तब मानऽ"॥

बाबू कहलन "भाई सब जान—
पुलिया से नदिया पार करऽ।
ओहि पर युद्ध कऽ व्यूह रचऽ,
बैरी कऽ बल बेकार करऽ॥

नदिया एहि पार रहलि सेना,
बढ़िके मझधार गइल सेना।
पुलिया जल में गिराइ, चकमा—
देइके ओहि पार गइल सेना॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हथवा मलि के पछतात रहल—
अपने मन में जोधा आयर।
तबले मिलि गयल विभीषण कऽ,
सन्तान एक भारी कायर॥

जयचन्द, जाफरन के कारन,
लुटि गयल आजादी कऽ डोला।
घर के भदिया के कारन,
सब्द वेधिया भी आन्हर होला॥

बोलल आयर से आगे बढ़ि,
पुलिया रेलवइ बनलि बाटइ।
ओकरे ओहि पार कुँअर सिंह कऽ,
सेना बन में बइठलि बाटइ॥

एतना सुनतइ आयर प्रसन्न,
झट से सेना पुल पार भइल।
मोर्चा फेरि लागल बाबू कऽ,
झूमल फेरि भोजपुरो रोवइल॥

एक ओर बहुत बाटइ बनाँस,
तिन तरफा बैरी कऽ डंका।
बीचइ बन में बाबू क दल,
जइसे सागर में बा लंका॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाबू कहलन छिट-फुट होइके,
पतरा समुझि के लड़ऽ ग्राजु।
जंगल में दंगल मचइ ग्राजु,
जंगल में मंगल मचइ ग्राजु॥

ऊपर से बरसत बा बादर,
ग्रोकरे नीचे लोहा बरसइ।
सैना चउतरफा बिखरि गइल,
गोलो बरसइ, गोला बरसइ॥

बाबू कऽ मोर्चा जेहर, ग्रोहर-
धरती के तन ललको सारी।
ग्रइसन लागल जस ग्राँगन में,
उतरलि गवने कऽ बहुग्रारी॥

तुलसी बाबू के ग्रगल रहई,
ग्रउ बगल नर्मदेश्वर प्रसाद।
ई दूनउँ राजा क रक्षक,
रन में लोहन क चखई स्वाद॥

ग्रामने - सामने बा मोर्चा,
तुलसी ग्रागे बढ़िके गरजई।
संझा बेरा भइले मिललऽ,
ग्रावऽ फेरि दू-दू हाथ बजइ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरे अइलऽ पारे अइलऽ,
नद्दी अइलऽ नारे अइलऽ।
सम्हरऽ सम्महऽ अब भोजपुरी—
तरुआरिन के धारे अइलऽ ।।

जोधा कऽ हाथ उठल बाटइ,
ऊपर तरुआरि तनलि बाटई।
जस रोष भरल बाटेंन संकर,
गंगा अवतरण होत बाटइ ।।

सुरसरि कऽ धारा मति रोकऽ,
तूँ हरहराइ के आवइ दऽ।
देसवा में जेतना भयल पाप,
पावन जल बीच बहावइ दऽ ।।

मरलैं तरुआरिया कच कचाइ,
तुरतइ धड़ से सिर छटकि गयल।
तन गिरल खेत में टामी कऽ,
मुड़वा झाड़ी में अँटकि गयल ।।

तबले गोली अइसन लागलि,
तुलसी प्रसाद के माथे में।
झर झर झर झर झरना फूटल,
तरुआरि लचकि गइ हाथे में ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलि चढ़त देखि तुलसी के,
बाबू के तन लोहू खउलल बा।
बिज्झावन[1] में लहरा देइके,
अब बूढ़ सेर फेरि तड़पल बा।।

बूढ़ी तरुआरि भले बाटइ,
पर बइठइ ठीक निशाना पर।
धनि बीर जवन पहरा देला,
देसवा के दाना-दाना पर।।

विधि रुठई या दादा रिसाईं,
दूनउँ में अन्तर ना बाटइ।
चाहे जे कोप करइ बाकी,
परिणाम बनल एकइ बाटइ।।

गोरा के गरदन पर बाबू कऽ,
देहले तेग दरेरा बा।
उड़ि गयल पखेरू पिंजरा से,
माली कटले जनु केरा बा।।

सँझलौका[2] होत रहल लेकिन,
अबहीं ले तोपिया गरजत बा।
आगी से केतना जूझ होइ,
चौतरफा जोधा तरसत बा।।

---

१. घना जंगल २. गोधुली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मदान आजु मरलस आयर,
पर दादा हिम्मत ना हरलन।
तुलसी कऽ लसिया लादि फानि के,
गझिन बनालि में चललन॥

लाल बछेड़ चला बन से,
रबि कऽ रथ जइसे ढ़इ बदरा से।
लोहू रंगी तरुआरि तनी तन,
रोब क तेज झरइ चेहरा से॥

पच्छिम में रथ हाँकत-झाँकत,
नीचे चले दिननाथ बना से।
बाबू के देखत सोच समाइल,
दूसर सूरज अइलें कहाँ से॥

ठाकुर लोहू-लुहान लखाई,
चढ़ा घोड़वा बढलें बनखारी[१]।
खून बुड़ी लसिया लटकइ,
लटकउलेन जइसे अबीर क झोरी॥

हाथ कटार बनी पिचकारी,
चुवइ लोहुआ झरलीं जनु रोरी।
लाल रंगी देहियाँ सगरी जस,
अइलन जूझ से खेलि के होरी॥

---

१. वन-पथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छूटल न लोहन में लगल रकत लाल,
तबले दुलौर बीच जुटल दिलेर बा।
ओहर से आयर चढ़ल फेरि फौज लेइ,
एहर से बढल कुअँर सिंह सेर बा॥
ढेर हथियार बा फिरंगिन के पास पर,
तब भी डटल बड़ पनियाँ करेर बा।
गोरा भोजपुरिन से, भोजपुरी गोरन से,
झूमि-झूमि रन बन खेलत अहेर बा॥

लोहन से लोह कटइँ, काँटन से काँट कढ़इँ,
पुतरी कऽ चोट खाइ घायल पुतरिया।
बेंट जब काठ कऽ टँगारिन में लगि जाले,
काटि देले काठन कऽ मोटि डरिया॥
जतिया कऽ बैरो बनि जाति वड़ दुख देइ,
कूकुर के देखतइ भूकेलि कुकुरिया।
गोरन की ओर से लड़ल डुमराँव राज,
हाइ भोजपुरिया के खाइ भोजपुरिया॥

डुमरावँ पति के कुअँर सिंह देखि कहइँ,
कोने में लुकाइ मुँह करिखा लगाइ लऽ।
फेरि ललकारें देखऽ देखऽ हो अमर सिंह,
भागि जाये, मन कैऽ अगिनियाँ बुताइ लऽ॥
जबले विभीषण कऽ बस जयचन्द रहे,
कल से रहे न देस बात गठियाइ लऽ।
गोरन के काइ अस चोरि रचि ओर बढ़ि,
पपिया के बरछा के नोक पे उठाइ लऽ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुग्रँर सिंह

सुनि ललकार सरकार कऽ ग्रसरदार,
सरदार ग्रमर समर बीच बढ़लें।
रोबदार घोड़ ग्रसवारु देस रखवार,
चूमि तेज धार तलवार वार करलें।
हटल मतंग छोड़ि जंग ग्रंग भग होइ,
पीलवान गिरल नरेस खूब बचलें।
ग्रायर कहइ कि ग्रब 'फ.यर' बढ़ाइ देउ,
कुग्रँर कऽ भाइ त गजब बड़ करलें ॥

एक हाथ ढाल ग्रौर दूसरे में तरुग्रारि,
दांतन से दबले लगाम बीर बढलें।
घोड़वा नचल रन कोहँरा के चाक ग्रस,
ग्रमर ग्रकेल भूइँ मुड़न से पटलें।
हँकले से दून ग्रउ पछरले से चउगुन,
चढ़लें बहादुर न दाग पाइ दबलें।
ग्रायर कहइ कि ग्रब कायर बनइ के पड़े,
कुग्रँर कऽ भाइ त गजब बड़ करलें ॥

रोबइल देहँ तेज भरल भभूक लाल,
बैरिन के बीच में लवरि ग्रस बरलें।
कोटि-कोटि किरिन कऽ गरमी कटार देइ
केतने फिरंगी बस छुग्रले से जरलें ॥
घोड़ ग्रसवार पयदल मारि दल मारि,
पल मारि तेगन के घाट पऽ उतरलें।
ग्रायर कहइ क्रिटेन 'ग्रायर' करइ के पड़े,
कुग्रँर कऽ भाइ तऽ गजब बड़ करलें ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धनि भोजपुर धनि भागि एहि धरती कऽ
लिखलेन विधि अस पूत तकदीर में।
आयल बा कोर मन बढलबा जोर तन,
जगल बा जोस रजपुतही सरोर में।
कबउँ त अमर किरपान बनि जाइँ कबउँ,
किरपान बदलइ अमर सरीर में।
दूनउँ एक दूसरे से तेज रन नाचि रहे,
लागइ न फरक तरुआरि अउर बीर में।।

कइलैं कहँर बीर अमर अकेल चढ़ि,
बढ़ि जाला जइसे अहेरिया अखेट में।
वार पर वार परइ धार पर धार गिरइ,
चोट खाइ-खाइ उठइँ चेत में अचेत में ।।
समर में लप - लप लोह लपकल अस,
टिसुना[१] प टिसुना नचलि जस रेत में।
घोड़ नाचइ, घोड़वा के संग असवार नाचइ,
हथवा कटार नाचइ, मूड़ नाचई खेत में।।

पटरी न रहल अमर हर किसुन में,
अलग-बिलग से लड़त रजपूत बा।
राज डुमराँव अउर सिख 'रेजोमेंट' संग,
लेहले बिदेसियाँ भयल मजबूत बा।।
उखड़त पाँव देखि अपने सिपाहिन कऽ,
हाथ मलि झंकत कुअँर रजपूत बा।
तबले अजादी क सपन सच होइहैं न,
जबले कि घरवा में बैर अउर फूट बा।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुअँर सिंह

राजन क राज सिरताजन क ताज गैल,
गयल सुराज राजनीति चलि गइली।
रोजी रोजगार चलि गयल पराये हाथ,
प्रीति रीति संग सुख संपति भी गइली।।
दुरगति अबहीं न जाने कौन कौन होई,
रहि का गइल जब लाज चलि गइली।
दुखित कुँअर मन सोचलन देसवा से,
सब किछु गयल पै फूट नाहीं गइली।।

जीति के दुलौर रन खेत में निसान हनि,
गढ़ जगदीसपुर आयर बढ़ल बा।
मचल पराह आह मारि गाँव रोवलस,
जनु फेरि नादिर मचवले कतल बा।।
खून देई नून भरइं झूमि जूझ दून करइं,
किलवा के बीच जे पहरुआ बचल बा।
बूढ़ रखवार कहइ कहँर मचाइ देउ,
कहँरा के जियतइ डोलवा फँसल बा।।

झुकलिन पगड़ी अनेक रजवाड़न कऽ,
बाकी जगदीसपुर ताउ से तनल बा।
जवने से कढ़ि-कढ़ि बीर रन झुमलन,
तौने किलवा से आजु लवर कढ़लि बा।।
जरि गैल, बरि गैल इट सेष बचि गैल,
उपरां से सुरुज क जोति उतरलि बा।
पुछलेसि भितिया किरिनियाँ से हँसि-हँसि,
हमरा आ तोहरा में ढेर के तपल बा।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हेर फेर काल कऽ चलत ही रहेला नित,
सुसमय पाइ नीच चलईं बन-ठन के।
एकदिन राजसूय कइलै धरमराज,
एक दिन बंधु सब गइलैं बिजन के।।
छोड़ि जगदीसपुर ठाकुर चलल तस,
देखि अनुमान अस आइ जन-जन के।
फेरि चितउर गढ़ छोड़ि परताप चले,
एक बेरि फेरि राम चललन बन के।।

कइलन बनवास खइलनबन घास,
कुस-कास डासन पर कुकुर निदरिया।
राज-पाट छुटले कऽ दुख ना सतवलस,
सोच मन कइसे कऽ कटिहैं फँसरिया।।
देवता रहेला जस पूजन चढेला तस,
टहल बजावइं दुइ लोहवा कऽ तिरिया।
एक तउ ढाल जौन तकिया बनइ राति,
दूजी तरुआरि सोवइ धइले कमरिया।।

गाउँ-गाउं, नगर-नगर घूमि-घूमि नित,
भरलन कुअँर जी जोस जन-जन में।
बीतलें बरिस आध, पुजलि बा फेरि साध,
फेरि दाह उठलि बा गोरन के मन में।।
फेरि भोजपुर एकसुर होइ गरजल,
गजब कऽ जोस बा भरल बूढ़ तन में।
एक से अनेक होइ शेर तड़पल बाय,
बन में रहल झूमि आयल बा रन में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महीना राग कऽ आयल,
महीना फाग कऽ आयल।
महीना रंग कऽ आयल,
महीना जंग कऽ आयल।

मगर ना ढोल बोलति बा,
न चहका बोल बोलत बा।
उड़त नाहीं अबोरा बा,
छुटत नाहीं कबीरा बा॥

बकत बाटइ न केउ गारी,
चलत बाटइ न पिचकारी।
हुकुम फेरि कुँअर कऽ जारी,
कि आयल लोह क पारी॥

कटारी हाथ में आइल,
दुधारि हाथ में आइल।
जबाना ढाल कऽ आयल,
जबाना काल क आयल॥

लपालप लोह लपके अब,
छपा छप तेग चपके अब।
जेहर देखऽ ओहर रन में,
कुअँर कऽ तेज चमके अब॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किरिचिया बनलि पिचकारी,
मचाये खून कऽ होली।
ई छाती बनलि वज्जर कऽ,
जहाँ से लौटिहइँ गोली॥

सबै लगुआ न केउ भगुआ,
तमंचा—तोप कऽ दगुआ।
चलल फंरि झूमि के अगुआ,
नया एहि साल कऽ फगुआ॥

रगन में रोष मानइ ना,
जवानो जोस मानइ ना।
अगाड़ी बढ़ि चलति सेना,
करारो पर चढ़लि सेना॥

भयावन तोप घहरायल,
जहाँ मिलमंन आयल बा।
इहइ अतरौलिया हउवै,
जहाँ कऽ भूइँ घायल बा॥

खड़ा आगे रहइ बंरी,
कुग्रँर कहलैं कड़ा करखा।
बढ़इ दऽ तेग कऽ तरखा,
करऽ तरुआरि कऽ बरखा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुनायल सेर कऽ बोली,
लपकि के बढ़ि चललि टोली।
ओहर से चलि पड़लि गोली,
जवाबी भो दगलि गोली॥

अगिनियाँबान छूटत बा,
नगिनियाँ सन्न से डसइ।
जहाँ जेहि तन जहर पइठइ,
करेजा थाम्हि के बइठइ॥

न काटे से लहरि आवइ,
इ गोली बड़ कहँर ढावइ।
कुअँर सिंह जोर से गरजइँ,
कि मारऽ भागि ना पावइ॥

करारि चोट सहले बा,
सरकि बन्दूक लिहले बा।
निसाना सूति के साधइ,
त मोर्चा थाम्हि देहले बा॥

सिपाही समर में सोवइ,
आजादी कऽ बिया बोअइ।
हँसइ ठइयाँ, हँसइ भुइयाँ,
भुजालो कहँरि के टोवइ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जरा सा जान बाकी बा,
मगर सब सान बाकी बा।
फटलि छाती, भइल फांकी,
कहइ बलिदान बाकी बा॥

खड़ा जे बीर झूमत बा,
पड़ा जे भुइँ चूमत बा।
एन्हन में बड़ी किम्मत बा,
गजब कऽ बढ़लि हिम्मत बा॥

पहर भरि में चचलि गोली,
पहर भरि ले जरलि होली।
जवन दूरी पलक भरि कऽ,
पहर भरि में बढ़लि टोली॥

कटारी कंठ से चपकइ,
त मूड़ी आम अस टपकइ।
बहादुर पंतरा भांजइ,
कभी दबकइ, कभी लपकइ॥

किरिच की नोक के आगे,
अड़उले ढाल कऽ कोना।
कहइ अब बूत अजमावऽ,
कसौटी पर पड़ल सोना॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई बीबीगंज नाहीं हउ,
न ई दुल्लौर बा भइया।
इहाँ अब फूट नाहीं बा,
मजा किछु अउर बा भइया।।

इहइ अँतरौलिया हउवै,
ई पानीदार आजमगढ़।
पढ़इ के होइ बैरी पढ़,
करेजा होइ, आगे बढ़।।

भुजाली खून में बोरले,
गजब कऽ जूझ ठनले बा।
अकासे में जना इन्दर,
धनुहियाँ लाल तनले बा।।

खड़ी तरुआरि कइले बा,
अड़ी तरुआरि कइले बा।
हटल जोड़ा बढ़उले कर,
बड़ी तरुआरि कइले बा।।

लपकि के झूमि के मारई,
त तेगा चूमि के मारइ।
बनावइ पंतरा अगले—
त बगले घूमि के मारइ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बइठि के डाँकि के मारइ,
करौली चापि के मारइ।
थकल बा हाँफि के मारइ,
गिरल बा काँपि के मारइ॥

गरजि के सेर अस डाँकइ,
गड़ासा छापि के मारइ।
कहाँ कइसे लगे हनि के—
तउलि के नापि के मारइ॥

कटारी हुउ त बूँदी कऽ,
मगर कढ़ले फुहारा बा।
हजारन धार फूटल बा,
कहइ भरि के दुधारा बा॥

जवानी जोर पर बाटइ,
बहादुर कोर पर बाटइ।
कहइ ललकारि सब गुन,
बाँस के बस पोर पर बाटइ॥

सिपाही बा बड़ा लोहधर,
सिपाही बा बड़ा सनगर।
जहाँ चाहइ तहाँ पइठइ,
सिपाही बा बड़ा लहगंर॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खड़ाहोइ लोह तउले बा,
भयल बा हाथ अब तिरछा।
केहू क फूटि गइ किसमति,
बड़ा कसि के चले बरछा।।

झरलि बा ढाल से फुलिया,
गदोरी झन्न से झनकइ।
लगल बा चोट बरछा कऽ,
नगिनियाँ सन्न से सनकई।।

केहू के बीच छाती में,
किरिच कऽ नोक टूटल बा।
धँसलि छूरी फँसलि बाटइ,
विधाता आजु रुठल बा।।

करेजा दून कइले बा,
करारो चोट सहले बा।
न हाथे से उठइ भाला,
करौली छोट लिहले बा।।

छँटलि मूड़ी बिछलि बाटइ,
फिरंगी बूट से मारइ।
बनावइ के बदे मोर्चा,
एहर से लास केउ टारइ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खड़ा बाबू कहइ भइया !
अभी बैरी बचल बाटइ।
त कहलैं अमर सिंह दादा !
एहर भी सब डटल बाटइ।।

न पीछे केउ हटत बाटइ,
भइल बा जूझ काँटा कऽ।
विजय फरियात नाहीं बा,
पता न ज्वार-भाटा कऽ।।

न दूसर रंग लौकत बा,
बड़ा लोहू बहा रन में।
रंगाइलि खून से धरती,
बड़ा लोहा चला रन में।।

बखानल गयल, जे जोधा—
त तनिकउ लोह से ऊबल।
जवानी दूइ कौड़ी कऽ,
जवन ना खून में डूबल।।

भयल गंगा नहइले का,
भयल तीरथ में गइले का।
अगर बलिदान ना देहलऽ,
भयल गउदान कइले का।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रची बढ़िके दया कइ दऽ,
रची बढ़ि के मया कइ दऽ।
एही रन भूइँ में भइया,
तूँ पुरखन कऽ 'गया कइ दऽ।।

कहइ भागइ कतउँ गोरा,
न भारत मान कऽ बाटइ।
आजादो के वदे एहिजा,
न कीमत जान क बाटइ।।

बढ़ऽ आगे तनी अबहीं—
त सच्चा वार बाकी बा।
न झाड़ी में कतउँ दबकइ,
तोहार सिकार बाकी बा।।

कटारी जोर से चाँपऽ,
एहीं लोहू हुलकि देई।
कहीं जउ बचि गयल भइया,
लड़इ क नाउँ ना लेई।।

टुटल छाती जड़ल तावा,
त झरना लाल फूटल बा।
ललाई घाउ क लागल,
गुलाबी फूल फूलल बा।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पिचक्का खून कऽ फूटइ,
बहादुर बीर घायल बा।
फुहारा फुलझड़ी लौकइ,
कि आतिसबाज आयल बा॥

कुअँर सिंह कऽ बढ़ल घोड़ा,
तनल तरुआरि अस कोड़ा।
कहाँ "मिलमैन" बा जोड़ा,
मचावइ जूझ तऽ थोड़ा॥

एहर से ओहर ले खोजई,
मगर कप्तान ना लौकइ,
कभी एहि दल, कभी ओहि दल,
बछेड़ा सेर अस छउँकइं॥

गजब लोहा चलल दिन भर,
गजब लोहू बहल दिनभर।
एहर जोधा बढ़ल दिन भर,
ओहर बैरी हटल दिन भर॥

सिपाही खूब थाकल बा,
तवउ रन हेतु पागल बा।
भरल ना जूझ से जियरा,
सिपाही घर न लोटत बा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुरुज ! नाहॅक लिग्रइलऽ साँझ,
मारित अउर दुइ भाला।
इहइ बस होत देरी में—
परत गर में बिजय माला ।।

अभी भालन को नोकन पर,
पड़ल ना मोड़ ए देवता।
बहुत खोजल मगर रन में,
मिलल ना जोड़ ए देवता ।।

उतरि किरिनियाँ नीचे आइल,
ऊपर एहर उठल भाला।
होत बिहनवाँ भोजपुरिन से,
पड़ल फिरंगिन कऽ पाला ।।

बजल नगाड़ा फेरि बाबू कऽ,
घटा धहर - घहर घहरइ।
धौंसा बाजल, बाजलि तुरही,
झंडा फहर फहर फहराइ ।।

अंतरउलिया क मोर्चा तजि,
मिलमैन परायल भागल बा।
अब आजमगढ़ बीच डेम्स,
कप्तान क गोला दहकल बा ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सोचत बा कप्तान मनहीं मन,
चाहे जब आवइ बैरी।
बढ़ल संगीनन पर पानो जहँ,
भोजपुरी सेना तैरी॥

ओह जोधा के देखब रन में,
जेकर जोड़ा ना आँटइ।
एक कुअँर के पाई भोजपुर,
लोहन धनी भयल बाटइ॥

हर हर बम एहर उठल बा,
बिगुल बजउले बा गोरा।
आजमगढ़ कऽ क़िस्मति लौटल,
ना इतिहास रहे कोरा॥

पहिल बोल पर उरदी[1] पहिरेन,
दुसरे पर हथियार उठल।
तीसर बाजत परलय काँपल,
दूनउँ दल रन बीच डटल॥

बाबू कहइँ एन्हन भागऽलेन,
अबकी छोड़ऽ मति भाई।
अइसन जूझ मचावऽ रनमें,
बैरी बचइँ न एकजाई॥

---

१. वरदी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नावइँ भरि बाटइ, एनहन कऽ-
जूझ परेड कवाइत तकि।
पहटि-पहटि के मारऽ जबले,
भागइं ना विल्लाइत तकि ।।

मूड़ काटि के लाल लाल,
पहिले चंडी के दान करऽ।
कायरता कऽ होइ जलखवा',
लगइ न अपजस पान करऽ ।।

हुकुम भयल बाटइ दादा कऽ,
अब काहे सैना मानइ।
दूनउँ फउद एक होइ गइलीं,
बिजय केहर बा के जानइ ।।

पाछे हटइँ, डटइँ फरि आगे,
एकाएकी जूझ मचल।
जोड़ा गिरल वेहू क फरी,
दूसर जोड़ा तइयार भयल।

चौगिर्दा लोहइ लोहा बा,
किरिच संगीनन कऽ बरखा।
गोरा आज चलल बा धोवइ,
पछिलो जुझिया क करिखा ।।

---

२. जलपान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहँ मोर्चा कमजोर लखइ—
तहँ जबर भोजपुरिया छउँकइ।
बैरी हेरि-हेरि के मारइ,
जे रचिकऽ लहगर लौकइ॥

कहइ सामने के बैरी से,
भागऽ मति, आवऽ आवऽ।
कइसन बा लोहा बिलायती,
हमके रन में दिखलावऽ॥

पहिले तुहीं चलावऽ आपन,
तब हथियरवा हम मारी।
जेके राम देइ ते लेई,
अजमावऽ आपन पारो-पारी॥

तोहरे लोहन से जउ बचबइ,
तब हमार चमके भाला।
धरम जूझ भारत में होला,
धरम क्षेत्र बोलल जाला॥

लड़इ बदे आइल होबऽ तूँ,
मन में कइके तइयारी।
जौ पहिले हम लोहा मारब,
तोहके ना मिलिहैं पारी॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन कऽ मन में मति राखऽ,
हथियार गहऽ आगे आवऽ।
आजु बिलाइत क तकदिरिया,
अपने हाथे अजमावऽ॥

एतना सुनतइ गोरा लपकल,
तनल किरिचिया भरि माथे।
एहर भोजपुरीया जवान,
ढलिया लेहले बाटई हाथे॥

कइलस चोट करारी बाकी—
ढाल न जुम्मुस खाये वा।
बहियाँ लचकलि नाहीं रचिकउ,
बैरो बल अजमाये बा॥

कवन गुरु से सीखलऽ लोहा,
का ऊ तोहइ पढ़उले बा।
भागऽ भागऽ तम्बू में—
तोहके के ईहाँ पठउले बा॥

कहइ किरिचिया हनि के मरलऽ,
हमरे लेखे फूल झरल।
नाहीं फुलिया हिलल ढाल कऽ
हाथउ ना रचिकउ लचकल॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतना कहतइ भाला खोंचइ,
ले, ले, कहिके ललकारइ।
भरि पोरसा हथियार तानि के,
हनि के गोरा पर मारइ॥

रोबइल भाला भोजपुरी बा,
नागफनी फन लागल बा।
लप लप लप लप लवरि कढ़त बा,
बीच अकासे जागल बा॥

ढाल टूटि गइ बा बिलाइती,
फुलिया झर-झर झरि गइलों।
गद्दी चूर-चूर उधिराइल,
बहियाँ बिजुरी भरि गइलों॥

लड़खड़ात बैरी निहार के,
हाथे में तरुआरि धरइ।
बढ़िया मोका काहे चूकइ,
बीर वार पर वार करइ॥

अइसइ हरे जवान अपने,
अपने जोड़ा से निपटत बा।
जेकर बैरी भूइँ धरइ ते,
दूसर गोरा हेरत बा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केउ मरलेसि दुइ केहू चारि,
आ केउ दस-बीस सहरले बा।
केहू क हिम्मति देखि कुग्रँर-
नाहर ग्रँकवरिया भरले बा।।

ललकारें कप्तान बहुत पर-
अब न बढंइ पलटन आगे।
बाबू कहइँ घेरि के मारऽ,
नाहीं तऽ फेरि से भागे।।

सब जवान फेरि एकजुट भइलन,
टुटलन पलटन के ऊपर।
मन में सोचइँ गोरा भागे-
चारा ना बाटइ दूसर।।

अइसन लोहा चलल प र भरि,
साहस बैरी छोड़ले बा।
रन खेतवा में भगदड़ माचल,
आपन मोर्चा मोड़ले बा।।

फेरि से विजई डंका बाजल,
फेरि बाबू मोछा पुरलन।
एकाएकी भरि ग्रँकवरिया,
जय बजरंग बली कहलन।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजमगढ़ मुसकात रहल,
बाबू कऽ जीत सुनाइल बा।
करनल 'डम्स' छोड़ि रन भागल,
चर्चा घर-घर छाइल बा।।

अँगरेजन के एक गाल—
करिखा "मिलमंन" लगउले बा।
अउ दुसरी ओरियां अलकतरा,
"डेम्स" भागि पोतवले बा।।

लर्गालि सिपाही के धोवइ,
केकरे तेगा में पानी बा।
बूढ़ कुअँर कऽ लोहा आड़इ,
अइसन कहाँ जवानो बा।।

चौथे पँचयें कंपइ विलाइत,
जब रिकेब पर गोड़ धरइ।
अइसन तपल भोजपुर वाला,
सुनत नाउँ चोला थहरइ।।

ओहर फिरंगी जोर सोर से,
फेरि लागल तइयारी में।
एहर चढ़ावें सान सबइ,
अपनी-अपनी तरुआरि में।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केउ भाला क नोक उभारइ,
अँगुरिन धरिया टोवत बा।
केहू के तेगा लोहू सूखल,
लेइ लेइ पानी धोवत बा।।

केउ माजइ हथियार केहू,
ढलिया क फुलिया ठोंकत बा।
केउ अभ्यास करइ जुझिया क,
केउ बढ़ि-बढ़ि के रोकत बा।

केउ रियाज मारत बाटइ,
केउ लड़ई अखाड़ा में कुस्ती।
हरदम सब तइयार रहइँ,
नाहीं बाटइ रचिकउ सुस्ती।।

देखि देखि के बूढ़ सेर तन,
लहरा देत जवानो बा।
गयल हाथ गलगुच्छा ऊपर,
जहवाँ अगवइँ चानो बा।।

बाबू मन अनुमान लगाबई,
अबकी के गोरा आये।
फेरि सोचई सोचब बिरथा बा,
जं आये ते पछताये।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अठवारा बीतत बीतत,
चमकल बा फेरि लोहा रन में।
फेरि सिकार पर घात लगावइ,
सेर चलल बा रन बन में।।

जमल रोब बाटइ दादा कऽ
जामत जाइ उखाड़इ के।
पड़लि जौगिनी बाटइ दहिने,
रन में भला पछारइ के।।

मंगल-सुक बसई नेनन में,
अऊ बेहफइया माथे में।
धूमकेतु बेरिन कऽ बनि,
आइल तरुअरिया हाथे में।।

जे दुर्गा कऽ लोहा ओजइ,
अइसन ढाल कहाँ बाटइ।
महापुरुष कऽ नाउँ बुतावइ,
अइसन काल कहाँ बाटइ।।

सागर क तोपइ जुआर,
अस कहाँ बनल बाटइ चावर।
जगलि क्रान्ती कऽ आगि बुतावइ,
अइसन कहाँ उठल बावर।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केतनउँ आफति आवइ बाकी,
धरती धीरज ना छोड़ई।
रन में चढ़ल सूरमा कबहूँ,
भूलि बाग नाहीं मोड़इ ॥

मानसून के डर से जब—
गिरिराज छोड़ि दीहें डगरा।
गंगा जमुना रेती बनिहैं,
ना चलिहैं झूमत बदरा ॥

तइसइ बैरिन के डर से—
जउ बाबू लोहा धइ देइहैं।
रही अजादी बीच भवँर में,
बेड़ा पारे ना जइहैं ॥

चढ़ल 'मार्क' सेनापति वा,
तूफान बसइ हथियारन में।
एहर बनल चट्टान कुअँरसिंह,
अडिग ठाढ़ बाटेंनि रन में ॥

जमल पाउँ बाटइ अंगद.कऽ
कसिके, भूइँ छोड़ावइ के।
जेपर राम निसाना साधइँ,
ओके भला बचावई के ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुरुख नजरिया कइलन बाबू,
गोरा अफसर काँपल बा।
एनहन में केतनी हिम्मत बा,
सब किछु जोखल-नापल बा।।

ग्राखिर 'मार्क' जंग से भागल,
फेरि दादा बिजई भइलैं।
फहर फहर फेरि झंडा फहरल,
फेरि देवता झाँकइ लगलैं।।

फेरि जयकार मचल दादा कऽ
हँसलि रकत बोरलि धरती।
माई फेरि झॅकलस जेहल से,
भइल सोहागिन फेरि परती।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गढ़ पर फहरल विजयी निसान

आइल बसन्त बेला, बगिया महँकि गइल बा।
भौंरा सनेस पउलन, कोंढ़ी[1] सयानि भइ बा।।
बागन से गंध उड़िके, भौंरन के गाउँ पहुँचलि।
लखराउँ में कोइलिया, चढ़ि डारि डारि कुहकलि।।

घौदन[2] भरे टिकोरा, कोरा में आम आयल।
सुगना क ठोर फरकल, पानी मुहें भरायल।।
छतनार कूँच महुआ, झुमका मतिन झुलउले।
सोने सुगंध भरले, मोती में रस घुलउले।।

टप-टप टपकि रहल बा, रस चूइ-चूइ जाला।
राति-राति भर भइल बा, काने क गिरल बाला।।
चइता क राग गूजल, पर रस बदल भइल बा।
"हो राम ! एही ठइयाँ मोतिया हेरा गइल बा"।।

केकर रहलि ह मोती, कइसे हेरा गइल रे।
के खोजि रहलि बाटइ, आखिर ऊ का भइल रे,
धरती क रहलि मोती, नाहीं हेरानि बाटइ।
गोरा चोराइ लेहलस, तौने पर लड़त बाटइ।।

गायब भइल बा भइया ! धोबी के घर में लादी।
गोरन के घर में खोजइँ, बाबू छिपूलि आजादी।।
तानू नदी के पुल पर लूगंड के हरा के।
डगलस के चोट देइके, लोहन क रस चखाके।।

---

१. कली २. आम का गुच्छा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब बीर बर कुँअर सिंह, आगे के डेग[1] धइलन।
जगदीसपुर के गढ़ क, मनमें खियाल कइलन॥
आहारे! जनम भुइयां, जौने क धूरि फँकली।
बैरी तहाँ जमल बा, करजा अदा न कइली॥

तन में लहरि उठलि बा, मन झूमि-झूमि जाला।
अब चलि के ओही होई, रन चूमि-चूमि भाला॥
हमरे जनम क धरती, हमरे करम क धरती।
हर मोर चली की तऽ, नाहीं त रही परती॥

जे पर जनम भयल बा, होए मरम ओही पर।
माटी जहाँ क खइली, लोहू से अब करब तर॥
जे पूत जनम भूँ कऽ, करजा चुका न पायल।
नाहँक परान तेकर, भइया धरा प आयल॥

सब जन चलऽ चली जा, माई क बन्दि काटी।
जीतब त ठीक ना त, माटी में मिलि माटी॥
हे देबि! गाउँ आपन, भरि आँखि जब निहरबइ।
देहले बा दुख जे ओके, जब जूझ में पछरबइ॥

ओंहि दिन तोहार पूजा, बाजा बजाइ करबइ।
नौ सेर क गड़ासा, तोहरे चरन चढ़इबइ॥
बैरी के खून से हम, रंगबइ तोहार सारी।
छूरिन क लगी गोटा, तेगन जरी किनारी॥

---

१. कदम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस मानि के मनौती, आगे के गोड़ धइलें।
अब रामजी विजन से साकेत ओर चललें।।
ओनहूँ के मिललि गंगा, एनहूँ के मिललि गंगा।
क़िस्मत के फेर देखऽ एनके रहल अड़ंगा।।

सिउपुर के घाट उतरलि, सेना गइल बा पारे।
बाबू क नाव बाकी, पहुँचलि बा बोच धारे।।
माझी लहर-लहर पर, पतवार दे रहल बा।
डाड़ा छपर छपर छप, तरुआरि अस चलल बा।।

तबले भयल धमाका, बन्दूक एक बोली।
दहिनी भुजा में आके, बाबू के लगलि गोली।।
ना मुँह से आह आइल, नाहीं कराह आइल,
दहिनी क बहिन बाईं, बस बाँह पास आइल।।

दाइँ भुजा क मोहँवा बाईं भुजा निहारइ।
इतिहास बइठि के कोने, आपन दसा बिचारइ।।
जेपर रहल भरोसा, ऊ बाहँ भइल घायल।
चंडी क जेकरे बल पर, बाजत रहलि ह पायल।।

जेहि हाथ में चमाचम, चमकति रहल कटारी।
जोने किरिन के आगे, सूरुज क जोति हारी।।
जोने क छाहँ धइके अबले जुड़ानि धरती।
भालन की नोक से जे, तोड़लेसि अनेक परती।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊ हाथ भयल श्राहत, श्रब राम लाज राखइँ।
धनि बाहँ देस कारन, गोलिन क स्वाद चाखइ।।
श्रब तकि समर में, जेयर इ एक वार कइलस।
तेकर भरलि जवानी, पारे उतारि देहलस।।

गोली में रहल माहुर, श्रागे के भिनल जाला।
हाथे से ना उठत बा, बाबू के श्राजु भाला।।
कहलन जे सुनऽ भाई, केउ बाहँ काटि देतइ।
गंगाजी दान माँगइँ, केउ बाहँ छाँटि देतइ।।

पुतरी घुमाइ देखलन, सब श्रोर मौन बाटइ।
जेहि छाहँ में जुड़इलन, के तवन बाहँ काटइ।।
बायें से लेइ कटरिया, दहिनो प वार कइलन।
दादा जी बाहँ गंगा, मइया के सउँपि देहलन।।

छाँटलि बाहँ गिरो छपसे,
किछु दूरि बनी तब लाल निसानो।
भोजपुरी भुइयाँ हुलसो,
कोखिया जनमा बेटवा बलिदानो।।
भागीरथी से कहइ धरती,
जब लेइ लहरा नदिया इतिरानी।
बोलऽ ई नीर तोहार हउ कि,
हमरे बेटवा के कटार क पानी।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जौन घटी न कबउँ रन खेत में,
भूमि के जौन चलउलेसि भाला।
दीनन के बरदान रहो पर—
बैरी के आफत कऽ परकाला।।

बाँह उहइ नदिया में गिरी,
दुख बाढ़ल बा सहलो नहिं जाला।
भारत माई के सोच समाइल,
कइसे टुटे अब जेल क ताला।।

कइलस माथ निछावर पाग,
कटी बहियाँ पर जौन बन्हायल।
आपन बेदन भूलल बाबू के,
गाउँ बदे मनवां ललचायल।।

कइलन सीस झुकाइ प्रणाम,
जबइ जगदीसपुरी नियरायल।
अइसन लागल घायल सेर,
बुढ़ायल सेर अहेर से आयल।।

आगी में झउँसल गढ़ बाटइ,
धूआं से भीतिया बा कारी।
दादा बइठल बाटेंनि तौने में,
जस राखो में चिनगारी।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बईठक फेरि धनी भयल बाटइ,
लोहन पर बाढ़ल फेरि पानी।
दमकत चेहरा पर पकी मूँछ,
सोना पर जामलि वा चानी॥

ऊजर मसनद बा पीठ तरे,
सारी देहियाँ बा छत बीछत।
जइसे हिमगिरि कऽ टंक दिहे,
बइठल बाटइ घायल भारत॥

फेरि अँगरेजी बाजा बाजल,
किछु सोर सुनायल उठत दूर।
रण-खेत आजु हमहीं बनबइ,
बोलल बाटइ जगदीसपूर॥

कसमस कइले बा फेरि देहियाँ,
रहि-रहि के छूरी झनकत बा।
बाढ़ल कटार, फेरि तरुअरिया
कढ़ि के मियान से सनकति बा॥

बाबू बाईं बहियाँ उठाइ,
कहलन देखब तोरउ पउरुख।
जबले दहिनी में जोर रहल,
तबले बड़ कइले बाटू सुख॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पंजा कबुजा पर गयल टंक,
देतइ कटार पर जब कँपलन।
तबले अम्मर भरि अँकवरिया,
अपने दादा के धइ लेहलन।।

कहलन मति सोच करऽ मन में,
हमके समझऽ आपन भाला।
का एक भुजा पर दुख कइलऽ,
बइठल बा चारि भुजा वाला।।

हउ असल भाइ ऊ जे भाई कऽ
सुख नाहीं बिपदा बाँटइ।
एहि धरती कऽ असली बंटा—
जं माई कऽ बेड़ो काटइ।।

तूं देखऽ जूझ करी अब हम,
मति सोच करइँ भारत मइया।
ऊ बहियाँ नकली रहलि तोर,
असली बहियाँ अम्मर भइया।।

देखऽ गरदा लागल अकास,
'लीग्रांड' चढ़त बाटइ दादा।
भाला हमार रहि-रहि बोलइ,
बहुतइ दिन से बाटी सादा।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोहा मातल बाटइ, ललकी,
गंगा पर तीरथ लागल बा।
बइठऽ दादा! सेवक तोहार,
अपने पहरा पर जागत बा॥

मोर्चा—मोर्चा बैरी मारी,
तब जानऽ आपन सगा भाइ।
बीरा हमके देइ दऽ रण कऽ,
हाली अब लोहा झनझनाई॥

'लीग्रांड' आजु सोवइ रन में,
तब जानऽ सफल जवानी बा।
एतना कहतइ खच खचा खच्च,
निकसलि तरुआरि भवानी बा।

फैसला आजु बाटइ भाई,
बस तरुआरिन की धारन पर।
बाघन कऽ झुण्ड कछार छोड़ि,
अब टूटइ यार! सिकार पर॥

जयकार उठल बा दादा कऽ,
मारू डंका गूजल बाटइ।
ना जानी का होई रन में,
जगदीसपूर रूठल बाटई॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोर्चा बान्हल बा तीन तरफ,
अगले बाटइ बगले बाटइ।
पर जवन सामने बा तवने पर,
बीर अमर गरजत बाटइ॥

रन कऽ रचना देखइ खातिर,
रनिवास झरोखे लागल बा।
घूघरि-घूघरि तिरिया झाँकई,
जस सउ सउ चंदा टाँगल बा॥

खिरकी अइसन बा एक जहाँ,
सरदार कुग्रँर बईठल बाटेनि।
रन-व्यूह अमर कऽ देखि देखि,
हँसि-हँसि मोछा अइँठत बाटेनि॥

नेवछावर प्राण करइँ दादा,
अम्मर के रण तइयारी पर।
खाली तन रहल अँटारी पर,
बाकी मन टिकल कटारी पर॥

सामने खड़ी बाटइ सेना,
सामने खड़ी बाटइ सेना।
एकठे गोरी एकठे साँवरी,
लहरइँ जइसे गंगा-जमुना॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तुरही बाजल, घोंसा बाजल,
मारू फेरि बजल नगाड़ा बा।
बस आजु फैसला होइ जाये,
अब केकरे हाथ अखाड़ा बा॥

तरुआरि झनाझन झनकत बा,
गोला बोलत बा धाइँ धाइँ।
बन्दूक दनादन छूटति बा,
आवाज होत बा ठाइँ ठाइँ॥

पैदल दल कतउँ भिड़ल बाटइ,
घोड़न कऽ टाप कतउँ बाजइ।
जेतनी तरुआरि नचइ ऊपर,
ओसे बढ़िके घोड़ा नाचइ॥

केतना जोधा अइसन बाटनि,
ढालन पर गोली रोकि लेइँ।
पैदल उछरइँ छाँटइँ सवार,
भालन पर मूड़ी रोक लेइँ॥

केउ सूति निसाना लिहले बा,
फेरि झाँकत बा मूड़ी उठाइ॥
केउ दबकत बा केउ लपकत बा,
बगले से गोली चीरि जाइ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मूड़ी उचाइ, संगीनदार,
बन्दूकिया आगे कइले बा।
अईसन लागल विषधर करइत,
फन काढ़ि जीभि लटकउले बा।

केउ एकी एका जूझत बा,
केउ पइठत बा बैरी दल में।
सरदार अमर सिंह झूमि लड़ई,
खरिहान लगल बाटइ पल में।।

रन-रचना देखि लहुरवा कऽ,
दादा क बहियाँ फरफरानि।
टहलू से कहलन देखु तनी,
भइया मारत बा तानि-तानि।।

रजपूती लहरा देहले बा,
'लीग्रांड केहर' ललकारत बा।
बैरिन के दल पइठि पइठि,
जतना चाहत बा मारत बा।

मोर्चा कमजोर जंहर देखइ,
घोड़ा के एड़ लगावत बा।
जं बैरी माथा उँच करइ,
झट झोंके भूईं छुआवत बा।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहियाँ कटि गइ कटि जाये दे,
हमहूँ के लेइ चलते रन में।
सग भाइ अकेले जूझत बा,
नाहक जिनगी बाटइ तन में।।

कुरुखेते में गरजइ अम्मर,
देखऽ ना कतउँ घटइ भाला।
बारों ! देवता कऽ रोज रोज,
तसवीर बनावल ना जाला।।

पोथिन में नकसा जवन कि—
लड़कन के सिखवल-पढ़वल जाला।
ओके पहिले तरुआरिन से,
रन खेतन में खोंचल जाला।।

आपइ से सही हजार साठि,
संतान खतम जब होइ जालिन।
तब कतहूँ भगीरथ के तप से,
गंगा पिरथी पर उतरऽलिन।।

ओहि खेतनें में सबसे अधिका,
हरियाली लहरा मारऽला।
जेहमें बीया के पहिले—
मस्तक काटि-काटि बोअल जाला।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाजी लगाइ के समर करऽ,
किछु मजा मिलइ तरुआरिन कऽ।
ई कवन जूझ घंटा भरि से—
बा उज्जर धार कटारिन कऽ ॥

कंकड़ो एक हाथे में लेइके,
बीर अमर मुट्ठी बन्हलन।
'लोग्रांड' देखायल खड़ा दूर,
गंभीर अवजिया में कहलन ॥

किछु दूरी हम आवत बाटी,
किछु दूरी तूँ आवऽ रन में।
लोहा-लोहा टकराइ जाइँ,
वारा-न्यारा कइलऽ छन में ॥

कहलन देखऽ ई कंकड़ हउ,
हम मुट्ठी में बन्हले बाटी।
ई समर भूमि कऽ टुकड़ा हऽ,
हम बाजी पर रक्खत बाटी ॥

पउरुख पुजवइ तऽ छीनि लेहु,
फेरि जूझ न करब अजादी कऽ।
नाहीं तऽ डोला मति धरिहऽ,
तूँ स्वतंत्रता सहजादी कऽ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कटि जाइ भले बहियाँ हमार,
पर मुट्ठी अइसइ बन्ही रहे।
जब तक चोला में बा परान,
तब तकि आजादी बनी रहे॥

ललकार सुनत 'लीग्रांड' बढ़ल,
गोरा चेहरा बा तम तमान।
हुंकारि अमर कहलें यारों!
अब जूझ होइ दऽ घमासान॥

गद्दारन के हति के पहिले,
लोहा पवित्र कइलऽ भाई।
जौने मोर्चा ओनहन बाटेनि,
रोवत बाटइ भारत माई॥

कप्तान आजु जोड़ा हमार,
रन चंढी हुकुम लगउले बा।
अब्बइ फरियाला केकर माई,
केतना दूध पियउले बा॥

लीग्रांड—अमर दूनउँ जोड़ा,
आमने—सामने ललकारइँ।
पैंतरा, पैंतरा पर बदलइँ,
दूनउँ बचि-बचि लोहा मारइँ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जोड़ा-जोड़ा से लड़इ लगल,
घोड़ा से घोड़ा झगड़ि जाइ।
कबहूँ एतना नियराइ जाइँ,
मोढ़ा, मोढ़ा से रगड़ि जाइ॥

जे बीर सिपाही रहल बहुत,
ओकर भी ध्यान बँटइ लागल।
लीग्रांड—अमर क गजब जूझ,
दूनउँ सेना देखइ लागल॥

भारत बा भिड़ल बिलाइत से,
दुइठे इतिहास लड़ई रन में।
साँवर—सफेद दुइ सेरन में,
अब एकइ सेर रहे बन में॥

केउ मारत बा, केउ रोकत बा।
केउ रोकत बा, केउ मारत बा।
ई अमर बीर पुरुखन कऽ पिंडा,
रन खेते में पारत बा॥

लीग्रांड-अमर रहि-रहि गरजइँ,
जस जोड़ा बादर गरजत बा।
बिजुरी पर बिजुरी बरसि रही,
तेगा पर तेगा बरसत बा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोहा पर लोहा करइ दार,
लोहू पर लोहू कऽ फुहार।
दूनउँ बीरन के मोर्चा पर,
लागलि बाटइ ललकी बजार।।

सटि जाइँ अमर, कप्तान हटइ,
कप्तान सटइ, हटि जाइँ अमर।
एहि डटी-डटा में समर भूमि,
छन भर में भइ लोहू से तर।।

कौनउ ओरी से कम न परइ,
बाटिनि तरुआरि जवानी पर।
झूमत बाटंन दूनउँ रण-दूल्हा,
अपने-अपने पानो पर।।

नीचे तरुआरि कबउँ बाटइ,
ऊपर तरुआरि कबउँ बाटइ।
देहियाँ नाहीं, बहियाँ नाचइ,
अस जोधा चढ़ा समर बाटइ।।

इतिहास लिखइ लीग्रांड-अमर,
तरुआरो से तरुआरी पर।
पन्ना-पन्ना पर आस लगउले,
बाँचइँ कुअँर अँटारी पर।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लीग्रांड करइ जब बार तं—
गोरा ग्रउ गद्दार कहइँ जय ! जय !!
जब ग्रम्मर देइ पछाड़ त,
भारत माता होई ग्रभय-निरभय ।।

चंडो रन में मोहलि बाटइ,
जादू कइलन दूनउँ जवान ।
फैसला बहुत मुस्किल बाटइ,
रन खेते केकर रही सान ।।

देखऽ बिधि के के देलेनि जस,
देखऽ के पावऽला ग्रपजस ।
पलड़ा ना हलुक परइ कवनउँ,
माचलि बा मार बड़ो करकस ।।

झुकि-झुकि के वार करत बाटेन,
रुकि-रुकि के बार करत बाटेन ।
पतरा बदलि ग्रापुस में लोहन—
कऽ बौछार करत बाटेन ।।

ग्रौसर दूनउँ जोधा खोजइँ,
कब परइ भोर गरदन मारी ।
लहि-लहि के तेगा चूकि जाइ,
लहि-लहि के चूकइ दुइधारी ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूनउँ दे हयाँ भइ लाल-लाल,
पर ना रचिकउ कम भा कमाल।
अस लागइ केउ जूझल, बाकी
दूनउँ बचि जालेन बाल-बाल।।

अम्मर सोचइँ अपने मन में,
केहि कारन घटत कटारी बा।
रजपूती में ना दाग लगे—
जिन्दगी न हमके प्यारी बा।।

कबसे ई युद्ध ठनल बाटइ,
पर जूझल ना अबले बैरी।
संझा नियराइलि आवति बा,
ना विजय मिललि भइ बड़ देरी।।

दादा के कवन जवाब देब,
जं हाथ काटि के बइठल बा।
ना जानो कउनी गलती पर,
रन लोहा हमसे रूसल बा।।

ना नजर कुमारग पर देहली,
ना कइली काम कपूती कऽ।
अइसन नाहीं अपराध भयल,
किछु सान घटइ रजपूती कऽ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फेरि कवन पराछित लागल बा,
ना बिजय पताका फहरत बा।
पावन लोहा के आगे काहे,
पापी सेना ठहरति बा॥

अस सोचि कुअँर कऽ जय कहलन,
फेरि वार तउलि के किहेन अमर।
बइठल गरदन पर ठीक चोट,
बैरी के दल में मचा कहंर॥

मूड़ो छटकलि नीचे आइलि,
घोड़ा धड़ लेइके भागल बा।
झूमत चलि भइलन अमर वीर,
भाला पर माथा टाँगल बा॥

जयकार मचल बा दादा कऽ,
जय जय जय जय भारत मइया।
लामें से अमर पुकारि कहइँ,
बैरी कऽ मूड़ी लऽ भइया॥

दुस्मन-दल भागि गयल रन से,
जयकार तोहार भयल दादा।
तोहरी किरपा से पूर परन,
तोहरी किरपा पूजल वादा॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पल भाँजत गयेन अँटारी पर,
दादा भरि लिहलेनि अँकवरिया।
कबहूँ अम्मर के चूमि लेइँ,
कबहूँ धइ चूमइँ तरुअरिया॥

खण्डित बहियाँ में कसत जाइँ,
एकेक गलवा सौ सौ चुम्मा।
किछु देरी तक दूनऊँ भाइन में,
भयल खूब चुम्मी-चुम्मा॥

दादा कहलन सब साध पूर,
अब फल से जियरा कढ़े मोर।
सारी अन्हियरिया भइलि दूर,
जगदीस पुरी में भा अँजोर॥

ओहि राति दिवारी मचलि खूब,
हर घर ऊपर दीया लेमान।
दादा अँखिया उठाइ देखलन,
गढ़ पर फहरल विजयी निसान॥

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection